कार्यालय, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

ब्लॉक-भीण्डर एवं वल्लभनगर

(उदयपुर)

# प्रेरणा

## प्रश्न बैंक

(एक नवाचारी पहल)

# अनिवार्य हिन्दी

कक्षा- 12

बोर्ड परीक्षा परिणाम में गुणात्मक एवं
संख्यात्मक उन्नयन
हेतु अभिनव कार्ययोजना के तहत् निर्मित

## –मुख्य संरक्षक–

श्री गौरव अग्रवाल IAS
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा,
राजस्थान

एंजिलिका पलात
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, उदयपुर

पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
उदयपुर

## –संरक्षक–

मोनिका जाखड़
उपखण्ड अधिकारी
भीण्डर

गोविन्द सिंह
उपखण्ड अधिकारी
वल्लभनगर

## –मार्गदर्शक–

महेन्द्र कुमार जैन
मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
भीण्डर

अनिल कुमार पोरवाल
मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
वल्लभनगर

भैरूलाल सालवी
अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
भीण्डर

रमेश खटीक
अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
भीण्डर

गोपाल लाल मेनारिया
अति. मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
वल्लभनगर

## –संयोजक–

नरेश कुमार काहाल्या
प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भटेवर (वल्लभनगर)

## –सह संयोजक–

अक्षय मेहता
प्राध्यापक
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भटेवर (वल्लभनगर)

CBEO BHINDER & VALLABHNAGAR

# —: कार्यकारी दल :—

1. गीता मुण्डेल, प्रधानाचार्य, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गांधीपुरा, जयसमन्द
2. अनीता सामोता , प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाठरडा खुर्द
3. चन्द्र प्रकाश औदिच्य , प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय टुस डांगियान
4. दिलीप कुमार नागौरी , प्राध्यापक, महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय खरसाण
5. गणपत सिंह सोलंकी, प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लूणदा
6. हीरा लाल डांगी , प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय वल्लभनगर
7. मनीष व्यास, प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मोडी
8. मुकेश कुमार गोपावत, प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कुंथवास
9. नन्द किशोर मीणा, प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मेनार
10. निर्मला कुमारी चौबीसा, प्राध्यापक, रा. उग्रसेन बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय कानोड
11. राजेश मेहता, प्राध्यापक, रा. चतुर उच्च माध्यमिक विद्यालय कानोड
12. राजेश्वरी शर्मा, प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय खेरोदा
13. रेखा आमेटा, प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नवानिया
14. सिद्धार्थ देवल, प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय दरोली
15. उमा शंकर मेघवाल , प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नीमडी
16. चन्द्र भानु व्यास, प्राध्यापक, राबाउमावि जगदीश चौक, उदयपुर
17. नेहा रत्नु, प्राध्यापक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नांदवेल
18. भगवती लाल मेनारिया, व.अ., राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मन्देसर
19. लीला मेनारिया, अध्यापक, महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय खरसाण

CEO BHINDER & VALLABHNAGAR

# माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान

## पाठ्यक्रम परीक्षा–2023

## अनिवार्य हिन्दी–कक्षा 12

**विषय कोड–01**

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

| प्रश्न–पत्र | समय (घंटे) | प्रश्न–पत्र के लिए अंक | सत्रांक | पूर्णांक |
|---|---|---|---|---|
| एक पत्र | 3.15 | 80 | 20 | 100 |

| **अधिगम क्षेत्र** | **अंक** |
|---|---|
| अपठित बोध | 12 |
| रचनात्मक लेखन | 16 |
| व्यावहारिक व्याकरण | 8 |
| पाठ्यपुस्तक : **आरोह** (भाग–2) | 32 |
| पाठ्यपुस्तक : **वितान** (भाग–2) | 12 |

**खण्ड–1**

**अपठित बोध** **12 अंक**

(क) अपठित गद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6 अंक

(ख) अपठित पद्यांश (अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न) 6 अंक

**खण्ड–2**

**रचनात्मक लेखन** **16 अंक**

(1) निबन्ध लेखन। (विकल्प सहित) (300 शब्द) 5 अंक

(2) पत्र व प्रारूप लेखन (अर्द्धशासकीय–पत्र, निविदा, विज्ञप्ति, ज्ञापन, अधिसूचना) (विकल्प सहित) 4 अंक

**अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित–**

(3) विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन 4 अंक

(4) फीचर लेखन/आलेख 3 अंक

**व्यावहारिक व्याकरण** **8 अंक**

(1) भाषा, व्याकरण एवं लिपि का परिचय 2 अंक

(2) शब्द शक्ति 2 अंक

(3) अलंकार –अनुप्रास, लाटानुप्रास, श्लेष, यमक, पुनरूक्तिप्रकाश 2 अंक

(4) पारिभाषिक शब्दावली 2 अंक

**खण्ड-3**

**पाठ्यपुस्तक–आरोह-भाग 2** **32 अंक**

| | | |
|---|---|---|
| (i) | 1 व्याख्या गद्य भाग से (विकल्प सहित) | 1 × 6 = 6 अंक |
| (ii) | 1 व्याख्या पद्य भाग से (विकल्प सहित) | 1 × 6 = 6 अंक |
| (iii) | किसी एक कवि या लेखक का परिचय (80–100 शब्दों में उत्तर) | 1 × 4 = 4 अंक |
| (iv) | प्रश्नोत्तर गद्य भाग से (निबन्धात्मक, लघूतरात्मक प्रश्न) | 08 अंक |
| (v) | प्रश्नोत्तर पद्य भाग से (निबन्धात्मक, लघूतरात्मक प्रश्न) | 08 अंक |

**खण्ड-4**

**पाठ्यपुस्तक–वितान भाग 2** **12 अंक**

| | | |
|---|---|---|
| (क) | 1 निबंधात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) (120 शब्दों में उत्तर) | 1 प्रश्न × 6 = 6 अंक |
| (ख) | 6 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न (20 शब्दों में उत्तर) | 6 प्रश्न × 1 = 6 अंक |

**निर्धारित पुस्तकें–**

1. **आरोह-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
2. **वितान-भाग 2**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित
3. **अभिव्यक्ति एवं माध्यम**–एन.सी.ई.आर.टी. से प्रतिलिप्याधिकार अन्तर्गत प्रकाशित

# प्रश्न–पत्र की योजना

कक्षा – 12वीं.
विषय – हिन्दी (अनिवार्य)
अवधि – 3 घण्टे 15 मिनट पूर्णांक – 80

1. उद्देश्य हेतु अंकभार –

| क्र.सं. | उद्देश्य | अंकभार | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | ज्ञान | 15 | 18.75% |
| 2. | अवबोध | 27 | 33.75% |
| 3. | अभिव्यक्ति / ज्ञानोपयोग | 25 | 31.25% |
| 4. | मौलिकता / कौशल | 13 | 16.25% |
| योग | | 80 | 100% |

2. प्रश्नों के प्रकारवार अंकभार –

| क्र. सं. | प्रश्नों का प्रकार | प्रश्नों की संख्या | अंक प्रति प्रश्न | कुल अंक प्रतिशत | प्रतिशत प्रश्नों का | संभावित समय |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | वस्तुनिष्ठ / रिक्त स्थान | 12+6=18 | 01 | 18 | 22.50 | 27 मिनट |
| 2. | अतिलघूत्तरात्मक | 11 | 01 | 11 | 13.75 | 22 मिनट |
| 3. | लघूत्तरात्मक–I | 07 | 02 | 14 | 17.50 | 42 मिनट |
| 4. | दीर्घउत्तरीय | 04 | $2 \times 3 = 6$<br>$1 \times 4 = 4$<br>$1 \times 6 = 6$ | 16 | 20.00 | 48 मिनट |
| 5. | निबंधात्मक | 04 | $1 \times 5 = 5$<br>$2 \times 6 = 12$<br>$1 \times 4 = 4$ | 21 | 26.25 | 56 मिनट |
| | योग | 44 | | 80 | 100% | 195 मिनट |

विकल्प योजना : आन्तरिक

3. विषय वस्तु का अंकभार –

| क्र.सं. | विषय वस्तु | अंकभार | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1. | अपठित | 12 | 15.00% |
| 2. | निबन्ध | 05 | 06.25% |
| 3. | पत्र | 04 | 05.00% |
| 4. | व्यावहारिक व्याकरण | 08 | 10.00% |
| 5. | अभिव्यक्ति और माध्यम | 07 | 08.75% |
| 6. | आरोह | 32 | 40.00% |
| 7. | वितान | 12 | 15.00% |
| योग | | 80 | 100% |

# प्रश्न–पत्र ब्ल्यू प्रिन्ट

कक्षा –12वीं　　विषय :– हिन्दी (अनिवार्य)　　पूर्णांक – 80

| क्र. सं. | उद्देश्य इकाई/उप इकाई | ज्ञान | | | | | अवबोध | | | | | ज्ञानोपयोग/अभिव्यक्ति | | | | | कौशल/मौलिकता | | | | | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | वस्तुनिष्ठ | अति.लघु. | लघु उत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | वस्तुनिष्ठ | अति.लघु. | लघु उत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | वस्तुनिष्ठ | अति.लघु. | लघु उत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | वस्तुनिष्ठ | अति.लघु. | लघु उत्तरात्मक | दीर्घउत्तरीय | निबन्धात्मक | |
| 1. | अपठित | **(4)4** | | | | | **(8)8** | | | | | | | | | | | | | | | **(12)12** |
| 2. | निबन्ध | | | | | | | | | | **(-)2** | | | | | **(-)2** | | | | | **(1)1** | **(1)5** |
| 3. | पत्र | | | | | **(-)1** | | | | | | | | | | **(1)2** | | | | | **(-)1** | **(1)4** |
| 4. | व्यावहारिक व्याकरण | | **(2)2** | | | | **(6)6** | | | | | | | | | | | | | | | **(8)8** |
| 5. | अभिव्यक्ति और माध्यम | | **(1)1** | | | | | | | | | | | **(2)4** | | | | | **(1)2** | | | **(4)7** |
| 6. | आरोह | | **(2)2** | | | **(-)2** | | | **(2)4** | | **(1)4** | | | **(2)4** | **(1)3** | **(-)4** | | | **(1)4** | **(1)3** | **(1)2** | **(11)32** |
| 7. | वितान | | **(3)3** | | | | | **(3)3** | | | | | | | | **(1)6** | | | | | | **(7)12** |
| | योग | **(4)4** | **(8)8** | | | **(-)3** | **(14)14** | **(3)3** | **(2)4** | | **(1)6** | | | **(4)8** | **(1)3** | **(2)14** | | | **(2)6** | **(1)3** | **(2)4** | |
| | | **(12)15** | | | | | **(20)27** | | | | | **(7)25** | | | | | **(5)13** | | | | | **(44)80** |

विकल्पों की योजना :– प्र. आंतरिक विकल्प है

नोटः– कोष्ठक में बाहर की संख्या अंकों की तथा भीतर प्रश्नों की द्योतक है।

हस्ताक्षर

# नमूना प्रश्न-पत्र–2023

## हिन्दी अनिवार्य

## कक्षा-XII

**समय : 3 घण्टे 15 मिनट** **पूर्णांक : 80**

---

*परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :-*

**GENERAL INSTRUCTION TO THE EXAMINEES:**

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न-पत्र पर नामांक अनिवार्यत: लिखें।

   Candidate must write first his/her Roll No. on the question paper compulsorily.

2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।

   All the questions are compulsory.

3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर-पुस्तिका में ही लिखें।

   Write the answer to each question in the given answer book only.

4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

   For questions having more than one part the answers to those parts are to be written together in continuity.

---

### खण्ड - ( अ )

**1. बहुविकल्पी प्रश्न–**

- **निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए–**

पुस्तकालय से सबसे बड़ा लाभ है ज्ञानवृद्धि। मनुष्य को बहुत थोड़े शुल्क के बदले बहुत सारी पुस्तकें पढ़ने को मिल जाती हैं। वह चाहे तो एक ही विषय की अनेक पुस्तकें पढ़ सकता है। दूसरे, उसे किसी भी विषय की नवीनतम पुस्तक वहाँ से प्राप्त हो सकती है। तीसरे, उसे किसी भी विषय पर तुलनात्मक अध्ययन करने का अवसर मिल जाता है। चौथे, विश्व में प्रकाशित विभिन्न विषयों की पुस्तकें भी यहाँ मिल जाती हैं। यही कारण है कि उच्च कक्षा तथा किसी विषय में विशेष योग्यता प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपना अधिकांश समय पुस्तकालय में ही व्यतीत करते हैं।

पुस्तकालय मनुष्य में पढ़ने की रुचि उत्पन्न करता है। यदि आप एक बार किसी पुस्तकालय में चले जाएँ, तो वहाँ की पुस्तकों को देखकर आप उन्हें पढ़ने के लिए लालायित हो जाएँगे। इस प्रकार पुस्तकालय आपकी रुचि को ज्ञान-वर्द्धन की ओर बदलता है। दूसरे, अवकाश के समय में पुस्तकालय हमारा सच्चा साथी है जो हमें सदुपदेश भी देता है और हमारा मनोरंजन भी करता है। शेष मनोरंजन के साधनों में धन अधिक खर्च होता है, जबकि यह सबसे सुलभ और सस्ता मनोरंजन है।

(i) पुस्तकालय की सबसे बड़ी उपयोगिता है— 1

(अ) मनुष्य का मान बढ़ाने में (ब) मनुष्य को राजनीति का परिचय देने में

(स) मनुष्य की ज्ञान वृद्धि में (द) मनुष्य को भूगोल का परिचय देने में।

(ii) मनुष्य के लिए पुस्तकालय का योगदान नहीं है— 1

(अ) पढ़ने की रुचि उत्पन्न करने में (ब) अवकाश के क्षणों में सच्चा साथ देने में

(स) उपदेश और मनोरंजन के रूप में (द) अमानवीय बुराइयों को उभारने के रूप में।

(iii) कौन-से छात्र अपना अधिकांश समय पुस्तकालय में बिताते हैं? 1

(अ) समय का दुरुपयोग करने वाले (ब) समय का सदुपयोग करने वाले

(स) उच्च कक्षा एवं विशिष्ट योग्यता के इच्छुक (द) खेलों में दक्षता के अभिलाषी।

(iv) 'पुस्तकालय' शब्द 'पुस्तक + आलय' दो शब्दों के मेल से बना है। प्रयुक्त सन्धि का नाम है— 1

(अ) व्यंजन संधि (ब) दीर्घ सन्धि (स) विसर्ग सन्धि (द) अयादि सन्धि

(v) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है— 1

(अ) पुस्तकालय का महत्त्व (ब) ज्ञान का भण्डार

(स) पुस्तकों की उपयोगिता (द) सच्चा साथी

(vi) अवकाश के समय में हमारा सच्चा साथी है— 1

(अ) पुस्तकालय (ब) विद्यालय (स) खेल का मैदान (द) इनमें से कोई नहीं

**निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए–**

कातरता, चुप्पी या चीखें
या हारे हुओं की खोज
जहाँ भी मिलेगी
उन्हें प्यार से सितार पर बजाऊँगा।
जीवन ने कई बार उकसाकर
मुझे अनलंघ्य सागरों में फेंका है
अगन-भट्टियों में झोंका है
मैंने वहाँ भी
ज्योति की मशाल प्राप्त करने के यत्न किये
बचने के नहीं,
तो क्या इन टटकी बन्दूकों से डर जाऊँगा?
तुम मुझको दोषी ठहराओ
मैंने तुम्हारे सुनसान का गला घोंटा है।
पर मैं गाऊँगा
चाहे इस प्रार्थना सभा में
तुम सब मुझ पर गोलियां चलाओ
मैं मर जाऊँगा
लेकिन मैं कल फिर जन्म लूँगा
कल फिर आऊँगा।

(vii) कवि ने किस महापुरुष के भावों का उल्लेख किया है? 1

(अ) महात्मा बुद्ध (ब) महावीर स्वामी (स) महात्मा गाँधी (द) दयानन्द सरस्वती

(viii) मैं मर जाऊँगा
लेकिन मैं कल फिर जन्म लूँगा
कल फिर आऊँगा।

पद्यांश की उक्त अन्तिम तीन पंक्तियों में कवि क्या कहना चाहता है? 1

(अ) मैं मरने के बाद कल फिर जन्म लूँगा (ब) कवि बार-बार मरना और जन्म लेना चाहता है

(स) देश-सेवा करने वाले बार-बार जन्म लेते हैं और मरते हैं

(द) मानवता के रक्षक हर जन्म में मानवता की सेवा की चाह रखते हैं।

(ix) 'सुनसान का गला घोंटा है' का तात्पर्य बताइए— 1

(अ) सुनसान रूपी व्यक्ति की गर्दन दबा दी (ब) सुनसान में ले जाकर व्यक्ति का गला घोंट दिया

(स) सूने मानव-मन में आशा की उमंगें भर दीं (द) सुनसान-स्थल पर सुन्दर गीत गाया।

(x) किसी रचना को लिखने की कई शैलियाँ होती हैं। शैली भेद के अनुसार उपर्युक्त पद्यांश की लेखन शैली है— 1

(अ) आत्मकथा शैली (ब) वर्णनात्मक शैली

(स) संवाद शैली (द) प्रश्न शैली।

(xi) उपर्युक्त पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक नीचे लिखे विकल्पों से छाँटिए— 1

(अ) ज्योति की मशाल (ब) अग्रदूत

(स) मानवता के मसीहा महात्मा गाँधी (द) महावीर स्वामी

(xii) 'अनलंघ्य' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है— 1

(अ) दुर्लंघ्य (ब) लंघ्य

(स) अलंघ्य (द) सुलंघ्य

**2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

(i) हिन्दी भाषा के परिवार में लगभग ..... बोलियाँ सम्मिलित हैं। 1

(ii) अंग्रेजी भाषा की लिपि ..... है। 1

(iii) ''प्रात:कालीन भ्रमण स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है।'' वाक्य में ..... शब्द शक्ति है। 1

(iv) जहाँ विशेष प्रयोजन से प्रेरित होकर शब्द का प्रयोग लक्ष्यार्थ में किया जाता है, तो वहाँ ..... लक्षणा मानी जाती है। 1

(v) माया दीपक नर पतंग, भ्रमि-भ्रमि इवै पड़न्त। काव्य पंक्ति में ..... अलंकार है। 1

(vi) गंगाजल-सा पावन मन है। काव्य पंक्ति में मन की तुलना गंगाजल से की गई है। अत: ..... अलंकार है। 1

**3. निम्नलिखित अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दीजिए–**

(i) निम्न पारिभाषिक शब्दों के अर्थ लिखिए— 1

A. Quorum, B. Pact

(ii) 'परिसंघ' शब्द के लिए पारिभाषिक शब्द लिखिए। 1

(iii) फीचर का प्रारंभ कैसा होता है? 1

(iv) कवि बनने के लिए लेखक आनंद यादव ने किसे गुरु बनाया? 1

(v) यशोधर बाबू ने किशनदा के गाँव चले जाने के बाद कौन-कौनसी परम्पराओं का पालन किया था? 1

(vi) 'डायरी के पन्ने' पाठ के आधार पर 'ऐन' के प्रकृति प्रेम का वर्णन कीजिए। 1

(vii) यशोधर बाबू अपने बच्चों तथा पत्नी से क्या चाहते थे? 1

(viii) सिन्धु घाटी सभ्यता के दो महानगर कौन-कौनसे हैं? 1

(ix) मुअनजो-दड़ो हड़प्पा से प्राप्त नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी है? 1

(x) कवि 'निराला' ने अस्थिर सुख पर दु:ख की छाया किसको कहा है? 1

(xi) जातिप्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं? 1

## खण्ड - ( ब )

**निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 40 शब्दों में दीजिए–**

**4.** भारत में इंटरनेट पत्रिका का प्रारम्भ किस प्रकार हुआ? संक्षेप में लिखिए। 2

**5.** प्रिंट मीडिया, रेडियो माध्यमों से प्रत्येक से सम्बन्धित दो-दो कमियाँ लिखिए। 2

**6.** 'खाद्य-पदार्थों में मिलावट' विषय पर एक आलेख लिखिए। 2

**7.** 'भाषा को सहूलियत' से बरतने से क्या अभिप्राय है? 2

**8.** ''कविता के बहाने'' कविता से बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या हैं? 2

**9.** जीजी के त्याग और दान के विषय में क्या विचार थे? 'काले मेघा पानी दे' अध्याय के आधार पर समझाइए। 2

**10.** चार्ली सबसे ज्यादा स्वयं पर कब हँसता है? 2

## खण्ड - ( स )

**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

**11.** 'रुबाइयाँ' के आधार पर घर-आँगन में दीवाली और राखी के दृश्य-बिम्ब को अपने शब्दों में समझाइए। 3
(उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द)

**अथवा**

निराला जी की 'बादल राग' कविता का उद्देश्य क्या है? वर्तमान सामाजिक परिवेश में इस रचना के प्रभाव का आकलन कीजिए। (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) 3

**12.** 'शिरीष के फूल' नामक पाठ में लेखक ने साहित्य, समाज और राजनीति में पुरानी और नयी पीढ़ी के किस द्वन्द्व का संकेत किया है? (उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) 3

**अथवा**

'नमक' कहानी भारत-पाक विभाजन के बावजूद मानवीय भावनाओं की समानता की कथा है। टिप्पणी कीजिए।
(उत्तर शब्द सीमा 60-80 शब्द) 3

**13.** सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का कवि-परिचय लिखिए। (उत्तर शब्द सीमा 80-100 शब्द) 4

**अथवा**

'विष्णु खरे' का लेखक परिचय लिखिए। (उत्तर शब्द सीमा 80-100 शब्द) 4

**14.** यशोधर बाबू की पत्नी उनकी अपेक्षा अधिक प्रगतिशील है। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
(उत्तर शब्द सीमा 120 शब्द) 6

**अथवा**

लेखक आनंद यादव संघर्ष करके जीवन को ऊँचा बनाता है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं? प्रमाण सहित सिद्ध कीजिए। (उत्तर शब्द सीमा 120 शब्द) 6

## खण्ड - ( द )

**15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–** 2+4=6

प्रभु प्रलाप सुनि कान बिकल भए बानर निकर।
आइ गयउ हनुमान जिमि करुना महँ बीर रस॥
हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना॥
तुरत बैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई॥
हृदयँ लाइ प्रभु भेंटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता॥
कपि पुनि बैद तहाँ पहुँचावा। जेहि बिधि तबहिं ताहि लइ आवा॥

**अथवा**

बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने।
नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
और.....
जादू टूटता है इस उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

16. **निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–** 2+4=6

मेरे पास वहाँ जाकर रहने के लिए रुपया नहीं है, यह मैंने भक्तिन के प्रस्ताव को अवकाश न देने के लिए कहा था; पर उसके परिणाम ने मुझे विस्मित कर दिया। भक्तिन ने परम रहस्य का उद्‌घाटन करने की मुद्रा बनाकर और पोपला मुँह मेरे कान के पास लाकर हौले-हौले बताया कि उसके पास पाँच बीसी और पाँच रुपया गड़ा रखा है। उसी से वह सब प्रबन्ध कर लेगी। फिर लड़ाई तो कुछ अमरौती खाकर आई नहीं है। जब सब ठीक हो जाएगा, तब यहीं लौट आएँगे। भक्तिन की कंजूसी के प्राण पूँजीभूत होते-होते पर्वताकार बन चुके थे, परन्तु इस उदारता के डाइनामाइट ने क्षणभर में उन्हें उड़ा दिया। इतने थोड़े रुपये का कोई महत्त्व नहीं; परन्तु रुपए के प्रति भक्तिन का अनुराग इतना प्रख्यात हो चुका है कि मेरे लिए उसका परित्याग मेरे महत्त्व की सीमा तक पहुंचा देता है।

**अथवा**

चैप्लिन का चमत्कार यही है कि उनकी फिल्मों को पागलखाने के मरीजों, विकल मस्तिष्क लोगों से लेकर आइन्सटाइन जैसे महान् प्रतिभा वाले व्यक्ति तक कहीं एक स्तर पर और कहीं सूक्ष्मतम रसास्वादन के साथ देख सकते हैं। चैप्लिन ने न सिर्फ फिल्म कला को लोकतान्त्रिक बनाया बल्कि दर्शकों की वर्ग तथा वर्ण-व्यवस्था को तोड़ा। यह अकारण नहीं है कि जो भी व्यक्ति, समूह या तन्त्र गैर-बराबरी नहीं मिटाना चाहता वह अन्य संस्थाओं के अलावा चैप्लिन की फिल्मों पर भी हमला करता है। चैप्लिन भीड़ का वह बच्चा है जो इशारे से बतला देता है कि राजा भी उतना ही नंगा है जितना मैं हूँ और भीड़ हँस देती है। कोई भी शासक या तन्त्र जनता का अपने ऊपर हँसना पसन्द नहीं करता।

17. सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर की ओर से उच्च माध्यमिक परीक्षा 2023 की पूरक परीक्षाओं की तिथियों की सूचना हेतु एक विज्ञप्ति तैयार कीजिए। 4

**अथवा**

अपने विद्यालय के लिए खेलकूद सामग्री क्रय करने हेतु एक निविदा तैयार कीजिए।

18. **निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सारगर्भित निबंध लिखिए।** **( शब्द सीमा 300 शब्द )** 5

(1) राष्ट्र के प्रति हमारा दायित्व
(2) स्त्री सशक्तीकरण
(3) बढ़ता विज्ञान : घटते मानवीय मूल्य
(4) राजस्थान और पर्यटन की सम्भावनाएँ

●●

# अनुक्रमणिका


| क्र. सं. | विवरण | पेज नं. |
|---|---|---|
| 1 | अपठित गद्यांश | 13–16 |
| 2 | अपठित पद्यांश | 16–19 |
| 3 | पत्र व प्रारूप लेखन (अर्द्धशासकीय पत्र, निविदा, ज्ञापन, अधिसूचना) | 20–26 |
| 4 | विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित | 27–28 |
| 5 | फीचर लेखन/आलेख | 28 |
| 6 | व्याकरण (भाषाए व्याकरण, लिपी का परिचय), शब्द शक्ति, अलंकार, पारिभाषिक शब्दावली) | 29–34 |
| 7 | व्याख्या गद्य भाग | 34–38 |
| 8 | व्याख्या पद्य भाग | 38–46 |
| 9 | पाठ्यपुस्तक आरोह भाग–2 के प्रश्न–उत्तर | 46–62 |
| 10 | कवि/लेखक परिचय | 62–65 |
| 11 | पाठ्यपुस्तक वितान के प्रश्न–उत्तर | 65–69 |
| 12 | परीक्षा वर्ष 2023 हेतु जोडे गये अतिरिक्त पाठ्यक्रम से संबधित प्रश्न | 70–105 |

**प्रश्न 1 निम्नलिखित अपठित गद्यांश पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

**गद्यांश (1)**

जिन्दगी के असली मजे उनके लिए नहीं है, जो फूलो की छांह के नीचे खेलते और सोते है बल्कि फूलो की छांह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है, तो वह भी उन्ही के लिए है जो दूर रेगिस्तान से आ रहे है, जिनका कण्ठ सुखा हुआ, ओंठ फटे हुए और सारा बदन पसीने से तर है। पानी में अमृत वाला तत्व है, उसे वह जानता है जो धूप में सूख चुका है। वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नही है।

सुख देने वाली चीजे पहले भी थी और आज भी है, फर्क यह है कि जो सुखों का मूल्य पहले चुकाते है और उनकेमजे बाद में लेते है उन्हे स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हे आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है। जो लोग पाँव भीगने के खौफ से पानी से बचते रहते है, समुद्र में डूब जाने का खतरा उन्ही के लिए है। लहरों में तैरने का जिन्हे अभ्यास है, वे मोती लेकर बाहर आएँगे।

**(क) फूलो की छांह के नीचे सोने और खेलने का क्या तात्पर्य है?**

**उत्तर–**फूलो की छांह के नीचे सोने और खेलने का तात्पर्य सुखी तथा आरामतलब जीवन व्यतीत करने में तथा श्रम से बचने से है।

**(ख) रेगिस्तान की यात्रा करने से क्या कष्ट होता है?**

**उत्तर–** उनका गला सूख जाता है और होंठ फट जाते है उसका पूरा शरीर गर्मी और पसीने से लथपथ हो जाता है।

**(ग) जिंदगी का मजा कौन उठा सकता है?**

**उत्तर–** कठोर श्रम करने वाले तथा कठिनाइयों से जूझने वाले ही जिंदगी का असली मजा उठा सकते है।

**(घ) सुख देने वाली चीजों से अधिक सुख किनको मिलता है?**

**उत्तर–** सुख देने वाली चीजे सुख तो देती है परन्तु जो पहले कष्ट उठा चुका होता है उसको उन चीजों से ज्यादा सुख मिलता है।

**(ड.) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए?**

**उत्तर–** 'सच्चा जीवन'



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

## गद्यांश (2)

स्वावलम्बन का गुण सभी को सरलता से प्राप्त हो सकता है। यह किसी एक विशेष जाति, विशेष धर्म तथा विशेष देश के निवासी की सम्पति नहीं है। स्वावलम्बन सभी के लिए चाहे वह पुंजीपति हो या मजदूर, पुरूष हो स्त्री, वृद्ध हो या बालक, काला हो या गोरा, शिक्षित हो या अशिक्षित, प्रत्येक समय प्रत्येक स्थान पर सुलभ है। इतिहास साक्षी है कि अत्यन्त दीन तथा निर्धन व्यक्तियों के स्वावलम्बन के अलौकिक गुण द्वारा महान् उन्नति की है।

समाचार पत्र बेचने वाला एडिसन एक दिन महान् उपन्यासकार हुआ। चन्द्रगुप्त नामक एक निर्धन और साधारण सैनिक भारत का चकवती सम्राट हुआ। हैदरअली प्रारम्भ में एक सिपाही था, स्वावलम्बन के कारण ही उसने दक्षिण भारत में अपना राज्य स्थपित किया ईश्वरचन्द्र विद्यासागर हमारे भारत के ख्याति प्राप्त नवरत्न थे। कहा जाता है कि उन्होने अंग्रेजी अक्षरों का ज्ञान सड़क किनारे गडे हुए मील के पत्थरों से किया था।

**प्रश्न–**

**(अ) स्वावलम्बन गुण का क्या महत्व है? बताइये।**

**(ब) चन्द्रगुप्त साधारण सैनिक से सम्राट कैसे बना?**

**(स) स्वावलम्बन का महत्व क्या है?**

**(द) "समाचार पत्र बेचने वाला एडिसन महान् उपन्यासकार है" यह किस प्रकार का वाक्य है?**

**(य) अलौकिक शब्द में मूल शब्द और उपसर्ग–प्रत्यय बताइये।**

**(र) गद्यांश का उपर्युक्त शीर्षक लिखिए।**

**उत्तर–**

(अ) स्वावलम्बन का गुण सभी मनुष्यों की उन्नति के लिए परमावश्यक है

(ब) चन्द्रगुप्त स्वावलम्बन गुण से साधारण सैनिक से चकवर्ती सम्राट बना।

(स) स्वावलम्बन का महत्व है आत्मनिर्भर होकर काम करना।

(द) यह साधारण वाक्य है।

(य) अलौकिक = 'अ' उपसर्ग +'लोक' शब्द +'इक' प्रत्यय

(र) शीर्षक–स्वावलम्बन का महत्व

## गद्यांश (3)

तुलसी हमारे जातीय जन–जागरण के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी कविता की आधारशिला जनता की एकता है। मिथिला से लेकर अवध और ब्रज तक चार सौ साल से तुलसी की सरस वाणी नगरों और गॉवों में गूँजती है। साम्राज्यवादी,सामन्ती अवशेष और बड़े पूँजीपतियों के शोषण से हिन्दी–भाषी जनता को मुक्त करके उसकी जातीय संस्कृति को विकसित करना हैं। हमारे जातीय संगठन के मार्ग में साम्प्रदायिकता,उँच–नीच के भेद–भाव, नारी के प्रति सामन्ती शासक का रूख आदि अनेक बाधाएँ हैं।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**तुलसी का साहित्य हमें इनसे संघर्ष करना सिखाता है। तुलसी का मूल सन्देश है, मानव–प्रेम को सक्रिय रू॰ देना, सहानुभूति को व्यवहार में परिणत करके जनता के मुक्ति–संघर्ष में योग देना हमारा कर्तव्य हैं।**

**प्रश्न (अ) तुलसी–साहित्य से हमें क्या शिक्षा लेनी चाहिए?**

**(ब) तुलसीदास जी के अनुसार जातीय संगठन के मार्ग में कौनसी बाधाएँ है?**

**(स) तुलसी ने मनुष्य का क्या कर्तव्य बताया है?**

**(द) तुलसी का साहित्य हमें इनसे संघर्ष करना सिखाता हैं। यह किस प्रकार का वाक्य हैं?**

**(य) 'साम्प्रदायिकता' शब्द में मूल शब्द और प्रत्यय बताइये?**

**(र) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।**

उत्तर–(अ) तुलसी–साहित्य से हमें जन–जागरण और मानव–प्रेम की शिक्षा लेनी चाहिए। साथ ही उससे हमें गम्भीर मानव–सहानुभूति

और उच्च विचारों की प्रेरणा लेनी चाहिए।

(ब) तुलसीदास जी के अनुसार हमारे जातीय संगठन के मार्ग में साम्प्रदायिकता, उॅच–नीच के भेदभाव, नारी के प्रति सामन्ती

शासक का रूख आदि अनेक बाधाएँ हैं।

(स) मानव प्रेम को सक्रिय रूप देना, सहानुभूति को व्यवहार में परिणत करके जनता के मुक्ति–संघर्ष में योग देना हमारा कर्तव्य है।

(द) यह साधारण वाक्य हैं।

(य) साम्प्रदायिकता – सम्प्रदाय मूल शब्द + इक व ता प्रत्यय ।

(र) शीर्षक– तुलसी–साहित्य का महत्व ।

## गद्यांश (4)

**मनुष्य यन्त्र नहीं है कि जिसके सब कलपुर्जे खोलकर ठीक कर लिए जायेंगे और तेल या ग्रीस लगाकर पुनः चालू कर लिया जायेगा । प्रत्येक मनुष्य विशेष परिस्थितियों में विशेष संस्कारों के साथ उत्पन्न होता है। इन परिस्थितियों और संस्कारों में कुछ अनुकुल हो सकते हैं और कुछ प्रतिकुल। शिक्षालय ऐसे कारखाने हैं जहॉ विषय और प्रभावों का परिमार्जन, सामंजस्य और मानव का विस्तार होता है। दूसरे शब्दों में यहॉ मनुष्य की बुद्वि और ह्रदय खराद पर चढ़ते है और तब नये–नये रूप में समाज के सम्मुख आते हैं । किसी सुन्दर स्वप्न, आदर्श या अनुभूति को दूसरे को देना आसान नहीं होता । यह आदान–प्रदान देने और पान वाले दोनो को धन्य कर देता हैं । हमारी शिक्षा चाहे वह प्राथमिक हो, चाहे उच्च, उसने मनुष्य की सम्भावनाओं की ओर कभी ध्यान नहीं दिया ।**

**प्रश्न (अ) मनुष्य के संस्कारों एवं प्रभावों का परिमार्जन किससे होता है?**

**(ब) 'मनुष्य यन्त्र मात्र नहीं हैं' इसका आशय समझाइए।**

**(स) ' खसद' शब्द का मतलब क्या है?**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**(द) 'इन परिस्थितियों और संस्कारों में कुछ अनुकूल होते है और कुछ प्रतिकूल।' यह किस प्रकार का वाक्य है? स्पष्ट**

**कीजिए।**

**(य) अनुभूति शब्द में मूल शब्द और प्रत्यय बताइये।**

**(र) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।**

उत्तर– (अ) मनुष्य में कुछ जन्मजात संस्कार तथा प्रभाव होते है, उनका अनुकूल परिस्थितियों में ढालने के लिए परिमार्जन करना

पड़ता है। यह कार्य शिक्षा से होता है।

(ब) मनुष्य निर्जीव वस्तु नहीं है वह बुद्वि, हृदय और संस्कारों से युक्त होता है।

(स) 'खराद' फारसी शब्द है । यह एक प्रकार का यन्त्र है जो लकड़ी अथवा धातु की बनी हुई वस्तुओं के बडौल अंग

छीलकर उन्है सुडौल और चिकना बनाता है।

(द) यह संयुक्त वाक्य है । इसमें 'और' संयोजक अव्यय का प्रयोग किया गया है।

(य) अनुभूति–अनु उपसर्ग + भूत शब्द + इ प्रत्यय।

(र) शीर्षक – शिक्षा का महत्व ।

**प्रश्न 2 निम्नलिखित अपठित पद्यांश पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

**पद्यांश (1)**

**जीवन में वह था एक कुसुम,**
**थे उस पर नित्य निछावर तुम,**
**वह सुख गया तो सुख गया,**
**मधुवन की छाती को देखो–**
**सूखी इसकी कितनी कलियाँ ,**
**मुरझाई कितनी वल्लरियाँ,**
**जो मुरझाई फिर कहाँ खिली,**

**जीवन में मधु का प्याला था,**
**तुमने तन–मन दे डाला था।**
**वह टूट गया ता टूट गया,**
**मदिरालय का आँगन देखो।**
**कितने प्याले हिल जाते है,**
**गिर मिटट्री में मिल जाते है।**
**जो गिरते है कब उठते है ?**
**पर बोलो टूटे प्यालों पर**
**कब मदिरालय पछताता है ?**
**जो बीत गई सो बात गई।**

**(क) जीवन में था एक कुसुम में कवि ने कुसुम शब्द का प्रयोग किसके लिए किया है।**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**उत्तर** –यह कविता व्यक्तिगत तत्वों पर आधारित है जीवन में था एक कुसुम में कुसुम शब्द का प्रयोग कवि की दिवंगत पत्नी के लिए किया गया है।

**(ख) –मधुवन किस बात पर शोर नही मचाता है ?**

**उत्तर** –मधुवन अर्थात बाग में अनेक पादप तथा लताएँ होती है। अनेक लताएँ सूख जाती है। फूल मुरझा जाते है परन्तु बाग इस पर रोता– धोता नही है।

**(ग)– जो बीत गई सो बात गई–कहकर कवि ने क्या संदेश दिया है ?**

**उत्तर**–जो बीत गई सो बात गई – कहकर कवि ने पुरानी और बीती बातों पर दुखी होना छोड़कर वर्तमान स्थितियों में जावित रहने का संदेश दिया है इसमें संदेश है बीती ताहि बिसारी दे आगे की सुधि लेई।

**(घ)– इस काव्यांश में किस शैली का प्रयोग हुआ है ?**

**उत्तर**– इस काव्यांश में कवि ने गीत–शैली का प्रयोग किया है।

**(ड.) इस पद्यांश से संसार की नश्वरता को प्रकट करने वाली चार पक्तियाँ छाँटकर लिखिए।**

**उत्तर** – इस पद्यांश में संसार की नश्वरता को व्यक्त करने वाली पंक्तियाँ निम्नलिखित है।

मदिरालय का आँगन देखो
कितने प्याले हिल जाते है।
गिर मिटट्री में मिल जाते है।
जो गिरते है। कब उठते है ?

**पद्यांश (2)**

**नीड़ का निर्माण फिर–फिर**
**नेह का आह्वान फिर–फिर**
**वह उठी आँधी की नभ में**
**छा गया सहसा अँधेरा**
**धूलि धूसरित बादलों ने**
**भूमि को इस भाँति घेरा**
**रात–सा दिन हो गया फिर**
**रात आई और काली**
**लग रहा था अब न होगा**
**इस निशा का फिर सवेरा**
**रात के उत्पात –भय से**
**भीत जन–जन भीत कण–कण**
**किंतु प्राची से उषा की**
**मोहिनी मुस्कान फिर फिर**
**नीव का निर्माण फिर–फिर**
**नेह का आह्वान फिर–फिर**

**(क)– नीड़ का निर्माण फिर–फिर में कौन सा अलंकार है ?**

**उत्तर** –नीड का निर्माण में अनुप्रास अलंकार तथा फिर–फिर में पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार है।

**(ख)– बार–बार घोंसला बनाने की इच्छा से मनुष्य की किस भावना का पता चलता है ?**



CBEO BHINDER

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**उत्तर** –बार–बार घोंसला बनाने की इच्छा से पता चलता है कि मनुष्य जीवन में आए संकटो से घबराता नही है वह कठिनाईयों और बाधाओं से हार न मानकर निरन्तर आगे बढ़ना चाहता है।

**(ग)– आकाश में छाइ आंधी का क्या परिणाम कवि ने चित्रित किया है ?**

**उत्तर–** आकाश में आंधी छा गई इससे दिन में भी अंधेरा छा गया है।

**(घ)– प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने क्या संदेश दिया है ?**

**उत्तर–**प्रस्तुत पंक्तियों में मानव जीवन के इस सत्य का चित्रण हुआ है कि जीवन में सुख–दुख, जीत हार आदि आते जाते रहते है। निराशा और पराजय सदा नहीं रहते इन पंक्तियों में आशीर्वाद का संदेश दिया गया है।

**(ड)– इस कविता की रचना किस शैली में हुई है ?**

**उत्तर–** इस कविता की रचना गीत शैली में हुई है यह एक गेय रचना है।

**(च)– कवि निराश और भयभीत है–यह भाव किन पंक्तियों में व्यक्त हुआ है ?**

**उत्तर–** कवि निराश और भयभीत है – भाव निम्नलिखित पंक्तियों में व्यक्त हुआ है।

लग रहा था अब न होगा
इस निशा का फिर सवेरा।

## पद्यांश (3)

**ओ हिमानी चौटियों के सजग प्रहरी**
**तंग सूनी घाटियों के सबल रक्षक, तून एकाकी समझना आपको,**
**देश तेरे साथ अन्तिम श्वास तक।**
**तू सिपाही सत्य का स्वातंत्र्य का है,**
**न्याय का और शांति का है तू सिपाही, प्राण देकर प्राण के ओ प्रबल प्रहरी!**
**जा रहा तू देश हित बलि पंथ राही!**
**जा कि तेरे साथ है इस देश का बल,**
**साथ तेरे देश की हर भावना है, साथ धन जन, साथ तन मन**
**साथ, तेरी विजय की शुभ कामना है।**

**प्रश्न (अ) "हिमानी के सजग प्रहरी किसके लिए कहा गया है?**
**(ब) सिपाही को किसका रक्षक बताया गया है?**
**(स) प्रस्तुत काव्यांश का केन्द्रीय भाव क्या है? बताइए।**
**(द) "जा कि तेरे साथ है" सिपाही के साथ कौन है?**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**(य) 'साथ धन जन, साथ तन मन' इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?**

**(र) इस काव्यांश में किसका चित्रण किया गया है?**

**उत्तर-(**अ)प्रस्तुत काव्यांश में देश की सीमाओं की रक्षा करने वाले सैनिकों को सजग प्रहरी कहा गया है।

(ब) सिपाही को केवल मातृभूमि की सीमाओं का ही नहीं, अपितु देश की स्वतन्त्रता, न्याय और शांति का भी रक्षक बताया गया है।

(स) इसका केन्द्रीय भाव यह है कि देश की रक्षा के लिए सिपाही अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं अतः उनके प्रति देशवासियों को कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए।

(द) सीमाओं की रक्षा करने वाले सिपाही के साथ देशवासियों की ओजस्वी भावनाएँ, आत्म बल, सभी का तन- मन-धन और शुभकामनाएँ हैं।

(य) इस पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।

(र) इस काव्यांश में देश की रक्षा के लिए अनेक कठिनाइयों को झेलते हुए अपने प्राणों की बाजी लगाने वाले सैनिक का चित्रण किया गया है।

पद्यांश (4)

**ऊँची हुई मशाल हमारी**
**आगे कठिन डगर है,**
**शत्रु हट गया, लेकिन उसकी**
**छायाओं का डर है।**
**शोषण से मृत है समाज**
**कमजोर हमारा घर है,**
**किन्तु आ रही नयी जिन्दगी**
**यह विश्वास अमर है।**
**जन-गंगा में ज्वार,**
**लहर तुम, प्रवहमान रहना**
**पहरुए, सावधान रहना।**

**प्रश्न-** **(अ) "आगे कठिन डगर है" इससे क्या आशय है?**

**(ब) शोषण से मृत समाज का उद्धार कैसे हो सकता है?**

**(स) जन-गंगा में ज्वार" कवि ने ज्वार किसे कहा है और क्यों?**

**(द) यह विश्वास अमर है" इस पंक्ति में कवि का क्या आशय है?**

**(य) कमजोर हमारा घर है इसका तात्पर्य क्या है?**

**(र) 'शत्रु हट गया, लेकिन उसकी छायाओं का डर है। इसका भावार्थ क्या है?**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**उत्तर-** (अ) इसका आशय यह है कि देश को सदियों की गुलामी के बाद आजादी मिली है, परन्तु आगे इसकी प्रगति का मार्ग कुछ कठिन है।

(ब) शोषण से ग्रस्त समाज का उद्धार परस्पर समानता सहयोग तथा सहभागिता के द्वारा हो सकता है, जन-कल्याणकारी नीतियों से हो सकता है।

(स) 'ज्वार से कवि का आशय जनता में जोश उत्साह गतिशीलता और उद्यमिता है; क्योंकि समाज एवं राष्ट्र की कमजोरियां तभी दूर हो सकती है जब जनता सावधान एवं कर्तव्यनिष्ठ रहे।

(द) कवि का आशय है कि नव स्वतन्त्र भारत यद्यपि आर्थिक दृष्टि से कमजोर है, परन्तु इसकी प्रगति विकास और खुशहाली के लिए सभी प्रयासरत हैं।

(य) हमारा देश आर्थिक रूप से बहुत विपन्न है।

(र) शत्रु अर्थात् हमें गुलाम बनाने वाले अंग्रेज चले गए हैं पर उनकी छाया के रूप में विद्यमान छद्म यहाँ कमी नहीं है। हमें उनका डर है।

**प्रश्न 3** <u>निबन्ध (शीर्षक)</u>

1 कोरोना वायरस – 21वीं सदी की महामारी

2 मेक इन इण्डिया अथवा स्वदेशी

3 स्वास्थ्य रक्षा : आयुष्मान योजना

4 आधुनिक सूचना– प्रौद्योगिकी

5 नारी– सशक्तिकरण

**प्रश्न 4** कार्यालय निदेशक राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान जयपुर की ओर से आवश्यक मशीन उपकरण सप्लाई हेतु एक निविदा सूचना लिखिए?

उत्तर–

**राजस्थान सरकार**

**कार्यालय निदेशक राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान जयपुर**

**कमांकः–472** **दिनांकः– 14.01.2021**

<u>निविदा सूचना</u>

राजस्थान के माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों कम्प्यूटर अन्य उपकरण सप्लाई हेतु पंजीकृत कम्पनी से दिनांक 25.01.2021 तक निविदाएं आमंत्रित की जाती है। प्राप्त निविदाएं दिनांक 27.01.2021 को प्रातः 10 बजे उपस्थित निविदा दाताओं के समक्ष खोली जाएगी। विवरण इस प्रकार है:–

| क.सं. | कार्य विवरण | अनुमानित लागत (करोड़) | धरोहर राशि (लाख) | अवधि |
|---|---|---|---|---|



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1. | कम्प्यूटर मय प्रिंटर सीपीयू व अन्य सामग्री | 42.00 | 20.5 | 3 माह |
| 2. | फोटो स्कैनर मशीन | 6.00 | 3.00 | 1 माह |
| 3. | लेपटॉप | 1.00 | 0.50 | 1 माह |

**शर्तेः–**

(1) निविदा को निरस्त करने का सम्पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षर कर्ता के पास सुरक्षित रहेगा।

(2) समस्त न्यायिक विवादों का परिक्षेत्र जयपुर रहेगा।

**हस्ताक्षर**
**निदेशक आयुक्त**

**प्रश्न 5 सचिव, राजस्तरीय पाठ्य–पुस्तक मण्डल की ओर से एक निविदा सूचना का प्रारूप तैयार कीजिए, जिसमें फर्नीचर एवं स्टेशनरी क्रय करने का विवरण हो।**

**उत्तर–**

**निविदा–सूचना**

**राज्यस्तरीय पाठ्य–पुस्तक मण्डल,**

**झालाना सांस्थानिक क्षेत्र, जयपुर**

क्रमांक– लेखा/नि.सू./20XX–15

दिनांक 12 नवम्बर, 20XX

निविदा संख्या 17/20XX

अधोहस्ताक्षरकर्त्ता द्वारा इस वृत्त के कार्य हेतु निम्न विवरणानुसार सामान की आपूर्ति हेतु प्रतिष्ठित निर्माताओं/प्रतिष्ठानों से निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं जो निर्धारित तिथियों को दोपहर दो बजे तक प्राप्त की जायेंगी तथा उसी दिन तीन बजे इच्छुक निविदाकारों के समक्ष खोली जायेंगी। निविदा–प्रपत्र निविदा खोलने की निर्धारित तिथि के 12 बजे तक निविदा शुल्क तथा धरोहर राशि का रेखांकित बैंक ड्राफ्ट लेखा अधिकारी राज्यस्तरीय पाठ्य–पुस्तक मण्डल, जयपुर के कार्यालय में जमा कराकर उपलब्ध किया जा सकता है। निविदा–विवरण इस प्रकार है–



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

| विवरण | अनुमानित राशि | धरोहर राशि | निविदा खोलने की तिथि | निविदा प्रपत्र–शुल्क |
|---|---|---|---|---|
| 1. स्टील फर्नीचर की आपूर्ति हेतु | चार लाख रु. लगभग | 8000/– | 15/11/20XX | 100/– |
| 2. स्टेशनरी आइटम की आपूर्ति हेतु | एक लाख तीस हजार रु. लगभग | 2500/– | 15/11/20XX | 50/– |

नोट– आपूर्ति के लिए सामग्री का पूरा विवरण निविदा–प्रपत्र के साथ उपलब्ध रहेगा।

हस्ताक्षर सचिव

**प्रश्न 6 कार्यालय सदस्य सचिव, राजस्थान मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी, बूँदी की ओर से आवश्यक मशीन–उपकरण खरीदने हेतु एक निविदा–सूचना लिखिए।**

**उत्तर–**

**निविदा–सूचना**

**कार्यालाय सदस्य सचिव,**

**राजस्थान मेडिकेयर रिलीफ सोसायटी, बूँदी**

क्रमांक नि.ले/2021/104
दिनांक 28 अक्टूबर, 2021

अल्पकालीन निविदा–सूचना संख्या 05/2021

प्रधानमंत्री स्वास्थ्य–योजनान्तर्गत राजकीय जिला चिकित्सालय, बूंदी हेतु निम्नांकित उपकरणों के क्रय हेतु सीलबन्द निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं–

| क्र. सं. | नम उपकरण | मात्रा लागत | अनुमानित राशि | धरोहर प्रपत्र शुल्क | निविदा |
|---|---|---|---|---|---|
| | एक्सरे मशीन 800 एम.ए. | 1 | 50 लाख | 50000/– | 100/– |
| | टी. एम. सी. मशीन | 1 | 80 लाख | 22000/– | 100/– |



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | पल्स आक्सीमीटर मय हार्ट रेट | 1 | 50 हजार | 2000/– | 50/– |

निविदा प्रपत्र कार्यालय से निर्धारित शुल्क जमा कराकर प्राप्त किये जा सकते हैं तथा दिनांक 10/11/2021 को दोपहर बाद 2.30 बजे तक कार्यालय में जमा कराये जा कसते हैं। निविदाएं उपस्थित निविदाकर्त्ताओं के समक्ष क्रय समिति द्वारा दिनांक 10/11/2021 को ही अपराह्न 4.00 बजे खोली जायेंगी।

निविदा को बिना कारण बताये स्वीकार/अस्वीकार करने का पूर्ण अधिकार निम्न–हस्ताक्षरकर्त्ता को प्राप्त रहेगा।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं सदस्य सचिव
राज्य. मेडि. सोसायटी, बूँदी

**प्रश्न 7 राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर की ओर से एक विज्ञप्ति प्रारूप तैयार कीजिए, जिसमें परीक्षाओं की तारीख परिवर्तित करने की सूचना दी गई हो।–**
**उत्तर–**

**विज्ञप्ति**
**राजस्थान विश्वविद्यालय**
**जयपुर**

**कमांकः–229** **दिनांकः–12.03.2022**

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एम.ए.,एम.कॉम. व एम.एस.सी. की लिखित परीक्षाएँ 15 मार्च 2022 से ली जाने वाली थी किन्तु अपरिहार्य कारणों सेअब 20 मार्च 2022 से आयोजित होगी।
परीक्षार्थी अपना प्रवेश–पत्र विश्वविद्यालय की वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते है अथवा सम्बधित महाविद्यालय जो सम्पर्क कर सकते है।

**हस्ताक्षर**
**परीक्षा नियंत्रक**

**प्रश्न 8 राजस्थान में अकाल की विभीषिका को देखते हुए, गृह मंत्रालय की ओर से समस्त विभागों हेतु कार्यालय ज्ञापन का प्रारूप तैयार कीजिए–**

राजस्थान सरकार
गृह मंत्रालय जयपुर

**ज्ञा.सं. :–16(अ)/142** **दिनांकः–03.05.2022**

विषयः– जनसमस्याओं के निवारण बाबत्



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

समस्त विभागाध्यक्षों को सूचित किया जाता है कि राजस्थान में अकाल की विभीषिका से त्रस्त जनता की विविध समस्याओं का त्वरित निस्तारण आवश्यक है। अतः प्रशासन अपनी भूमिका का पूर्ण निष्ठा से निर्वहन करे।

**सेवामें,**

**1. समस्त मंत्रालय, राजस्थान सरकार**
**2. समस्त विभागाध्यक्ष**
**3. समस्त जिला कलक्टर**

**हस्ताक्षर**
**क,ख,ग**
**उपशासन सचिव**

**. प्रश्न 9 अधिसूचना का एक प्रारूप तैयार कीजिए–**
**उत्तर–**

**राजस्थान सरकार**
**राजस्व विभाग, शासन सचिवालय, जयपुर**

**पत्रांक–4(स)/20/3/2020** **दिनांकः–15.10.2021**

**अधिसूचना**

राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित प्रशासन गाँवों की ओर 2021 के अन्तर्गत जारी मूल निवास एवं जाति प्रमाण–पत्र पर हस्ताक्षर हेतु तहसीलदार अधिकृत होंगे। यह अधिसूचना 31 दिसम्बर 2021 अथवा अभियान संचालित होने तक जो भी पहले हो, प्रभावी रहेगी।

**हस्ताक्षर**
**(अ,ब,स)**
**उपशासन सचिव**

प्रतिलिपि सूचनार्थ–
1. निजी सचिव, माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान जयपुर।
2. निजी सचिव, मुख्य सचिव, राजस्थान जयपुर।
3. सचिव, राजस्व विभाग, जयपुर।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

4. समस्त जिला कलक्टर।
5. निदेशक, राजकीय मुद्रणालय, निमित राजपत्र में प्रकाशनार्थ।

हस्ताक्षर
(अ,ब,स)
उपशासन सचिव

CBEO BHINDER

## अर्द्धशासकीय पत्र

**प्रश्न 10.** **जिला कलेक्टर, उदयपुर की ओर से राजस्व सचिव, राजस्थान सरकार को स्वच्छता अभियान हेतु बजट स्वीकृति जारी करने हेतु सरकारी पत्र लिखिए।**

उत्तर–

**प्रेषक–**

जिला कलेक्टर,
कलेक्टर– कार्यालय,
उदयपुर

**प्रेषित–** श्रीमान् राजस्व सचिव महोदय,
शासन सचिवालय, राजस्थान सरकार,
जयपुर

पत्रांक – 28 / 08 / 20XX

दिनांक
05सितम्बर,20XX

**विषय–** स्वच्छता अभियान हेतु बजट स्वीकृति जारी करने के सम्बन्ध में।

प्रियश्री .....



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

आप इस तथ्य से भली–भॉति परिचित हैं कि प्रधानमंत्री स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत 'खुला–शौचमुक्त गॉव'कार्यक्रम जिला स्तर पर 'स्वच्छ ग्रामीण मिशन' एवं ग्राम–पंचायतों के माध्यम से चलाया जा रहा है । इस कार्यक्रम हेतु बजट स्वीकृति जारी करने का कष्ट करें, ताकि 'खुला–शौचमुक्त गॉव' कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में गति दी जा सके।

भवदीय

( ह. .....)
वी.एस.पाल
जिला कलेक्टर, उदयपुर

**प्रश्न 11. पेयजल की आपुर्ति के सम्बन्ध में विशिष्ट शासन सचिव की ओर से अजमेर मण्डलायुक्त को एक अर्द्ध–सरकारी पत्र लिखिए, जिसमें पूर्ण विवरण भेजने के लिए निर्देश हो।**

उत्तर–

**प्रेषक–**

विशिष्ट शासन सचिव,
स्वायत्त शासन विभाग,
राजस्थान सरकार,
शासन सचिवालय, जयपुर।

**प्रेषिति–**

श्रीमान् मण्डलायुक्त,
अजमेर।

पत्र संख्या : 403/2/20XX

जयपुर, 15 मई, 20XX

प्रिय राठौड़जी,

CBEO BHINDER



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कृपया मेरे अर्द्ध–सरकारी पत्र संख्या 202/2/सं. 20XX, दिनांक 4 अप्रैल, 20ग्ग पर ध्यान दीजिए, जिसमें राज्य सरकार द्वारा अजमेर मण्डल के सभी जिलों में पेयजल की उचित आपूर्ति के लिए आवश्यक कार्यवाही करने का निर्देश दिया गया था। गर्मी का मौसम आने से पूर्व सरकार इस समस्या का समाधान करना चाहती है, परन्तु जब तक प्रत्येक जिले के लिए पेयजल आपूर्ति की योजना, व्यय–भार एवं अन्य विवरण उपलब्ध नहीं हो जावे, तब तक सरकारी प्रयास रुक रहेंगे। अतः आप अपने क्षेत्र की पूरी जानकारी यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें। इसके लिए अलग–अलग बिन्दुओं का सांख्यिकीय विवरण तथा अनुमानित व्यय आदि की रूपरेख भेजनी नितान्त अपेक्षित है।

भवदीय

( हस्ताक्षर .....)
शिवपाल सिंह राजावत
विशिष्ट शासन सचिव

**प्रश्न 12 जनसंचार के प्रमुख माध्यम कौन–कौन से है। इन माध्यमों में समाचारों के लेखन और प्रस्तुति में क्या प्रमुख अन्तर है?**

**उत्तर–** जनसंचार के प्रमुख माध्यम है– प्रिंट, टी.वी. रेडियों और इंटरनेट इन सभी माध्यमों में समाचार की लेखन शैली और प्रस्तुति में अन्तर है। अखबार पढ़ने के लिए, रेडियों सुनने के लिए और टी.वी. देखने के लिए होता है पर इंटरनेट पर पढ़ने सुनने और देखने तीनों की सुविधा है।

**प्रश्न 13 जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम क्या है? इसके अन्तर्गत क्या–क्या माध्यम आते है।**

**उत्तर–**जनसंचार का सबसे पुराना स्वयं मनुष्य है पौराणिक काल के देवर्षि नारद को प्रथम समाचारवाचक माना जाता सकता है। महाभारतकाल में संजय की परिकल्पना भी अत्यन्त समृद्ध संचार व्यवस्था को इंगित करती है। कालान्तर में जनभावानाओं को राजदरबार तक पहुँचाने और राजा का संदेश जनता तक पहुँचाने हेतु प्रयोग किया गया शिलालेख व पट्टिका का प्रयोग, गुफा चित्र, विविध नाट्य रूपों, कथावाचन, बाउल, सांग रागनी, तमाशा, लावनी नौटंकी मात्रा गंगा गौरी एवं वाक्ष गान आदि इसी माध्यम के आते है।

**.प्रश्न 14 आधुनिक युग में जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम क्या है?**

**उत्तर–** प्रिंट अर्थात् मुद्रित माध्यम जनसंचार के आधुनिक माध्यमों में सबसे पुराना है। आधुनिक युग का प्रारम्भ ही मुद्रण या छपाई के आविष्कार से हुआ। यद्यपि मुद्रण का प्रारम्भ चीन में हुआ पर आज हम जिस छापेखाने(प्रेस) को देखते है इसका श्रेय जर्मनी के गुटेनवर्ग को है।

**प्रश्न 15 उल्टा पिरामिड शैली की विशेषताएँ बताइये।**
**उत्तर–** उल्टा पिरामिड शैली की निम्न विशेषताएँ है–



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(I) उल्टा पिरामिड शैली में समाचार का महत्वपूर्ण तथ्य सबसे पहले लिखा जाता है उसके बाद घटते हुए महत्वक्रम में अन्य सूचनाओं या तथ्यों को लिखा जाता है।

(II) इस शैली में झटना/विचार/समस्या का विवरण कालक्रम के अनुसार न होकर महत्व के आधार पर शुरू होता है।

(III) पिरामिड शैली का चरमोत्कर्ष अन्त में न होकर शुरू मे ही आ जाता है।

(IV) इस शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता है।

**.प्रश्न 16 उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के कितने हिस्से होते है उनके बारे में आप क्या जानते है?**

**उत्तर–** उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के तीन हिस्से होते है–

1. इंट्रों 2. बॉडी 3.समापन

समाचार के इंट्रों को लीड या हिन्दी में मुखड़ा भी कहते है यह खबर का मूल तत्व होता जिसे प्रथम दो या तीन पंक्तियों में बताया जाता है।

बॉडी में समाचार का विस्तृत ब्यौरा दिया जाता है जो घटते हुए महत्वक्रम में दिया जाता है इस शैली में समापन जैसी कोई चीज नहीं होती।

**.प्रश्न 17 टी.वी. में सूचनाओं के कितने चरण होते है?**

**उत्तर–** टी.वी. में सूचनाओं के सात चरण होते है–

1. फ्लैश या ब्रेकिंग न्यून
2. ड्राई–एंकर
3. फोन–इन
4. एंकर–विजुअल
5. एंकर बाइट
6. लाइव
7. एंकर–पैकेज

**प्रश्न 18 फोन–इन का क्या आशय है?**

**उत्तर–**टी.वी. में सूचनाओं के दूसरे चरण ड्राई–एंकर के पश्चात् समाचार का विस्तार होता है। एंकर घटना स्थल पर उपस्थित संवाददाता से फोन पर बात करके सूचनाओं को दर्शकों तक पहुँचाता है। इसमें रिपोर्टर घटनास्थल पर मौजुद रहता है तथा घटना–स्थल से जो भी जानकारी मिलती है रिपोर्टर उन्हे ज्यादा से ज्यादा दर्शकों तक पहुँचाता है।

**प्रश्न 19 इंटरनेट क्या है?**

**उत्तर–** इंटरनेट जनसंचार का सबसे नया पर तेजी से लोकप्रिय हो रहा माध्यम है यह ऐसा माध्यम है जिसमें प्रिंट मीडिया, रेडियों, टेलीविजन, किताब, सिनेमा यहाँ तक कि पुस्तकालय के सारे गुण है उसकी पहुँच दुनिया के कोने–कोने तक है उसमें जनसंचार के सभी माध्यमों का समापन है।

**.प्रश्न 20 इंटरनेट पत्रकारिता से आप क्या समझते है?**

**उत्तर–**इंटरनेट पर समाचार–पत्रों का प्रकाशन या समाचारों के आदान प्रदान की इंटरनेट पत्रकारिता कहते है। इंटरनेट पर किसी भी रूप के समाचारों लेखों, चर्चा परिचर्चाओं, बहसों फीचर झलकियों के माध्यम से यदि हम अपने समय की धड़कनों को अनुभव करने का काम करते है तो यही इंटरनेट पत्रकारिता है।

**.प्रश्न 21 हिन्दी में नेट पत्रकारिता का प्रारंभ किस प्रकार हुआ?**

**उत्तर–** हिन्दी में नेट पत्रकारिता वेब दुनिया के साथ शुरू हुई। इंदौर की नई दुनिया समुह से शुरू हुआ यह पोर्टल हिन्दी का सम्पूर्ण पोर्टल है हिन्दी के निम्नलिखित समाचार–पत्रों में इंटरनेट की सुविधा है जागरण, अमर उजाला, नयी दुनिया हिन्दुस्तान भास्कर, राजस्थान पत्रिका, नवभारत टाइम्स, राष्ट्रीय सहारा आदि। प्रभासाक्षी अखबार प्रिंट रूप न होकर सिर्फ इंटरनेट पर उपलब्ध है पत्रकारिता की दृष्टि से बी बी सी की सर्वश्रेष्ठ साइट है।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

. प्रश्न 22 फिचर लेखन/आलेख :–

## आतंकवाद

वाद विचार को कहते है दूसरो को आंतकित करने का विचार ही आतंकवाद है वैसे आतंकवाद को विचार कहना ही ठीक नहीं है। किसी भी विचारधारा में दूसरो को सताने की बात मान नही है। आतंकवाद एक विश्वव्यापी समस्या है कुछ लोग बिना किसी कारण के दूसरो को डराना धमकाना सताना और हत्या करना जैसे अमानवीय कार्य करते है आज आतंकवाद का जन्म इस्लामिक उग्रवाद से हुआ है। लादेन आतंकवाद का जन्मदाता एवं संगठनकर्ता रहा है अमेरिका, भारत, पाकिस्तान, रूस, नेपाल आदि में आतंकवादी घटनाएँ हो चुकी है आतंकवाद मानवता के लिए खतरा है भारत के कुछ पथभ्रष्ट युवक भी विदेशी इशारे पर अपने ही देश में आतंक फैला रहे है कुछ राजनेता अपनी स्वार्थ सिध्दी के लिए आतंकवाद को सरक्षंण दे रहे है आतंकवाद का दमन कठोरता से करना जरूरी है।

## रोजगारोन्मुखी शिक्षा की आवश्यकता

शिक्षा मानव जीवन के लिए आवश्यक है। बच्चों को कैसी शिक्षा दी जाय यह प्रश्न बहुत समय से लोगों के सामने रहा है। प्राचीन काल में भारत में शिक्षा का उद्देश्य आत्मसाक्षात्कार माना जाता था। वही शिक्षा उत्तम समझी जाती थी जो व्यक्ति को आत्मा से परिचित करा सके। वर्तमान में शिक्षा का उद्देश्य बदल चुका है। आज मनुष्य का ध्यान न आत्मा के विकास की और है और न परमात्मा के साक्षात्कार की और है न ही चरित्र निर्माण की ओर। आज तो ऐसी शिक्षा अच्छी समझी जाती है जो धनोपार्जन में मदद कर सके येनकेन प्रकारेण धन कमाना ही जीवन का लक्ष्य बन चुका है। आज व्यावसायिक शिक्षा की आवश्यकता है। आज लोगों को ऐसी शिक्षा चाहिए जो कोई रोजगार सीखा सके रोजगार शिक्षा के लिए अनेक शिक्षण संस्थाएँ खुल चुकी है। इनके संचालक लूट मचाए हुए है।इनमें प्रवेश पाने वालो की भीड़ इनके दरवाजो पर लगी रहती है। समाज में लोगों की आवश्यकताएँ बढ़ रही है।

**.प्रश्न 23 भाषा किसे कहते है?**

**उत्तर–** विचार विनिमय के मौखिक एवं लिखित माध्यम को भाषा कहते है।

**प्रश्न 24 हिन्दी भाषा की कौनसी लिपि है?**

**उत्तर–** हिन्दी भाषा की देवनागरी लिपि है।

**प्रश्न 25 लिपि किसे कहते है?**

**उत्तर–** भाषा को लिखने के लिए जिन ध्वनि–चिन्हों या लेखन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उसे लिपि कहते है।

**प्रश्न 26 भाषा की कितनी इकाइयाँ होती है?**

**उत्तर–** पांच इकाइयाँ– ध्वनि, वर्ण, शब्द, पद, वाक्य।

**प्रश्न 27 भाषा और बोली में क्या अन्तर है?**

**उत्तर–** सीमित क्षेत्र में बोली जाने वाली कम विकसित बोलचाल की भाषा बोली कही जाती है तथा व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है उसे भाषा कहते है।

**.प्रश्न 28 भारत की प्राचीन लिपियाँ कौन–कौनसी थी?**

**उत्तर–** ब्राह्मी और खरोष्ठी

**.प्रश्न 29 भाषा की सबसे छोटी इकाई है–**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(अ) वर्ण (ब) शब्द (स) पद (द) वाक्य **(अ)**

**.प्रश्न 30 भाषा के चिन्हों को प्रकट करने का माध्यम है–**

(अ) ध्वनि (ब) लिपि (स) व्याकरण (द) वाक्य **(ब)**

**प्रश्न 31रिक्त स्थान की पूर्ति करजिए–**

(i) हमारे मुँह से निकलने वाली प्रत्येक स्वतंत्र आवाज **ध्वनि** कहलाती है। (भाषा/ध्वनि)

(ii) हिन्दी **देवनागरी** लिपि में लिखी जाती है। (देवनागरी/खरोष्ठी)

**प्रश्न 32 व्याकरण किसे कहते है?**

**उत्तर–** जिसके द्वारा भाषा को शुद्ध बोलने और लिखने का ज्ञान होता है, व्याकरण कहते है।

**प्रश्न 33 ध्वनि किसे कहते है?**

**उत्तर–** मुख से निकलने वाली वाग्यन्त्र से उच्चरित प्रत्येक स्वतंत्र आवाज को ध्वनि कहते है।

**प्रश्न 34भाषा के कौनसे दो रूप है?**

**उत्तर–** (1) मौखिक भाषा (2) लिखित भाषा

**प्रश्न 35शब्द शक्ति की परिभाषा लिखिए?**

**उत्तर–**शब्द के अर्थ को जिस माध्यम से ग्रहण किया जाता है, वह माध्यम शब्द शक्ति कहलाता है।

**प्रश्न 36 शब्द शक्ति कितने प्रकार की होती है? नाम लिखिए**

**उत्तर–**तीन प्रकार की होती है–

(1) अभिधा शब्द शक्ति

(2) व्यंजना शब्द शक्ति

(3) लक्षणा शब्द शक्ति

**प्रश्न 37 अभिधा शब्द शक्ति को उदाहरण सहित समझाइये?**

**उत्तर–** वाक्यार्थ (मुख्यार्थ) का बोध कराने वाली शक्ति को अभिधा शब्द शक्ति कहा जाता है। अभिधा का संबंध शब्द का एक ही अर्थ ग्रहण करने से है।

**उदाहरण–** (1) किसान फसल काट रहा है।

(2) बिल्ली भाग रही है।

(3) राजस्थान की राजधानी जयपुर है।

**प्रश्न 38 व्यंजना शब्द शक्ति को उदाहरण सहित समझाइये?**

**उत्तर–**जब वाक्यार्थ (मुख्यार्थ) लक्ष्यार्थ (लक्ष्य) और संकेतिक अर्थ के पश्चात् जब किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति होती है, उसे व्यंग्यार्थ कहते है। जिस शब्द शक्ति से व्यंग्यार्थ का बोध होता है उसे व्यंजना शब्द शक्ति कहते है।

**उदाहरण–**(1) उसने कहा– "संध्या हो गई"।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(2) दस बज गए।

**.प्रश्न 39 लक्षणा शब्द शक्ति को सोदाहरण समझाइये?**

**उत्तर–** जब शब्द के शब्दार्थ (वाक्यार्थ) का अतिक्रमण कर लक्षणों के आधार पर किसी दूसरे अर्थ को ग्रहण किया जाता है, तब उसे लक्ष्यार्थ कहते है। व लक्ष्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति को लक्षणा शब्द शक्ति कहा जाता है।

**उदाहरण–**(1) वहाँ लाठियाँ चल रही है।

(2) कश्मीर रक्त में डूबा हुआ है।

**.प्रश्न 40 निविदाएं कितने प्रकार की होती है?**

**उत्तर–** निविदाएं दो प्रकार की होती है:–

(1)सीमित निविदा।

(2) खुली निविदा।

**.प्रश्न 41 ज्ञापन किसे कहते है?**

**उत्तर–** शासकीय पत्र व्यवहार में जब किसी सक्षम अधिकारी द्वारा समकक्ष या अधीनस्थ कर्मचारियों अथवा कर्मचारियों को सामान्य सूचना, संदेश आदि देने के लिए जो पत्र लिखा जाता है उसे कार्यालय ज्ञापन कहते है।

**.प्रश्न 42 अधिसूचना किसे कहते है?**

**उत्तर–**केन्द्र तथा राज्य सरकार जब सरकारी आदेशों को आम जनता हेतु प्रसारित करती है तो इन सूचनाओं को वैधानिक दृष्टि से अधिसूचना कहा जाता है।

## अलंकार

**प्रश्न 43. कागा काको धन हरै, कोयल काको देय।**

**मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेय।।**

**इसमें कौन–सा अलंकार है? उसकी परिभाषा भी लिखिए।**

उत्तर– इसमें अनुप्रास अलंकार है, क्योंकि इसमें 'क' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

**परिभाषा–** जहाँ एक या अनेक वर्ण आवृति होती है, अर्थात् किसी वर्ण का एकाधिक बार क्रमानुसार प्रयोग होता है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

**प्रश्न 44. 'मैं स्नेह–सुरा का पान किया करता हूँ।'**

**इस पंक्ति में कौन–सा अलंकार है? लक्षण भी लिखिए।**

उत्तर– इस पंक्ति में रूपक अलंकार है, क्योंकि इसमें स्नेह पर सुरा का आरोप किया गया है।

**लक्षण–** जहाँ उपमेय पर उपमान का अभेदात्मक आरोप किया जावे, अर्थात् दोनों को एक ही मान लिया जावे, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

**प्रश्न 45. "हँसने लगे तब हरि अहा! पूर्णेन्दु–सा मुख खिल गया।"**

**इसमें कौनसा अलंकार है? लक्षण लिखिए।**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर– इसमें उपमा अलंकार है।

**लक्षण–** जहाँ उपमेय को किसी गुण, धर्म आदि के आधार पर उपमान के समान बताया जावे, वहाँ उपमा अलंकार होता है। यहाँ पर उपमेय 'मुख' को उपमान चन्द्रमा के समान बताया है।

**प्रश्न 46 सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात।**

**मनहुँ नीलमनि सैल पर, आतप पर्‌यौ प्रभात।।**

**इसमें कौन–सा अलंकार है और क्यों?**

उत्तर– इसमें उत्प्रेक्षा अलंकार है। जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जावे, अर्थात् उपमान का सम्भावनात्मक वर्णन हो, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है और 'मनहुँ' उत्प्रेक्षावाचक शब्द का प्रयोग किया है।

**प्रश्न 47. यमक और श्लेष अलंकारों का अन्तर सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर– यमक अलंकार में शब्द या शब्दों की उसी क्रम में आवृत्ति होती है। जैसे– "कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।" इसमें 'कनक' शब्द की आवृत्ति भिन्न अर्थ में हुई है।

श्लेष अलंकार में शब्द एक बार ही आता है, परन्तु उसके दो–तीन अर्थ निकलते हैं; जैसे– "पानी गये न ऊबरे मोती मानुष चून।" इसमें 'पानी' शब्द का मोती के साथ चमक, मनुष्य के साथ इज्जत और चून के साथ जल अर्थ है। अतः अनेकार्थ शब्द के प्रयोग से श्लेष अलंकार होता है।

**अन्तर–** यमक में शब्द या शब्दों की आवृत्ति होती है, जबकि श्लेष में शब्द एक ही रहता है तथा उसके अनेक अर्थ निकलते हैं।

**48. परिभाषिक शब्दावली :–**

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Apology | क्षमायाचना |
| 2 | Adhoc | तदर्थ |
| 3 | Administration | प्रशासन |
| 4 | Allowance | भत्ता |
| 5 | Ability | योग्यता |
| 6 | Abalation | उन्मूलन / समाप्ति |
| 7 | Absence | अनुपस्थित |
| 8 | Act | अधिनियम |
| 9 | Affidavit | शपथ पत्र |
| 10 | Agreement | अनुबन्ध |
| 11 | Appointment | नियुक्ति |
| 12 | Backlog | पिछला बकाया |
| 13 | Bill | विधेयक |
| 14 | Brief | संक्षिप्त, पक्षकार |
| 15 | Balance | शेष |
| 16 | Bribe | घूस / रिश्वत |
| 17 | Business | व्यवसाय |



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

| | | |
|---|---|---|
| 18 | Ballot | मतपत्र |
| 19 | Cabinet | मंत्रिमण्डल |
| 20 | Currency | मुद्रा |
| 21 | Census | जनगणना |
| 22 | Chairman | अध्यक्ष |
| 23 | Corruption | भ्रष्टाचार |
| 24 | Cashmemo | नगद-पत्र |
| 25 | Commission | आयोग |
| 26 | Demonstration | प्रदर्शन |
| 27 | Deed | विलेख |
| 28 | Dialogue | संवाद |
| 29 | Data | आँकडे |
| 30 | Deposit | जमा |
| 31 | Deputation | प्रतिनियुक्ति |
| 32 | Entry | प्रविष्टि |
| 33 | Economy | अर्थव्यवस्था |
| 34 | Enquiry | जांच, पूछताछ |
| 35 | Evaluation | मूल्यांकन |
| 36 | Editing | सम्पादन |
| 37 | Eligibility | पात्रता |
| 38 | Explusion | व्याख्यात्मक |
| 39 | Fare | किराया |
| 40 | Fake | नकली |
| 41 | Financial | वित्तीय |
| 42 | Face value | अंकित मूल्य |
| 43 | Gazetted | राजपत्रित |
| 44 | Grant | अनुदान |
| 45 | Hast | आतिथेय / परितोषी |
| 46 | Honorary | अवैतनिक |
| 47 | Identity | पहचान |
| 48 | Inspection | निरीक्षण |
| 49 | Illegal | अवैध |
| 50 | Judgement | निर्णय |
| 51 | Justice | न्याय |
| 52 | Logo | प्रतीक चिन्ह |
| 53 | Ledger | खाता |
| 54 | Layout | पट्टा |
| 55 | Manager | प्रबंधक |

CBEO BHINDER



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

| | | |
|---|---|---|
| 56 | Mob | भीड़ |
| 57 | Memo | ज्ञापन |
| 58 | Nation | राष्ट्र |
| 59 | Native | मूल निवासी |
| 60 | Nutrition | पालन–पोषण |
| 61 | Nomination | नामांकन |
| 62 | Occupation | व्यवसाय |
| 63 | Post pone | स्थगित करना |
| 64 | Pact | समझौता |
| 65 | Provisional | अस्थायी, अंतिम |
| 66 | Quit | छोड़ना |
| 67 | Rescue | बचाव |
| 68 | Random | यादृच्छिक |
| 69 | Salary | वेतन |
| 70 | Seminar | संगोष्ठी |
| 71 | Tally | मिलान करना |
| 72 | Verification | सत्यापन |
| 73 | Zerohour | शून्यकाल |

**.प्रश्न 49 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–**

**गद्यांश (1)**

**अंधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करूण सिसकियों और आहों को बलपूर्व अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टुटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता है तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में हीं शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे।**

**प्रसंगः–** लेखक हैजे की महामारी से पीडित गाँव की एक ठंडी अंधेरों को डराने वाली रातों का वर्णन कर रहा है

**व्याख्या :–** जाड़े के दिन चल रहे थे। गाँव पर अमावस्या की ठंडी और काली रात छाई हुई थी। गाँव में मलेरिया और हैजे की बिमारियाँ फैली हुई थी। बिमारियों से भयभीत लोग, एक डरे हुए बच्चे की भाँति घर–घर काँप रहे थे। गाँव में पुरानी और खाली घास–फूँस की झोपड़ियाँ थी। उसमें घोर अंधकार और सन्नाटा छाया हुआ था। कही से कोई आवाज सुनाई नहीं पड़ रही थी। घोर सन्नाटा पीड़ित ग्रामवासियों की करूणा भरी सिसकियों और दुख भरी कराहों को बाहर प्रकट नहीं होने देना चाह रहा था। अमावस्या की उस काली–काली रात में तारे चम–चमा रहे थे। धरती पर प्रकाश की एक किरण भी नजर नहीं आ रही थी। जब कोई तारा टूटकर धरती की ओर आता था तो लगता था ग्रामवासियों की घोर पीड़ा से व्याकुल होकर वह उन्हे सांत्वना देने आ रहा था। लेकिन उसकी ग्रीव चमक धरती तक पहुँचने से पहले ही अदृश्य हो जाता थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता को देख जैसे हँस रहे थे।

**विशेषः–**(1) जाड़े की ठंडी रात का यथार्थ शब्द–चित्र अंकित हुआ है।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(2) प्रकृति को मानवीय संवदेनाओं से प्रभावित दिखाया गया है।
(3) भाषा साहित्यिक है।
(4) शैली शब्द चित्रात्मक है।

## गद्यांश (2)

**रात्रि की विभीषिका को सिर्फ पहलवान की ढ़ोलक ही ललकार कर चुनौती देती रहती थी। पहलवान संध्या से सुबह तक चाहे जिस ख्याल से ढ़ोलक बजाता हो, किन्तु गाँव के अर्द्धमृत, औषधि उपचार पथ्य विहिन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी। बुढ़े, बच्चे, जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था। स्पंदन शक्ति शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी।**

**प्रसंग :–** इस अंश में लेखक रात्रि होने पर गाँव की डरावनी दशा का वर्णन कर रहा है। सुरज डूबते ही लोग अपनी झोपड़ियों में घुस जाते थे। सारे गाँव को चुप्पी घेर लेती थी। लोगों की बोली भी नहीं निकलती थी। उस सन्नाटे भरी रात में लोगों का एक ही सहारा था। पहलवान की ढ़ोलक से निकली ध्वनि ही उन्हे जिन्दा रखती थी। उस ढ़ोलक की ध्वनि में एक ललकार थी, मृत्यु को एक चुनौती थी।

**व्याख्या:–** लुट्टन शाम से सुबह तक ढ़ोलक बजाता रहता था। उसका ढ़ोलक बजाने के पीछे जो भी भाव रहा हो लेकिन ढ़ोलक की वह ध्वनि गाँव के बुढ़े, बच्चे और नौजवान, अधमरे, दवाई–इलाज और पथ्य से रहित प्राणियों में वह जीवन भर देती थी। उस ध्वनि को सुनकर गाँव के बुढ़े, बच्चे, नौजवान लोगों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का वही दृश्य नाचने लगता था। उनकी सुन्न पड़ गई नाड़ियों में बिजली सी दौड़ने लगती थी।

**विशेष:–** (1) हृदय को विचलित कर देने वाले दृश्यों का सजीव चित्रण हुआ है।
(2) भाषा साहित्यिक है और भाव संप्रेषण में पूर्ण समर्थ है।
(3) शैली शब्द चित्रात्मक है।

## गद्यांश (3)

**मेरे पास वहाँ जाकर रहने के लिए रूपया नहीं है, यह मैने भक्तिन के प्रस्ताव को अवकाश न देने के लिए कहा था पर उसके परिणाम ने मुझे विस्मित कर दिया। भक्तिन के परम रहस्य का उद्‌घाटन करने की मुद्रिका बनाकर और पोपला मुँह मेरे कान के पास लाकर हौले–हौले बताया कि उसके पास रूपये थे जिन्हे उसने जमीन में गढ़ा रखा है। उसी से वह एक प्रबन्ध कर लेगी। जब सब ठीक हो जाएगा तब यही लौट आयेगी। भक्तिन की कंजूसी के प्राण पूँजीभूत होते होते पर्वताकार बन चुके थे परन्तु इस उदारता के डाइनामाइट ने क्षणभर में उन्हें उड़ा दिया इतने थोडे रूपये का कोई महत्व नही परन्तु रूपये के प्रति भक्तिन का अनुराग इतना प्रख्यात हो चुका है कि मेरे लिए उसका परित्याग महत्व की सीमा तक पहुचाँ देता है।**

**उत्तर** – सन्दर्भ–प्रस्तुत गद्यांश पाठयपुस्तक आरोह भाग –2 में संकलित पाठ भक्तिन से लिया गया है इसकी लेखिका महादेवी वर्मा है।

**प्रसंग** – लेखिका ने इस अंश में महा कंजूस भक्तिन के त्याग भाव का परिचय कराने वाली एक घटना का वर्णन किया है।

**व्याख्या–** जब युध्द के भय से लोग इधर उधर पलायन कर रहे थे तब एक दिन भक्तिन ने महादेवी के सामने उसके गाँव चलकर रहने का प्रस्ताव किया तब महादेवी ने उसके प्रस्ताव को टालने के लिए कहा कि उसके पास गाँव जाकर रहने के लिए रूपये नही थे यह सुनकर भक्तिन ने जो कहा उसे सुनकर वह चकित हो गई।घर के सभी लोग मानते थे कि भक्तिन रूपये–पैसे के मामले में बहुत ही कंजूस थी कोई सपने में भी सोच नही सकता था कि भक्तिन बडे परिश्रम से जोडे गए धन को अपने से अलग कर सकती थी। भक्तिन ने महादेवी के पास आकर इस प्रकार बात आंरम्भ की जैसे वह कोई बड़ी रहस्य की बात बताने जा रही थी



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उसने अपने पोपले मुँह को महादेवी के कान के पास लाकर बडी धीमी आवाज में बताया था उसके पास रूपये थे जिन्हे उसने कहा कि लड़ाई कोई सदा तो चलती नही रहेगी लडाई समाप्त हो जाने पर वह महादेवी जी के साथ फिर उनके घर आ जाएगी भक्तिन की कंजूसी के किस्से पर्वत जैसे विशाल हो चुके थे परन्तु उसकी उस उदारता रूपी डाइनामाइट एक प्रबल विस्फोटक पदार्थ के विस्फोट से वे क्षणभर मे चूर–चूर हो गए एक महाकंजूस व्यक्ति का किसी की सहायता में अपनी सारी बचत लगा देने का संकल्प बहुत आश्चर्यजनक की बात थी भक्तिन की सारी पूँजी की मात्रा का उतना महत्व नही था वह बहुत कम थी लेकिन महादेवी जी के लिये उसका त्याग बता रहा था किउसके जीवन में अपनी मालकिन का कितना भारी महत्व था वह महादेवी जी के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सकती थी।

**विशेष** – भक्तिन के स्वभाव में दुर्गुणों के होते हुए भी महादेवी ने उसके त्याग और स्वामीभक्ति की पूरी पूरी प्रशंसा की, भाषा व्यावहारिक है। पर्वत और डाइनामाइट जैसी उपमाओं के द्वारा शैली में आलंकारिता भी उपस्थित है।

## गद्यांश (4)

**भक्तिन और मेरे बीच में सेवक स्वामी का संबध है यह कहना कठिन है क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नही हो सकता जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नही सुना गया जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है जितना अपने घर में बारी बारी से आने जाने वाले अँधेरे उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते है जिस सार्थकता से देने के लिए ही सुख–दुख है उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए ही मेरे जीवन को घेरे है।**

**उत्तर – सन्दर्भ** –प्रस्तुत गद्यांश पाठयपुस्तक आरोह भाग –2 में संकलित पाठ भक्तिन से लिया गया है इस की लेखिका महादेवी वर्मा है।

**प्रसंग**– इस अंश में महादेवी बता रही है कि उनका और भक्तिन का संबध सेविका और स्वामिनी का संबध नही कहा जा सकता ।

**व्याख्या** –महादेवी कहती है कि भक्तिन केवल कहने भर के लिए उनकी सेविका थी उसने उनके घर में एक सहेली और अभिभाविका जैसा स्थान बना रखा था स्वामी तो वही होता है जिसक आज्ञा का पालन सेवक को करना ही होता है यदि वह सेवक को अपनी सेवा से चाह कर भी न हटा सके तो वह स्वामी कैसे कहा जाएगा ? इसी प्रकार जो सेवक स्वामी द्वारा नौकरी छोड़कर चले जाने का आदेश पाकर भी उस पर ध्यान न दे और हँसता रहे उसे सेवक कैसे कहा जा सकता है ? महादेवी कहती है कि घर के आँगन में बारी बारी से रात का अंधेरा और दिन का उजाला आता रहता है, क्या इनको हम अपना सेवक कह सकते है यद्यपि ये निरन्तर हमें अपनी सेवाएँ दिया करते है इसी प्रकार आँगन में लगे हुए गुलाब और आम भी अपनी सुगंध और स्वाद से हमारे मन को प्रसन्न किया करते है वे भी हमारे सेवक नही होते। भक्तिन भी इसी प्रकार उनकी सेविका नही कही जा सकती। अंधेरे उजाले का और गुलाब तथा आम का अपना एक विशेष अस्तित्व होता है। एक विशेष संबंध होता है। इसी संबंध को प्रमाणित करने के लिये वे हमें समय समय पर सुख–दुख का अनुभव कराते रहते है महादेवी कहती है कि इसी प्रकार भक्तिन का भी उनके जीवन में एक विशेष स्थान था एक स्वतंत्र व्यक्ति के प्रमाण के रूप में वह उनके पूरे जीवन में व्याप्त थी।

**विशेष**– महादेवी जी ने माना है कि उनका भक्तिन से जो संबध था उसे कोई निश्चित नाम दे पाना कठिन था भाषा सरल है। शैली में लक्षण और व्यजंना शक्ति की प्रधानता काव्य को रोचक बना रही है।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

## गद्यांश(5)

. बाजार आमन्त्रित करता है कि आओं मुझे लूटो और लूटो । सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसक लिए हैं? मैं तुम्हारे लिए हूँ । नहीं कुछ चाहते हो, तो भरी देखने में क्या हरज है। अजी आओ भी। इस आमान्त्रण में यह खूबी है कि आग्रह नहीं है आग्रह तिरस्कार जगाता हैं। लेकिन उॅचे बाजार का आमन्त्रण मूक होता है और उससे चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाजार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफी नहीं है और चाहिए, और चाहिए। मेर यहॉ कितना परिमित है और यहॉ किता अतुलित है ओह !

**प्रसंग–** प्रस्तुत गद्यांश जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित निबन्ध 'बाजार दर्शन' से लिया गया है। इसमें लेखक ने बाजार की आकर्षित करने वाली प्रवृति को बताया है।

**व्याख्या–** लेखक बताते हैं कि बाजार तो आमन्त्रित ही करता है अर्थात अपने लुभावने अंदाज से बुलाता ही है। कहता है कि लूटो, मुझे और लूटा। सब कुछ भूल कर मुझे देखो मेरा रूप, मेरा आकर्षणबस तुम्हारे लिए है। कुछ नहीं खरीदना है तो भी देखने में क्या नुकसान है, आओ और देखो। बाजार के इस तरह के आमंत्रण में आग्रह नहीं, आकर्षण है। आग्रह कर–करके बुलाने में हम स्वयं नही जाते हैं कि लेकिन जो मूक रह कर, शब्उविहीन इशारों से बुलाता है वह होता हैं रंगीन बाजार, उसे देखने की लालसा जागती है। लालसा का अर्थ अभाव का होना है। और यही अभाव व्यक्ति को बाजार के आकर्षण में बॉध देता हैं। इन्ही आकर्षण के बीच खड़े होकर, विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को देख कर आदमी को हीनता घेर लेती है। उसे लगने लगता है कि उसके पास कुछ नहींहै, और चाहिए, और चाहिए। मेरे पास कितना कम है और इस बाजार में कितना कुछ अधिक है, अथाह है। ओह! और यही ओह! डसे अधिक खरीदने को विवश करती है, ललचाती है, निरर्थकता को बढ़ावा देती है।

**विशेष–** (1) लेखक ने बाजार की लुभावनी, आकर्षित करने वाली प्रवृति पर प्रकाश डाला है।

(2) भाषा खड़ी बोली हिन्दी तथा उर्दू मिश्रित है।

## गद्यांश(6)

. **बाजार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जा जानता है कि व क्या चाहता है। जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति–श्शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकत हैं, न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर मे सद्भाव की घटी।**

**प्रसंग–** प्रस्तुत गद्यांश जैनेन्द्र कुमार द्वारा लिखित निबन्ध 'बाजार दर्शन से लिया गया है। लेखक ने उन लोगों पर व्यंग्य किया है जो अर्थ का गलत उपयोग करके बाजार में कपटीपन को बढ़ावा देते हैं। और सद्भाव को घटाते हैं।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**व्याख्या–** लेखक कहते हैं कि बाजार को सार्थकता अर्थात सही मायनें में सही अर्थ वही व्यक्ति देता है जो यह जानता है कि वह क्या चाहता है? उसे क्या खरीदना है? किस प्रकार उसके पैसे का सही उपयोग हो? जो व्यक्ति यह बात नहीं जानते हैं कि वे क्या–क्या चाहते? वे केवल अपनी क्रय शक्ति के अभिमान में अपने पैसे से केवल बाजार को एक विनाशकारी शक्ति एवं शैतानी शक्ति तथा व्यंग्य शक्ति ही बाजार को देते है। कहने के आशय है कि अपने पैसे द्वारा बाजार में होड़ की प्रवृति, पैसे का नाश की प्रवृति, दूसरों द्वारा व्यंग्य करने की शक्ति ही वह बाजार को उे जाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि वे लोग बाजार में बाजारूपन अर्थात व्यवहार का हल्कापन बढ़ाते है। यह हल्कापन व्यवहार में कपट का बढ़ना, धोखा देना,कीमत से ज्यादा मूल्य, घटिया सामान देना इस तरह की प्रवृति अतिरिक्त पैसा ही बाजार को सिखाता है। इस प्रकार कपट का बढ़ता प्रसार का अर्थ होता है सद्भावों में कमी आना । सद्भाव अर्थात अच्छे गुणों की कमी। इसकी कमी से समाज की संस्कृति का हास होता है और इसका प्रत्यक्ष कारण बाजार में बिना उद्देश्य पैसे की अनुचित क्रय शक्ति का दिखावा ही है।

**विशेष–** (1) लेखक ने क्रय शक्ति के अनुचित प्रयोग के परिणामों पर प्रकाश डाला है।

(2) हिन्दी खड़ी बोली का प्रयोग एवं व्याख्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

**प्रश्न 50 . निम्नलिखित पद्यांशों की संप्रसंग व्याख्या कीजिए–**

**पद्यांश (1)**

**(कैमरा**
**बस करो**
**नहीं हुआ**
**रहने दो**
**परदे पर वक्त की कीमत है।)**
**अब मुस्कराएँगे हम**
**आप देख रहे थे सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम**
**(बस थोडी ही कसर रह गई)**
**धन्यवाद।**

**प्रसंगः–** प्रस्तुत काव्यांश कवि रघुवीर सहाय द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'लोग भूल गए है' की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' से लिया गया है जिसमें कवि ने मीडिया की दोहरी काव्य–नीति पर व्यंग्य किया है।

**व्याख्या :–** कवि बताते है कि जब कार्यक्रम संचालक दर्शकों को रूलाने की चेष्टा में सफल नहीं होता है तो तब वह कैमरामेन को कैमरा बन्द करने का आदेश देते हुए कहता है कि अब बस करो यदि अपाहिज का दर्द पूरी तरह प्रकट न हो सका तो न सही। परदे का एक–एक क्षण कीमती होता है। समय और धन व्यय का ध्यान रखना पडता है। आशय है कि कार्यक्रम को दूरदर्शन पर प्रसारित में काफी समय एवं धन का व्यय होता है इसीलिए अपाहिज के चेहरे से कैमरा हटवाकर संचालक दर्शकों को संबोधित कर कहता है कि अभी आपने सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति हेतु दिखाया गया कार्यक्रम प्रत्यक्ष देखा। इसका उद्देश्य अपाहिजों के दुःख–दर्द को पुरी तरह सम्प्रेषित करना था (परन्तु इसमें थोडी से कमी रह गई अर्थात् अपाहिज के रोने का



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

दृश्य नहीं आ सका तथा दर्शक भी नहीं रो पाये। अगर दोनो एक साथ रो देते तो कार्यक्रम सफल हो जाता, ऐसे वह नहीं बोलता है अन्त में कार्यक्रम संचालक दर्शकों को धन्यवाद देता है यह धन्यवाद मानो उसके संवेदनाहीन व्यवहार पर व्यंग्य है।

**विशेषः–** (1) कवि कार्यक्रम संचालन के कार्य एवं उद्देश्य पर सीधे व्यंग्य करते है कि कार्य अपाहिज की सहायता या संवेदना व्यक्त करना नहीं था वरन् अपना कार्यक्रम सफल बनाना था।
(2) भाषा सरल–सहज व सम्प्रेषणीय है।

## पद्यांश (2)

**फिर हम परदे पर दिखलाएँगे**
**फूली हुई आँख की एक बड़ी तस्वीर**
**बहुत बड़ी तस्वीर**
**और उसके होंठो पर एक कसमसाहट भी**
**(आशा है आप उसे उसकी अंपगता की पीड़ा मानेंगे)**
**एक और कोशिश**
**दर्शक**
**धीरज रखिए**
**देखिए**
**हमे दोनो एक संग रूलाने है**
**आप और वह दोनो**

**प्रसंगः–** प्रस्तुत काव्यांश कवि रघुवीर सहाय द्वारा लिखित काव्य संग्रह 'लोग भूल गए है' की कविता 'कैमरे में बंद अपाहिज' से लिया गया है जिसमें कवि ने मीडिया पर व्यंग्य किया है कि अपने कार्यक्रम को सफल एवं लाकेप्रिय बनाने हेतु वे किस प्रकार अपाहिज व दर्शक दोनो को रूलाना चाहते है।

**व्याख्याः–** दूरदर्शन कार्यक्रम संचालक का यह प्रयास रहता है कि उसके बेहूदे प्रश्नों से अपाहिज रोवे और वह उससे संबधित दृश्य का प्रसारण करे। इसलिए वह अपाहिज की सूजी हुई आँखे बहुत बड़ी करके दिखाता है। इस प्रकार वह उसके दुःख–दर्द को बहुत बड़ा करके दिखाना चाहता है। वह अपाहिज के होठों की बेचैनी एवं लाचारी भी दिखाता है। संचालक कार्यक्रम को रोचक बनाने के प्रयास में सोचता है कि अपाहिज की बेचैनी को देखकर दर्शकों को उसकी अनुभूति हो जायेगी। इसलिए वह कोशिश करता है कि अपाहिज के दुःख–दर्द को इस तरह दिखावे कि उससे अपाहिज के साथ दर्शक भी रोने लगे। उस समय दर्शक केवल अपाहिज को देखे और धैर्यपूर्वक उसके दर्द को आत्मसात् कर सके।

**विशेषः–** (1) कवि ने मीडिया की व्यापार वृत्ति पर व्यंग्य किया है कि किस प्रकार वे उसकी विकलांगता एवं दर्शकों की सहानुभूति को भुनाते है।

(2) भाषा सरल–सहज है, व्यंग्यात्मक पूर्ण भाषा एवं प्रवाहमयता है।

## पद्यांश (3)

**जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है**
**जितना भी उँडेलता हूँ, भर–भर फिर आता है**
**दिल में क्या झरना है?**
**मीठे पानी का सोता है**
**भीतर वह, ऊपर तुम**
**मुसकाता चाँद ज्यों धरती पर रात–भर**
**मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है!**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**सन्दर्भ व सप्रसंगः**–प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'आरोह' में संकलित कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की कविता 'सहर्ष स्वीकारा है' से लिया गया है। इस अंश में कवि अपनी प्रिया के प्रति प्रेम को व्यक्त कर रहा है।
**व्याख्याः**–कवि अपनी प्रियतम को अत्यन्त चाहता है वह यह समझने में असमर्थ है कि उन दोनो के बीच यह कैसा संबंध है। वह कौनसा रिश्ता है जिसने उसको प्रियतम से एकता की डोर से बांध दिया है? कवि के मन में अपने प्रियतम के प्रति जो अपार स्नेह भरा है ,उसे वह बार–बार प्रकट करता है। वह जितनी बार स्नेह उडेलता है, उतनी ही बार वह पुनः भर जाता है। कवि को ऐसा लग रहा है कि जैसे उसके हृदय में प्रेम को कोई झरना झर रहा है या स्नेह के मीठे जल का कोई स्त्रोत बह रहा है। प्रिय का खिला हुआ मुख कवि के ऊपर सदा इस तरह छाया रहता है जिस प्रकार पुर्णिमा का चन्द्रमा रातभर पृथ्वी के ऊपर अपनी चाँदनी की छटा बिखेरता रहता है।
**विशेष :**–(1) भाषा सरल, सहज प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली युक्त है।
(2) तत्सम तद्भव तथा देशज शब्दों का प्रयोग।
(3) अनुप्रास,रूपक तथा पुनरूक्ति प्रकाश अंलकारों का प्रयोग।
(4) मुक्त छंद का प्रयोग।

## पद्यांश (4)

**मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,**
**उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,**
**जो मुझकों बाहर हंसा, रूलाती भीतर,**
**मैं हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ।**

**उत्तर– सन्दर्भ तथा प्रसंग** प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि हरिवंशराय 'बच्चन' की कविता 'आत्म'– परिचय से लिया गया है। कवि इस अंश में अपनी परस्पर विरोधी मनोभावनाओं को व्यक्त कर रहा है।

**व्याख्या-** कवि कहता है कि वह युवावस्था के उत्साह से भरा हुआ है। उत्साह की अधिकता ने उसको पागल सा बना दिया है। वह समस्त विश्व को प्रेम की शिक्षा देना चाहता है परन्तु अपने प्रयत्न से सफलता मिलती न देखकर उसका मन निराशा और कष्ट से भर उठता है। उसके मन में किसी अज्ञात प्रेमी (ईश्वर) की याद छिपी हुई है। इस याद के सहारे उसका जीवन बीत रहा है। इस प्रेम को सहेजकर वह ऊपर से हँसता है परन्तु अन्दर ही अन्दर मन रोता रहता है।

**विशेष**–कवि ने इस अंश में अपने मन के विचित्र अन्तर्द्वन्द्व को व्यक्त किया है। बाहर से हँसना और भीतर से रोना तथा किसी अज्ञात की यादों में खोना, इस अंश में छायावाद और रहस्यवाद की झलक दिख रही है।

## पद्यांश (5)

**हो जाए न पथ में रात कहीं,**
**मजिंल भी तो है दूर नहीं–**
**यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी–जल्दी चलता है।**
**दिन जल्दी–जल्दी ढलता है।**

**उत्तर– संदर्भ तथा प्रसंग–** प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक मे संकलित कवि हरिवंशराय 'बच्चन' की कविता दिन जल्दी–जल्दी ढलता है' से अवतरित है। इस अंश में कवि ने संकेत किया है कि उसकी जीवन यात्रा रूपी दिन ढलने वाला है।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**व्याख्या**–कवि कहता है कि वह दिनरूपी यात्रा में यद्यपि चलते– चलते थक गया है किन्तु वह यह सोचकर जल्दी –जल्दी कदम उठा रहा है कि कहीं रास्ते में ही रात नहीं हो जाए। उसका गन्तव्य अब तक अधिक दूर नहीं हैं परन्तु उसे ऐसा लग रहा है कि दिन जल्दी ही ढलने वाला है।द्ध

**विशेष** – कवि को भय सता रहा है कि रास्ते में ही रात हो जाए और वह मंजिल तक न पहुँच पाए। मानवीकरण, रूपकातिशयोक्ति तथा पुनरूक्ति प्रकाश अंलकार प्रयुक्त हुए हैं।

## पद्यांश (6)

**आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी**
**हाथों पे झुलाती है उसे गोद-भरी**
**रह-रह के हवा में जो लोका देती है**
**गूंज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी**

**कठिन शब्दार्थ-** चाँद का टुकड़ा = बहुत प्यारा बेटा | लोका देना = उछाल-उछाल कर प्यार करना |

**प्रसंग -** प्रस्तुत काव्यांश कवि शायर 'फिराक गोरखपुरी' की रचना 'गुले-नग्मा से उद्धत 'रुबाइयाँ' से लिया गया है। 'रुबाई उर्दू और फारसी का एक छंद या लेखन शैली है। इसमें शायर ने वात्सल्य रस का चित्रण किया है, जिसमें माँ अपने नन्हें शिशु को प्यार से अपनी बाँहों में सुला रही है।

**व्याख्या -** फिराक गोरखपुरी कहते हैं कि एक माँ अपने प्यारे शिशु को गोद में लिए आँगन में खड़ी है। कभी वह उसे हाथों से झुलाने लगती है और कभी उसे हवा में उछाल-उछालकर गोद में भर लेती है। प्यार करने की इस क्रिया से बच्चा खुश होकर खिलखिलाकर हँस उठता है और आँगन में उसकी हँसी को किलकारी गूंज उठती है तथा माँ बेटा दोनों ही अतिप्रसन्न होते हैं।

**विशेष-** (1) कवि ने वात्सल्य प्रेम के द्वारा माँ बेटे की प्रसन्नता का वर्णन किया है।
(2) वात्सल्य रस है, दृश्य बिम्ब है, रुबाई छंद है।
(3) उर्दू-हिन्दी मिश्रित शब्दावली तथा 'लोका देना' देशज भाषा का प्रयोग है।

## पद्यांश (7)

**फ़ितरत का कायम है तवाजुन आलमे-हुस्नो-इश्क में भी**
**उसको उतना ही पाते हैं खुद को जितना खो ले हैं**
**आबो-ताब अश्आर न पूछो तुम भी आँखें रक्खो हो**
**ये जगमग बैतों की दमक है या हम मोती रोले हैं**

**कठिन शब्दार्थ-**फितरत = आदत , कायम = स्थापित , तवाजुन = सन्तुलन , आलमे-हुस्न-इश्क = प्रेम और सौन्दर्य का संसार, आबो-ताब अशआर = चमक-दमक के साथ, आँखें रक्खो = देखने में समर्थ ,बैत =शेर, मोती रोले = आँसू बहा लें।

**प्रसंग -** प्रस्तुत काव्यांश कवि, शायर 'फिराक गोरखपुरी' द्वारा रचित 'गजल' से लिया गया है। इसमें कवि ने विरही मन की दशा एवं प्रेम के स्वरूप पर प्रकाश डाला है।

**व्याख्या -** कवि कहता है कि प्रेम और सौन्दर्य के संसार में भी मनुष्य की आदत-स्वभाव का विशेष महत्त्व है। प्रेम-व्यवहार में भी लेन-देन का सन्तुलन बराबर बना रहता है। जो मनुष्य प्रेम में स्वयं को जितना अधिक खोता है।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अर्थात् समर्पित कर देता है, वह उतना ही अधिक प्रेम प्राप्त करता है। आशय यह है कि प्रेम पाने के लिए स्वयं को खोना भी पड़ता है।

कवि कहता है कि तुम्हें मेरी शायरी की चमक-दमक पर जाने की जरूरत नहीं है। तुम्हें अपनी आँखें खोलनी चाहिए अर्थात् ध्यान से मेरी शायरी को देखो, इनकी चमक में मेरे आँसुओं की छाया है अर्थात मेरे दुःख-दर्द व पीड़ा आँसुओं के रूप में इन शायरी में अपनी चमक सौन्दर्य बिखेर रहे हैं।

**विशेष-**(1) कवि ने प्रेम के स्वभाव एवं विरह की दशा का वर्णन किया है।

(2) उर्दू की कठिन शब्दावली का प्रयोग,आँखें रखना मुहावरे का प्रयोग तथा वियोग श्रृंगार रस है।

## पद्यांश (8)

**प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे**
**भोर का नभ**
**राख से लीपा हुआ चौका**
**(अभी गीला पड़ा है)**
**बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से**
**कि जैसे धूल गई हो**
**स्लेट पर या लाल खड़िया चाक**
**मल दी हो किसी ने**

**कठिन शब्दार्थ**-नभ = आकाश, चौका = रसोई बनाने का लिपा पुता स्थान, सिल = मसाला पीसने का पत्थर

**प्रसंग -** प्रस्तुत काव्यांश कवि शमशेर बहादुर सिंह की कविता उषा से लिया गया है। इसमें कवि ने प्रातःकालीन प्रकृति का वर्णन किया है। जब उषा (सुबह) का आगमन होता है, तब आकाश की विभिन्न छटाएँ अत्यन्त मनोहर प्रतीत होती हैं।

**व्याख्या-** प्रातः कालीन वातावरण का चित्रण करते हुए कवि कहता है कि प्रातःकाल होते ही आकाश का रंग नीले शंख के समान गहरा नीला हो गया, अर्थात् शंख की तरह नीला, निर्मल एवं मनोरम बन गया। फिर भोर हुई तो आकाश में हल्की सी लाली बिखर गई तथा आसमान के वातावरण में कुछ नमी भी दिखाई देने लगी। कवि कहता है कि उस समय आकाश ऐसा लग रहा था कि मानो राख से लीपा हुआ चौका हो जो अभी-अभी लीपने से कुछ गीला हो। आशय यह है कि भोर का दृश्य कुछ काले और लाल रंग के मिश्रण से अतीव मनोरम लगने लगा। तब कुछ क्षणों के बाद ऐसा लगने लगा कि आकाश काली सिल हो और उसे अभी-अभी केसर से धो दिया हो अथवा किसी ने काली नीली स्लेट पर लाल रंग की। खड़िया चाक मल दी हो।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अर्थात् भोर होने पर अंधेरे से ढकी आकाश काली सिल तथा स्लेट के समान लगने लगा और उस पर सूर्य की लालिमा लाल केसर एवं लाल खड़िया चाक के समान प्रतीत होने लगी। इससे प्रातःकाल का आकाशीय परिवेश अतीव सुरम्य आकर्षक बन गया।

**विशेष-**(1) कवि ने 'भोर' का चित्रण सरल, सुबोध एवं लघु आकार में किया है।

(2) भाषा तत्सम तद्भव एवं अंग्रेजी-हिन्दी मिश्रित है।

(3) उपमा, उत्प्रेक्षा अलंकारों का प्रयोग प्रस्तुत हुआ है।

## पद्यांश (9)

**नील जल में या किसी की**
**गौर झिलमिल देह**
**जैसे हिल रही हो।**
**और**
**जादू टूटता है इस उषा का अब**
**सूर्योदय हो रहा है।**

**कठिन शब्दार्थ-**गौर = गोरा , देह = शरीर ,झिलमिल = चमकता हुआ।

प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश कवि शमशेर बहादुर सिंह की कविता ' उषा ' से लिया गया है। सूर्योदय से पहले पल-पल बदलता प्रकृति का सुन्दर रूप वर्णन किया गया है।

व्याख्या - कवि सूर्योदय से पहले आकाश में पल पल परिवर्तित होते हुए सुरम्य वातावरण का चित्रण करते हुए बताता है कि प्रातः जब नीले वर्ण के आकाश में सूर्य की चमकती हुई श्वेत आभा दिखाई देने लगती है, तो ऐसा लगता है जैसे नीले जल में किसी सुन्दरी की गोरी देह झिलमिल कर रही हो, अर्थात् प्रातःकालीन नमी एवं मन्द हवा के कारण सूर्य की किरणें हिलती हुई नायिका के समान लगती है सूर्य का श्वेत बिम्ब भी हिलता-सा प्रतीत होता है। कुछ क्षण बाद जब सूर्य उदित होता है, तब उषा काल के पल-पल बदलते रंगों का अथवा प्राकृतिक परिवेश का चमत्कारी सौन्दर्य समाप्त हो जाता है, अर्थात् सूर्योदय होते ही उषा काल का रंगीन सुरम्य वातावरण चमत्कारी जादू की तरह समाप्त हो जाता है और चारों तरफ सूर्य का तेज प्रकाश फैल जाता है।

विशेष-(1) कवि ने उषाकाल के दौरान सूर्य की लाल, पीली व श्वेत आभा का सुन्दर वर्णन किया है।

(2) भाषा भावानुरूप सरल व सुबोध है। उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग हुआ है।

## पद्यांश(10)

**जन्म से ही अपने साथ लाते हैं कपास**
**पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**जब वे दौडते हैं बेसुध**
**छतों को भी नरम बनाते हुए**
**दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए**
**जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं**
**डाल की तरह लचीले वेग से अक्सर**

**प्रसंग** – प्रस्तुत काव्यांश कवि आलोक धन्वा द्वारा लिखित काव्य–संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' की कविता 'पतंग'से लिया गया है । बच्चों का कोमल व लचीला होना तथा पतंग उडाते समय किसी बात का होश न रखना का कवि ने वर्णन किया है ।

**व्याख्या–** कवि कहते हैं कि बच्चे जन्म के साथी ही अर्थात जब वे जन्म लेते हैं तभी से उनका शरीर कोमल रूई के समान हल्का होता है । उनकी कोमलता का स्पर्श करने के लिए स्वयं पृथ्वी भी उनके व्याकुल पैरों के पास आती है । जब वे बेसुध होकर आस–पास की स्थिति को जाने–बिना दौडते हैं, तब उनके पैरों के स्पर्श से कठोर छतें भी कोमल बन जाती है। उनके भागते पैरों की आवाज से प्रतीत होता हे कि चारों दिशाएँ मृदंग की भॉति मधुर संगीत निकाल रही हों । वे पतंग उडाते हुए झूले की भॉति पेंग भरते हुए, आगे–पीछे होते हुए दौडते हैं । उस समय बच्चो का शरीर पेड की डालियों की तरह लचीलापन लिये हुए रहता है । झुकना, मुडना दौडना, कूदना सारी कियाएँ शरीर के लचीलेपन के कारण ही कर पाते हैं।

**विशेष–** 1. कवि ने बच्चों की चेष्टाओं का सुन्दर वर्णन प्रस्तुत किया है।
2. मानवीकरण, अनुप्रास, उपमा अलंकारों का प्रयोग तथा खड़ी बोली युक्त मिश्रित शब्दावली है।

## पद्यांश(11)

**अगर वे कभी गिरते हैं। छतों के खतरनाक किनारों से**
**और बच जाते हैं तब तो**
**और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं**
**पृथ्वी और भी तेज घुमती हुई आती है**
**उनके बेचैन पैरों के पास ।**

**प्रसंग–** प्रस्तुत काव्यांश कवि आलोक धन्वा द्वारा लिखित काव्य–संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' की कविता 'पतंग' से लिया गया है । पतंग उडाते समय बच्चों का उत्साह व खतरों से बचने की निडरता को प्रस्तुत किया गया है।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**व्याख्या–** कवि कहते हैं कि आकाश में अपनी उडती पतंगों को देखकर बच्चे अत्यधिक उत्साही हैं मानो अपने रंधों के सहारे वे भी उड रहे हों । कभी–कभार छतों के खतरनाग किनारों से गिर भी जाते है। परंतु अपने लचीले शरीर के कारण बच भी जाते है। बचने के कारण उनके मन का बचा–खुचा भय भी समाप्त हो जाता है। फिर वे भयरहित होकर निडरता के साथ चमकते सूर्य के सामने फिर से आते हैं। उनकी गति और उत्साह और भी तेज हो जाता हैं। ऐसा लगता है मानों पृथ्वी और भी तेज धूमती हुई बच्चों के भागते तेज कदमों के समीप स्वयं ही आ रही हो।

**विशेष–** 1. बच्चे खतरों को झेल कर साहसी बनते हैं तथा दुगुने मनोवेग से पुनः अपना कार्य शुरू कर देते हैं, इस भाव को प्रस्तुत किया गया है।

2. मानवीकरण, अनुप्रास, उत्प्रेरक्षा अलंकारों का प्रयोग तथ मुक्त छनद की प्रस्तुति है । भाषा में लाक्षणिकता व बिम्ब प्रयोग है।

**प्रश्न 51 कुँवर नारायण का जन्म कब हुआ–**

(अ) 1927 (ब) 1909 (स) 1807 (द) 1985 **(अ)**

**प्रश्न 52 कविता के बिना मुरझाए महकने का अर्थ है–**

(अ) कभी पुराना न होना
(ब) फुल की तरह सुगंध देना
(स) देशकाल से परे रहकर रसात्मक बने रहना
(द) कभी न मुरझाना **(स)**

**प्रश्न 53 बच्चों के खेल की मानवता को क्या देन है?**

**उत्तर–** बच्चों के खेल की मानवता को भेदभाव भुलाने सच्ची एकता अपनाने की शिक्षा देते है।

**प्रश्न 54 बिना मुरझाए कौन महकता है और क्यों ?**

**उत्तर–** फुल मुरझाने पर सुगंध नहीं देता है। कविता कभी मुरझाती नहीं। वह सदा महकती है अर्थात् उसका आनन्द देशकाल की सीमा के पार सभी को प्राप्त होता है।

**प्रश्न 55 "बात और भी पेचीदा होती चली गई" से कविता का तात्पर्य क्या है ?**

**उत्तर–** कवि कविता में सरल मनोभावों को व्यक्त करना चाहता था किन्तु अस्वाभाविक क्लिष्ट भाषा के कारण उसे सफलता नहीं मिली। वह भाषा को संशोधित करता तो वह और अधिक दुरूह हो जाती है। इसके साथ ही उसका कथ्य भी अस्पष्ट हो जाता था।

**प्रश्न 56 बात की चुड़ी कब मर जाती है? उसका क्या परिणाम होता है?**

**उत्तर–** 'बात की चुड़ी मर गई' में कवि–कथन के प्रभावहीन होने की व्यंजना है। बात को अस्वाभविक भाषा में व्यक्त करने के प्रयास में वह प्रभाव शून्य हो गई।



CBEO BHINDER
Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**प्रश्न 57 "कविता एक खेल है बच्चों के बहाने" 'कविता के बहाने ' पाठ में कविता और बच्चे मानव समाज को क्या संदेश देते है?**

**उत्तर–** कविता हमें यान्जिकता के दबाव से निकलने तथा उल्लास के साथ आगे बढ़ने का संदेश देते है।

**प्रश्न 58 रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर कीजिए–**

(i) कविता की **उड़ान** भला चिड़िया क्या जाने (तान/उड़ान)

(ii) बात और भी **पेचीदा** होती चली गई (सरल/पेचीदा)

**प्रश्न 59 "कैमरे में बन्द अपाहिज" करूणा के मुखौटे में छिपी कूरता की कविता है। विचार कीजिए।**

**उत्तर–**"कैमरे में बन्द अपाहिज" शीर्षक कविता में संचालक अपंग व्यक्ति के प्रति करूणा एवं संवेदना दिखाता है, परन्तु उसका उद्देश्य अपने कार्यक्रम से लोकप्रिय एव बिकाऊ बनाना है वह उसकी अपंगता बेचना चाहता है। उसकी करूणा एकदम बनावटी है उसमें कूरता छिपी हुई है। संचालक द्वारा अपाहिज से बार–बार पुछा जाता है कि क्या आप अपाहिज है? अपाहिजपन से कितना दुःख होता है? अपाहिज होना कैसा लगता है? इस तरह के प्रश्न पूछना उनकी संवेदनहीनता को प्रकट करता है तथा दूरदर्शन पर दिखाये जाने वाले ऐसे कार्यक्रम करोबारी दबाव के कारण संवेदनारहित एव कूरता वाले होते है।

**प्रश्न 60 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता में किन पर व्यंग्य किया गया है?**

**उत्तर–** प्रस्तुत कविता में दूरदर्शन के कार्यक्रम संचालको एवं मीडिया व्यवसाय पर व्यंग्य किया गया है क्योकि ये लोग अपाहिजों के दुःख दर्द को अपने कार्यक्रमों की लोकप्रियता बढाने के उद्देश्य से दिखाते है और अपना व्यवसाय चमकाने के लिए संवेदनाहीन आचरण करते है।

**प्रश्न 61 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता का प्रतिपाद्य या उद्देश्य क्या है?**

**उत्तर–**प्रस्तुत कविता का उद्देश्य यह बताना है के किसी के दुःख–दर्द का बाजारीकरण कदापि उचित नहीं है। अपाहिजों के प्रति सहानुभूति एवं करूणा रखनी चाहिए। कविता का प्रतिपाद्य दूरदर्शन की छद्म कूरता पर आक्षेप करना है एवं उसकी दोहरी चाल को प्रकट करना है।

**प्रश्न 62 दूरदर्शन वाले अपाहिज से प्रायः कैसे प्रश्न पुछते है और क्यों?**

**उत्तर–**दूरदर्शन वाले प्रायः पूछते है कि क्या आप अपाहिज है? आप अपाहिज क्यो है? क्या अपाहिज होना दुःख देता है? इस तरह के बेहूदे प्रश्न पूछकर वे कार्यक्रम को रोचक बनाना चाहते है ताकि दर्शको की सहानुभूति अपाहिज के साथ–साथ उनके कार्यक्रम से जुडी रहे।

**प्रश्न 63 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता क्या प्रेरणा दी गई है?**

**उत्तर–**प्रस्तुत कविता से यह प्रेरणा दी गई है कि हमें शारीरिक चुनौती झेलने वाले लोगों के प्रति संवेदनाशील नजरिया रखना चाहिए। उसकी अपंगता का किसी भी प्रकार का मजाक नहीं बनाना चाहिए। दूरदर्शन वालों को संवेदना और करूणा रखकर उद्देश्य की पूर्ति करनी चाहिए।

**प्रश्न 64 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता की भाषा–शैली पर प्रकाश डालिए।**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**उत्तर–**रघुवीर सहाय ने अपनी इस काव्य–रचना में पत्रकारिता दृष्टि का सृजनात्मक प्रयोग किया है। मानवीय पीडा की अभिव्यक्ति करना ही इनकी कविता का उद्देश्य रहा है। इसके लिए उन्होने नयी काव्य–भाषा का विकास किया। उनकी भाषा सटीक, दो–टूक और विवरण प्रधान है। अनावश्यक शब्दों का प्रयोग नहीं है। भय से उत्पन्न आवेग रहित अभिव्यक्ति उनकी कविता की प्रमुख विशेषता है। भाषा का पारम्परिक मोह त्यागकर सरल और बोलचाल की भाषा जो आम आदमी के समीप होती है का उपयोग इन्होने अपनी इस कविता में किया है। भाषा को अपने तरीके से तोड़ना, शब्दों को नए अर्थो से जोडना, वाक्य रचना में व्याकरण के मानकों की अवहेलना करना इनकी विद्या में है। शैली अभ्यास खोजती है और व्यक्तित्व के निर्माण की तरह शैली का निर्माण भी पथ–प्रदर्शन चाहता है। इनकी कविताओं में इनके व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप है।

**प्रश्न 65 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता के द्वारा पत्रकारिता के अमानवीय पहलू पर चोट की गई है। तर्क सहित टिप्पणी कीजिए।**

**उत्तर–**"कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता में एक अपाहिज मनुष्य का कैमरे के सामने साक्षात्कार दिखाया गया है। ऊपर से देखने पर तो यह कार्यक्रम उस अपाहिज की पीड़ा को दिखाकर उसके प्रति दर्शकों के मन में सहानुभूति जगाने के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है। वास्तव में तो इसका उद्देश्य दूरदर्शन के अपने चैनल को लोकप्रिय बनाना तथा विज्ञापनों द्वारा अधिकाधिक लाभ कमाना है। अपाहिज व्यक्ति से पूछे गए कुछ प्रश्न पीड़ा को कुरदने वाले, स्वाभिमान पर चोट करने वाले और मूर्खतापूर्ण है। यह भावनात्मक अत्याचार है। करूणा नहीं करूणा का पाखण्ड है।

**प्रश्न 66 "हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएँगे" पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग्य किया है?**

**उत्तर–**"कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता में कवि रघुवीर सहाय ने इलेक्ट्रोनिक मीड़िया की सोच पर व्यंग्य किया है। दूरदर्शन पर विभिन्न चैनलों के संचालक समझते है कि वे सब कुछ करने में समर्थ है। 'एक दुर्बल को लाएँगे' की दूरदर्शन की घोषणा उसके इसी अहंकार को सूचित करते है कि वह सामर्थ्यवान और शक्तिशाली है तथा अन्य अशक्त और दुर्बल है। कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से दूरदर्शन की इस दूषित मनोवृति का चित्रण व्यंग्यपूर्वक किया है।

**प्रश्न 67 "कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता के व्यंग्य पर टिप्पणी कीजिए।**

**उत्तर–**"कैमरे में बन्द अपाहिज" कविता का प्रतिपाद्य किसी की पीडा का प्रदर्शन करके दूरदर्शन की प्रसार संख्या को बढ़ाने के कदम को अनुचित ठहराना है तथा दूरदर्शन के कार्यक्रमों के सोच और स्तर पर प्रकाश डालना है। इस कविता का उद्देश्य यह बताना भी है कि किसी की पीड़ा का बाजारीकरण कदापि उचित नहीं है। कविता में संदेश निहित है कि दीन–दुखियों की पीड़ा बेचने की चीज नहीं है। अप्रत्यक्ष रूप से कविता में अपाहिज–जनों के प्रति सहानुभूति तथा करूणा का भाव मन में रखने की प्रेरणा दी गई है।

**प्रश्न 68 "कैमरे में बन्द अपाहिज" शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।**

**उत्तर–**कवि ने इस कविता में एक अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा को चित्रित किया है। अपाहिज व्यक्ति की पीड़ा वह है जो उसको दूरदर्शन पर कैमरे के सामने उद्घोषक प्रश्नों का सामना करने से होती है। कैमरे के सामने



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

अनर्गल प्रश्न पुछे जाने से वह स्वयं को तमाशे की वस्तु समझता है ओर अपमान का अनुभव करता है। अपनी पीड़ा का सार्वजनिक प्रदर्शन उसके लिए अत्यन्त अपमानजनक है। इस प्रकार कविता का शीर्षक सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होता है। अतः इस कविता को संवेदनहीन नहीं कहा जा सकता है।

**प्रश्न 69 लुट्टन के पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि मेरा गुरू कोई पहलवान नहीं यहीं ढ़ोल है?**

**उत्तर–** लुट्टन ने किसी उस्ताद या गुरू से कुश्ती के दाँव–पेंच नहीं सीखे थे। उसे कुश्ती करते समय ढ़ोल की ध्वनि से उत्तेजना और संघर्ष करने की प्ररेणा मिलती थी। चांद सिंह पहलवान के साथ कुश्ती लड़ते समय वह ढ़ोल की ध्वनि से दाँव–पेंच का अर्थ लेता रहा और उसी के अनुसार कुश्ती लड़कर विजयी हुआ। अतः वह ढ़ोल को ही अपना गुरू मानने लगा।

**प्रश्न 70 गांव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहान्त के बावजूद लुट्टन पहलवान ढ़ोल क्यो बजाता रहा?**

**उत्तर–** लुट्टन पहलवान ढ़ोल को अपना गुरू और सघंर्ष करने की शक्ति देने वाला मानता था। ढ़ोल की ध्वनि से उसमे साहस और उत्तेजना का संचार होता था। सन्नाटे में ढ़ोल जीवन्तता का संचार करता है। इसी कारण गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों के देहान्त के बावजूद भी वह जीवन में हिम्मत बनाये रखने के लिए ढ़ोल बजाता रहा।

**प्रश्न 71 ढ़ोलक की आवाज का पुरे गाँव पर क्या असर होता था?**

**उत्तर–** महामारी फैलने तथा कई लोगों की मौत होने से गाँव का वातावरण निराशा–वेदना से भरा था। रात के समय गाँव में सन्नाटा और भय बना रहता था। ढ़ोलक की आवाज रात में उस सन्नाटे और भय को कम करती थी महामारी से पीड़ीत लोगों को ढ़ोलक की ध्वनि से संघर्ष करने की शक्ति एवं उत्तेजना मिलती थी। इस प्रकार ढ़ोलक की आवाज का पुरे गाँव पर अतीव प्रेरणादायी असर होता था।

**प्रश्न 72 प्रस्तुत कहानी के आधार पर गांव में व्याप्त महामारी की भयानक दशा का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–** गाँव में फैली मलेरिया और हैजा महामारी से रोज दो–तीन लाशे उठने लगी थी। गाँव सूना लगता था। दिन करूण रूदन और हाहाकार का स्वर सुनाई देता था परन्तु रात में सन्नाटा रहता था लोग रात में अपनी झोपडियों में डरे–सहमें पडे रहते थे। माताओं में दम तोडते हुए पुत्र को अंतिम बार 'बेटा' कहकर पुकारने की भी हिम्मत नहीं होती थी।

**प्रश्न 73 'गुरूजी कहा करते थे के जब मै मर जाऊँ तो मुझे चिता पर चित नहीं पेट के बल सुलाना" ये शब्द लुट्टन पहलवान के जीवन के कौन–से पक्ष को उद्घाटित करते है? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर–** अपने शिष्यों से लुट्टन पहलवान ने ये शब्द इसलिए कहे थे कि वह जीवन में किसी से नहीं हारा अर्थात् जीवन में सदैव संघर्ष करता रहा और बड़े–बड़े पहलवानों से भी चित्त नहीं हुआ था। अतः उसके ये शब्द अपने गौरवयुक्त जीवन के उज्जवल पक्ष को ही उद्घाटित करने वाले थे जो कि एक शिष्य द्वारा उसकी मृत्यु हो जाने पर कहे गये थे।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**प्रश्न 74 "राजा साहब ने कुश्ती बन्द करवाकर लुट्टन को अपने पास बुलवाया और समझाया" राजा साहब ने लुट्टन को क्या समझाया?**

**उत्तर–** राजा साहब ने लुट्टन को समझाया कि तुम हिम्मत रखने वाले युवा हो परन्तु शेर के बच्चे से लड़ना तुम्हारे बस की बात नहीं है। तुम इसे चुनौती देकर पागल मत बनों दस रूपये का नोट लेकर मेला देखों और चले जाओं इसी में तुम्हारी भलाई है।

**.प्रश्न 75 कुश्ती में विजयी होने पर लुट्टन ने क्या किया?**

**उत्तर–**कुश्ती में चांद सिंह को चारों खाने चित करके विजयी होने पर लुट्टन कूदता–फाँदता, ताल–ठोकता सर्वप्रथम बाजे वालों के पास गया और उसने ढ़ोलों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया फिर वह दौड़कर राजा साहब के पास गया और उन्हे गोद में उठाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने लगा।

**प्रश्न 76 लुट्टन अपने पुत्रों को कैसी शिक्षा देता था?**

**उत्तर–** लुट्टन अपने पुत्रों को कसरत करने की शिक्षा देता था। वह प्रतिदिन प्रातःकाल स्वयं ढ़ोल बजा–बजकर पुत्रों को उसकी आवाज पर पूरा ध्यान देने के लिए कहता था कि "मेरा गुरू कोई पहलवान नहीं, यही ढ़ोल है। ढ़ोल की आवाज के प्रताप से ही मैं पहलवान हुआ। दंगल में उत्तर कर सबसे पहले ढ़ोलों को प्रणाम करना" आदि शिक्षा देता था।

**प्रश्न 77 पहलवान लुट्टनसिंह को राज दरबार क्यों छोड़ना पड़ा? बताइए**

**उत्तर–** बूढ़े राजा साहब की मृत्यु के बाद राजकुमार ने विलायत से आकर राज्य शासन अपने हाथ में लिया और बहुत से परिवर्तन किए। दंगल का स्थान घोड़ों की रेस ने ले लिया। राजकुमार ने जब पहलवान और उसके पुत्रों का दैनिक भोजन–व्यय सुना तो उन्हे अनावश्यक बताया। इस प्रकार लुट्टन पहलवान को राज दरबार छोड़ना पड़ा।

**प्रश्न 78 'पहलवान की ढ़ोलक" कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर–**प्रस्तुत कहानी में व्यवस्थाओं के परिवर्तन के पश्चात् की समस्याओं का स्पष्ट किया गया है। बदलते समय में लोक–कला और कलाकार अप्रासंगिक हो जाते है। उनका घटता महत्व सांस्कृतिक दृष्टि से चिंताजनक है। प्रस्तुत कहानी में राजा साहेब की जगह नए राजकुमार का आकर जम जाना सिर्फ व्यक्तिगत सत्ता परिवर्तन नहीं बल्कि जमीनी पुरानी व्यवस्था के पुरी तरह उलट जाने और उस पर सभ्यता के नाम पर एकदम नयी व्यवस्था के आरोपित हो जाने का प्रतीक है। यह 'भारत' पर 'इंडिया' के छा जाने की समस्या है जों लुट्टन पहलवान को लोक कलाकार के आसन से उठाकर पेट भरने के लिए हाय–तौबा करने वाली कठोर भूमि पर पटक देती है। मनुष्यता की साधना और जीवन–सौन्दर्य के लिए लोक कलाओं को प्रासंगिक बनाये रखने हेतु सबकी क्या भुमिका है? ऐसे कई प्रश्नों को व्यक्त करना इस कहानी का उद्देश्य है।

**प्रश्न 79 सहर्ष स्वीकारा है' कविता किस काव्य संग्रह से ली गई है–**

(अ) चाँद का मुँह टेढ़ा है (ब)भूरी–भूरी खरक धूल
(स) काठ का सपना (द) विपान **(ब)**

**प्रश्न 80 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता किसे समर्पित है–**

(अ) पत्नी (ब) प्रेमिका (स) माँ (द) उपरोक्त सभी **(द)**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**प्रश्न 81 नमक' कहानी के लेखक है–**

(अ) प्रेमचन्द (ब) रजिया सज्जाद जहीर
(स) महादेवी वर्मा (द) हरिवंशराय बच्चन **(ब)**

**प्रश्न 82 सिक्ख बीबी ने सफिया से लाहौर से क्या मंगवाया था–**

(अ) गुड़ (ब) नमक (स) किन्नू (द) अमरूद **(ब)**

**प्रश्न 83 'शिरीष के फूल' किस विधा की रचना है–**

(अ) कहानी (ब) निबंध (स) काव्य (द) कथा **(ब)**

**प्रश्न 84 लेखक ने 'शिरीष के फूल' में शिरीष की तुलना किन महापुरूषों से की है–**

(अ) महाकवि कालीदास (ब) रविन्द्रनाथ टैगोर
(स) महात्मा गांधी (द) उपरोक्त सभी **(द**

**प्रश्न 85 सहर्ष स्वीकारा है' कविता का प्रतिपाद्य/संदेश क्या है?**

**उत्तर–**'सहर्ष स्वीकारा है'में कवि ने जीवन के सब सुख–दुख, संघर्ष–अवसाद, उठा–पटक को सम्यक भाव से अंगीकार करने का संदेश दिया है।

**प्रश्न 86 सहर्ष स्वीकारा है' कविता किसको स्वीकारने की प्रेरणा देती है? तथा क्यो?**

**उत्तर–**'सहर्ष स्वीकारा है' कविता हमको जीवन मे प्राप्त प्रत्येक वस्तु को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करने की प्रेरणा देती है। हमे जीवन में मिलने वाले सुख–दुख, हार, जीत, निन्दा, स्तूति, गरीबी–अमीरी, सबको समान रूप से सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।

**प्रश्न 87 कवि तथा उसके प्रियतम में कैसा संबंध है?**

**उत्तर–** कवि तथा उसके प्रियतम के मध्य स्नेह और प्रेम का संबंध है, कवि कहता है कि उसको जीवन में जो कुछ मिला है वह प्रिय की देन है।

**प्रश्न 88 नमक की पुड़िया ले जाने के संबंध में सफिया के मन में क्या द्वन्द्व था?**

**उत्तर–** सफिया ने सिक्ख बीबी को लाहौरी नमक लाने का वचन दिया था पर पाकिस्तान से भारत नमक लाना गैर कानुनी था। सफिया किसी भी कीमत पर नमक ले जाना चाहती थी। यही द्वन्द्व उसके मन में था।

**प्रश्न 89 'नमक' कहानी के माध्यम से कहानीकार पाठको को क्या सन्देश देना चाहती है?**

**उत्तर–**'नमक' कहानी के माध्यम से कहानीकार कहना चाहती है कि राजनीतिक आधार पर किसी देश का बँटवारा उसको नक्शे में तो अलग–अलग कर सकता है लेकिन जनता के दिलों को नहीं बाँट सकता है।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**प्रश्न 90 'नमक' कहानी की नायिका सफिया की चारीत्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए**

**उत्तर–** (1) उदार विचार वाली
(2) मानवतावादी व उच्च विचारों की पोषक
(3) आदर्शवादी
(4) भावनाप्रधान महिला

**प्रश्न 91 लेखक ने शिरीष को 'कालजयी अवधूत' (सन्यासी) की तरह क्यो माना है?**

**उत्तर–** कालजयी उसे कहते है जो समय के साथ परिवर्तन से अप्रभावी रहता है। जीवन में आने वाले सुख–दुख, उत्थान–पतन, हार जीत उसे प्रभावित नहीं कर पाते। वह इनमें सन्तुलन बनाकर जीवित रहता है। यह गुण अवधूत अर्थात् सन्यासी में होते है। शिरीष का वृक्ष भी भीषण गर्मी और लू में भी हरा–भरा और फूलों से लदा रहता है। इस कारण 'कालजयी अवधूत' की तरह माना है।

**प्रश्न 92 "हाय वह अवधूत आज कहाँ है?" लेखक ने यहा किसे स्मरण किया है व क्यो?**

**उत्तर–** लेखक ने उपर्युक्त वाक्य महात्मा गांधी के लिए कहा है। आज देश में हिंसा, असहिष्णुता और कठोरता का वातावरण व्याप्त है ऐसे समय में देश के मार्गदर्शन के लिए महात्मा गांधी जैसे अवधूत की प्रबल आवश्यकता है।

**प्रश्न 93 लेखक के मन में शिरीष को देखकर हूक क्यो उठती है?**

**उत्तर–** आज भारत में भय, भूख व भ्रष्टाचार का बोलबाला है। लेखक जब–जब शिरीष को देखता है, तब–तब उसके मन में हूक उठती है कि वह अवधूत गांधी आज कहाँ है।

**प्रश्न 94 मैं और और जग और कहाँ का नाता– कविता मे और शब्द की विशेषता बताइए।**

**उत्तर –** मैं और,और जग और कहाँ का नाता–कविता मे और शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है प्रथम तथा तृतीय बार प्रयुक्त और का अर्थ है तथा यह अव्यय है और शब्द की आवृति होने तथा उसके अर्थ भिन्न – भिन्न होने से यहाँ यमक अलंकार है। कवि कहना चाहता है कि त्याग और प्रेम पर भरोसा करने वाले कवि की भोगवादी संसार से कोई समानता नही है।

**प्रश्न 95 दिन जल्दी–जल्दी ढलता है कि आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चला है ?**

**उत्तर–** दिन जल्दी–जल्दी ढलता है कि आवृत्ति से कविता की दो विशेषताओं का पता चला है

1– इस कविता की रचना गीत शैली मे है इस कारण स्थायी या टेक दिन जल्दी–जल्दी ढलता है को बार बार कविता मे दोहराया गया है।

2– जीवन छोटा है करने को काम बहुत है इससे मन में जो व्याकुलता हो रही है उससे लग रहा कि जल्दी–जल्दी ढल रहा है कविता मे हुई आवृति इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को प्रकट करती है।

**प्रश्न 96 निज उर के उद्‌गार और निज उर के कवि का आशय क्या है ?**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**उत्तर–** कवि का आशय है कि वह दुसरो को खुश करने के लिए कविता नही लिखता उसकी कविता में उसके मन के भाव प्रकट होते है। कविता में प्रकट उसके प्रेम भरे भाव उसकी और से लोगो को दी गई भेंट है।

**प्रश्न 97 सुख–दुख के प्रति कवि का क्या भाव हैं ?**

**उत्तर–** कवि सुख–दुख को समान भाव से ग्रहण करता है। वह सुख में प्रसन्न तथा दुख में दुखी नही होता वह गीत के सुखे– दुखे समे कृत्वा से प्रभावित है।

**प्रश्न 98 सत्य को जानना कवि की दृष्टि में असम्भव क्यो है ?**

**उत्तर–** कवि का मानना है कि सत्य की खोज कठिन कार्य है। ज्ञानी और अज्ञानी दोनो ही सत्य की खोज में लगे है परन्तु उस तक नही पहुँच पाते है अज्ञानी तो अज्ञानी है ही परन्तु ज्ञानियो को भी वैसा सच्चा ज्ञान नही है जो सत्यान्वेषण के लिए आवश्यक होता है वे ज्ञानी होने के मिथ्या अंहकार से ग्रस्त है अतः सत्य को नही जान पाते।

**.प्रश्न 99 भूपों के प्रसाद किस पर निछावर है तथा क्यों?**

**उत्तर–** राजाओ के महलो की सुख–सुविधा को आकर्षित नही करती वह तो अपनी झोपडी खण्डहर से हि संतुष्ट है। आत्म–संतोष के कारण राजमहलो को वह खण्डहर पर निछावर करता है।

**.प्रश्न 100 आत्म–परिचय कविता का प्रतिपाद्य क्या है।**

**उत्तर–** आत्म–परिचय कविता में कवि ने संसार से अपना सम्बन्ध **प्रीति**–कलह **को** बताया है उसका जीवन विरोधों का सामंजस्य है। इनको साधते–साधते एक बेखुदी मस्ती और दीवानगी उसके व्यक्तित्व में उत्तर आई है यहाँ कवि ने दुनिया के साथ अपने द्विधात्मक और द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध के मर्म का उद्घाटन किया है। आत्मपरिचय कविता का प्रतिपाद्य संसार से प्रेम करना उसके हित की चिन्त करना स्वय कष्टो में रहकर भी संसार के प्रति अपना कर्तव्य पूरा करना किसी भी निन्दा–स्तुति से अप्रभावित रहकर सभी के साथ समान रूप से प्रेम का व्यवहार करना तथा अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देना है।

**प्रश्न 101 भक्तिन अपना वास्तविक नाता लोगों से क्यों छुपाती थी ? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा ?**

**उत्तर–** भक्तिन का वास्तविक नाम लछमिन अर्थात लक्ष्मी **था**। **लक्ष्मी को** धन और सौभाग्य की देवी माना जाता है। दीपावली पर उसकी पूजा होती है। भक्तिन का जीवन निर्धनता से भरा हुआ था दुर्भाग्य ने कभी उसका पीछा नही छोड़ा अपना घर–द्वार छोड़कर वह महादेवी की सेविका बनकर रह रही थी भक्तिन को लगता था कि उसका नाम उसकी दशा से मेल नही खाता इस कारण वह इस नामको लोगों को बताना नही चाहती थी वह उसे छिपाती थी।

**प्रश्न 102 भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का उदाहरण लेखिका ने क्या दिया ?**

**उत्तर–** भक्तिन ने अपना सिर उस्तरे से मुंडवा लिया था। लेखिका को स्त्री का सिर मुंडाना अच्छा नही लगता था। उनके मना करने पर भक्तिन ने अपने काम को शास्त्रो के अनुकुल बताया–कहा यह शास्त्र में लिखा है। क्या **है** यह पुछने पर उसने कहा तीरथ गए मुँडाये सिध्द महादेवी जानती थी कि शास्त्र में ऐसा कुछ नही लिखा परन्तु वह चुप रही और भक्तिन का सिर मुँडाने का काम जारी रहा।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**प्रश्न 103 महादेवी ने भक्तिन के जीवन को कितने परिच्छेदों में बाँटा है ? उसके जीवन के प्रथम परिच्छेद का वर्णन संक्षेप में कीजिए।**

**उत्तर–** महोदेवी ने भक्तिन के जीवन को चार परिच्छेदों में बाटा है। उसके जीवन के प्रथम परिच्छेद में बचपन से लेकर ससुराल जाने तक का समय लिया गया है। भक्तिन एक ग्वालिन की बेटी थी उसका नाम लक्ष्मी था वह अपने पिता की इकलौती बैटी थी उसकी माता की मृत्यु हो जाने के कारण विमाता की छत्र छाया में पली–बढ़ी थी पिता ने पाँच वर्ष की अवस्था में उसका विवाह कर दिया था नौ वर्ष की आयु होने पर उसका गौना हो गया था।

**प्रश्न 104 भारतीय समाज में महिलाओं को कैसा स्थान प्राप्त है ? आपकी दृष्टी में यह कितना उचित है।**

**उत्तर–** भारतीय समाज में महिलाओं को द्वितीय श्रेणी का स्थान प्राप्त है। समाज में पुरूषो की प्रधानता अब भी दिखाई देती है। **लड़कियों** की तुलना में **लड़कों** को अच्छा भोजन और शिक्षा मिलती है बेटी को जन्म देने वाली माता को आज भी **तिरस्कार** प्राप्त होता है। अनेक बार **तो उसको** अत्याचार भी सहने पड़ते है पहले तो बेटी को जन्म लेते ही मार डाला जाता था अब भी कन्या भ्रूण हत्याएँ खूब होती है। एक सभ्य समाज में महिलाओं के साथ यह भेदभाव अनुचित ही नही निन्दनीय भी है।

**प्रश्न 105 भक्तिन के विधवा होने पर उसके परिवार वाले क्या चाहते थे भक्तिन ने इसका विरोध किस प्रकार किया ?**

**उत्तर–** मात्र उनतीस वर्ष की अवस्था में भक्तिन विधवा हो गयी थी **बड़ी** बेटी का विवाह करने के बाद उसका पति मर गया था। भक्तिन की सोना उगलने वाली खेती हष्ट पुष्ट दुधारू गाय –भैसो तथा फलदार वृक्षो को देखकर उसके जेठ जठौत जलते थे वे उसकी सम्पति पर अधिकार करना चाहते थे भक्तिन सब समझती थी वह दूसरी शादी करना नही चाहती थी उसने अपने सिर के बाल मुँडालिए और गुरू **से** मंत्र लेकर गले में कंठी पहन ली अपने बडे दामाद को बुलाया और घर जमाई बना लिया।

**प्रश्न 106 भक्तिन की चरित्रगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर–** वह एक स्नेही महिला थी वह महादेवी से अत्यन्त स्नेह करती थी तथा सदा उनका हित चाहती थी यात्रा में उनके साथ रहकर पहाड़ी रास्तो पर उनके आगे तथा धूल भरे रास्तो पर उनके पिछे चलती थी वह जेल जाने से डरती थी परन्तु महादेवी के साथ जेल जाने को तैयार हो गई वह एक पल भी उनका साथ नही छोड़ना चाहती थी।

**प्रश्न 107 मैं अपनी असुविधाएँ छिपाने लगी सुविधाओं की चिन्ता करना तो दूर की बात है लेखिका ने अपनी चिन्ता करना क्यो छोड़ दिया ?**

**उत्तर** महादेवी का स्वास्थ्य गिर रहा था अतः भक्तिन को सेवा के लिए रखा था महादेवी भक्तिन की सरलता से बहुत प्रभावित हुई इसलिये उन्होने अपनी असुविधाओं को बताना ही छोड़ दिया और अपनी चिन्ता करना भी छोड़ दिया।

**प्रश्न 108 नरो वा कुंजरो वा कहने में भी विश्वास नही करती। कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**उत्तर–** नरो वा कुंजरो वा का अर्थ है मनुष्य है या हाथी। महाभारत के युध्द में युधिष्ठिर से कृष्ण ने कहा की यदि द्रोणाचार्य को उनके पुत्र की मृत्यु का समाचार सुनाया जाये तो यह युध्द बंद कर देगे उसी समय अश्वत्थामा नाम का एक हाथी मारा गया था। युधिष्ठिर ने द्रोणाचार्य के पास जाकर जोर से कहा अश्वत्थामा मारा गया लेकिन नरो वा कुंजरो वा धीरे कहा इस प्रकार युधिष्ठिर ने असत्य को सत्य के रूप में कहा इस सिध्दात को भक्तिन स्वीकार नही करती थी।

**प्रश्न 109 संसार में कष्टो को सहते हुए भी खुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है ?**

**उत्तर –**सुख दुःख में लिप्त न होकर उनको समभाव से ग्रहण करके ही खुशी और मस्ती का माहौल पैदा किया जा सकता है।

**प्रश्न 110 शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?**

**उत्तर–** कवि का अभिप्राय है कि वह वाणी में कोमलता और मधुरता और शीतलता का पक्षधर है। वह अपनी बात कोमल वाणी में कहता है किन्तु इस कोमल वाणी में उसके हृदय की वेदना छिपी है।

**प्रश्न 111 भक्तिन ने विधवा होने के पश्चात् अपना जीवन किस प्रकार बिताया ?**

**उत्तर –** विधवा होने के पश्चात् भक्तिन ने अपना जीवन सादगी में बिताया उसने दुसरा विवाह नही किया उसने गुरू मंत्र लिया सिर के बाल मुंडवा लिये तथा गले में कंठी पहन ली फिर बाद में महादेवी की सेवा करने में दिन रात लगी रहती थी।

**प्रश्न 112 जीवन के दुसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुःख ही अधिक है। लेखिका के अनुसार दुसरा परिच्छेद कौन–सा है।**

**उत्तर–** भक्तिन के विवाह के बाद ससुराल पहुँचने से उसके जीवन का दुसरा परिच्छेद आरम्भ हुआ उसकी सास तथा जेठानियाँ कमाऊ पुत्रों की माताएँ थी परन्तु भक्तिन ने तीन कन्याओं को जन्म दिया इस अपराध के कारण उसे घर का सारा कार्य करना पड़ता था।

**प्रश्न 113 'उषा' कविता के रचयिता का नाम लिखिए।**

**उत्तर-** उषा' कविता के रचयिता कवि का नाम शमशेर बहादुर सिंह है।

**प्रश्न 114 कवि ने प्रातः के नभ को नीला शंख जैसा क्यों बताया है ?**

**उत्तर-** कुछ अंधेरा, कुछ हल्का उजाला एवं स्वच्छ रहने से कवि ने प्रातः के नभ को नीला शंख जैसा बताया है।

**.प्रश्न 115 कवि ने सूर्य के लिए 'गौर देह' क्यों कहा है ?**

**उत्तर-** प्रातः चमकते हुए सूर्य के श्वेत बिम्ब को लक्ष्य कर कवि ने उसे गोरी देह वाला बताया है।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**.प्रश्न 116 उषा का जादू टूटने का क्या तात्पर्य है ?**

**उत्तर –** उषाकाल में जो प्राकृतिक सौन्दर्य एवं विशेष आकर्षण होता है, वह सूर्योदय के बाद समाप्त हो जाता है—जादू टूटने का यही तात्पर्य है।

**प्रश्न 117 'उषा' कविता में प्रयुक्त उपमान-योजना स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर –** 'उषा' कविता में कवि ने उषा को सुन्दर एवं चतुर गृहिणी बताया है, जो सुबह अपने चौके को लाल मिट्टी से लीपती है। प्रातः नीले आकाश में उगते हुए सूर्य को किसी की झिलमिल गौर देह का उपमान चित्रित किया गया है। इसमें आकाश को स्लेट और लाल किरणों को लाल खड़िया की लकीरें बताकर नया उपमान-बिम्ब दर्शाया गया है।

**प्रश्न 118 'उषा' कविता गाँव की सुबह का गतिशील चित्र है ?" स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** शमशेर बहादुर सिंह ने 'उषा' कविता में प्रातःकाल के आकाश को राख से लीपा हुआ चौका बताया गया है। फिर उसे लाल केसर से धुली हुई बहुत काली सिल और स्लेट पर लाल खड़िया चाक से मला हुआ बताया गया है। इसमें प्रयुक्त 'चौका' शब्द गाँवों में रसोईघर की फर्श को कहते हैं। गाँवों में महिलाएँ चौके को स्वच्छ रखने के लिए उसे मिट्टी या राख आदि से लीपती हैं। गाँव में रसोईघर की फर्श कच्ची होती हैं, इसलिए उसे लीपा-पोता जाता है। रसोईघर में सिल अर्थात् मिर्च-मसाला आदि पीसने का सिलबट्टा होता है तथा बच्चों के अक्षर ज्ञान के लिए स्लेट काम में ली जाती है। कवि ने सिल और स्लेट का उपमान रूप में प्रयोग किया है और ये उपमान भी ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित हैं।

**प्रश्न 119 'उषा' कविता में किसका वर्णन किया गया है ?**

**उत्तर –** 'उषा' कविता में कवि ने भोर के प्राकृतिक परिवेश का वर्णन किया हैं।

**प्रश्न 120 'उषा' कविता के शिल्प-सौन्दर्य की विशेषताएँ बताइए।**

**उत्तर-**'उषा' कविता में बिम्बधर्मी प्रयोग करते हुए सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित परिवेश का शब्द-चित्र उपस्थित किया गया है। इसमें नवीन उपमानों, बिम्बों और नये प्रतीकों के द्वारा शिल्प-सौन्दर्य को निखारा गया है।

**प्रश्न 121 'बहुत काली सिल जरा-से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो।' इसका काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर** – इसमें कवि ने काली सिल और लाल केसर का उपमान नये रूप में प्रयुक्त किया है। उषाकाल में धूमिल आकाश को काली सिल और सूर्य की किरणों को लाल केसर तथा उनसे आकाश के धुल जाने या कालिमा हट जाने का वर्णन सर्वथा नये बिम्ब रूप में दर्शाया गया है।

**प्रश्न 122 'स्लेट पर या लाल खड़िया चाक मल दी है किसी ने','उषा' कविता की उपर्युक्त पंक्ति बाल मनोविज्ञान पर प्रकाश डालती है। कैसे? समझाइए।**

**उत्तर-** पहले बच्चों की शिक्षा देने के लिए स्लेट का प्रयोग होता था। उस पर खड़िया से बनी चाक-बत्ती द्वारा अक्षर लिखे जाते थे। बच्चे कभी खेल-खेल में स्लेट पर लिखते और मिटाते थे। 'उषा' कविता की इस पंक्ति का सम्बन्ध बच्चों से होने के कारण हम कह सकते हैं कि यह बाल मनोविज्ञान पर प्रकाश डालती है।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**.प्रश्न 123 फ़िराक की रुबाई के आधार पर माँ के वात्सल्य भाव का वर्णन कीजिए।**

**उत्तर-** फ़िराक ने एक माँ के अपने बच्चे के प्रति प्रेम अर्थात् वात्सल्य को अपनी रुबाई में प्रकट किया है। आँगन में गोद में उठकार बच्चे को हाथों पर झुलाना, बार-बार हवा में उछालना, उसे स्वच्छ पानी से कोमलता के साथ छींटे डालकर नहलाना, उसके उलझे बालों में कंघी करना, उसको दोनों घुटनों के बीच में पकड़कर कपड़े पहनाना इत्यादि माँ के कार्यों का इस रुबाई में सजीव चित्रण हुआ है। इस रुबाई में माँ के वात्सल्य का चित्र सजीव हो उठा है ।

**.प्रश्न 124 बच्चे की चाँद लेने की ज़िद को माता किस प्रकार अपनी ममता भरी समझ से पूर्ण करती है? फ़िराक गोरखपुरी की रुबाइयों के आधार पर समझाइए।**

**उत्तर-** बालक आकाश में खिले चाँद को लेकर उससे खेलना चाहता है। वह उसे लेने के लिए अपनी माँ से ज़िंद कर रहा है। माँ उसकी हठ चतुराई के साथ पूरा करती है। वह बच्चे के हाथों में एक दर्पण देकर उसमें चन्द्रमा की परछाई दिखाती हैं और कहती है कि देखो, चाँद अब तुम्हारे हाथों में आ गया है।

**प्रश्न 125 "फ़िराक की रुबाइयों में हिन्दी, उर्दू और लोकभाषा का आकर्षक पुट लगाया गया है। " सोदाहरण सिद्ध कीजिए।**

**उत्तर-** उर्दू शायरी का एक बड़ा हिस्सा रूमानियत, रहस्य और शास्त्रीयता से बँधा रहा है। उसमें लोक-जीवन के पक्ष बहुत कम उभरे हैं। फ़िराक की शायरी में लोक-जीवन का पक्ष उभरा है। सामाजिक दुख-दर्द व्यक्तिगत अनुभूति बनकर उनकी शायरी में ढल गए हैं। फ़िराक ने भारतीय संस्कृति तथा लोकभाषा के प्रतीकों से जोड़कर अपनी शायरी का महल खड़ा किया है। फ़िराक ने उर्दू शायरी के चले आ रहे स्वरूप के साथ-साथ नयी भाषा तथा नए विषयों से अपनी शायरी को जोड़ा है।
"हम हों या किस्मत हो हमारी दोनों को इक ही काम मिला
किस्मत हमको रो लेवे हैं हम किस्मत को रो ले हैं। "

**प्रश्न 126 फिराक गोरखपुरी की इन पंक्तियों के भाव को स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** शायर ने कहा है कि उसको तथा उसकी किस्मत को एक जैसा ही काम करने को मिला है। वह अपनी किस्मत के खराब होने का रोना रोता रहता है। उधर उसकी किस्मत भी इस बात से दुःखी होकर रोती है कि कैसे आदमी से पाला पड़ा है जो अपनी अकर्मण्यता का दोष मुझ पर लगाता रहता है।

**.प्रश्न 127 'उसको उतना ही पाते हैं, खुद को जितना खो ले हैं'-फ़िराक गोरखपुरी की इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।**

**उत्तर-** फ़िराक गोरखपुरी ने इस पंक्ति में प्रेम की विशेषता का वर्णन किया है। प्रेम में त्याग का बहुत महत्त्व होता है। प्रेमी-प्रेमिका का एक-दूसरे के प्रति जितना त्याग और समर्पण व्यक्त करते हैं, उतना ही उनका प्रेम प्रगाढ़ होता है। अपने अन्दर के अहंकार को मिटाकर सच्चा समर्पण करने से ही प्रेम की प्राप्ति होती है।

**.प्रश्न 128 शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**उत्तर-**शायर कहता है कि राखी भाई-बहिन के पवित्र रिश्ते की प्रतीक है। बहिनें चमकदार मुलायम रेशों वाली राखियाँ खरीदती हैं, ताकि उनकी चमक एवं प्रेम-सौहार्द्र के समान भाई-बहिन के अटूट सम्बन्ध की चमक एवं प्रेम सौहार्द अर्थात् उन्हें निभाने का उत्साह-उल्लास सदा बना रहे ।

**प्रश्न 129 टिप्पणी करें (क) गोदी के चाँद और गगन के चाँद का रिश्ता।**
**(ख) सावन की घटाएँ व रक्षाबंधन का पर्व**

**उत्तर-**(क) गोदी का चाँद नन्हा प्यारा शिशु होता है। माँ अपने प्यारे शिशु को चाँद से भी अधिक प्यारा मानती है। आकाश का चाँद बच्चों को प्यारा लगता है और वे उसे खिलौना मानकर पाने के लिए मचलने लगते हैं। इन दोनों की स्थितियों में यही अन्तर है।

(ख) रक्षाबन्धन का त्योहार श्रावण की पूर्णिमा पर पड़ता है। इस समय आकाश में बादल छाये रहते हैं, बिजली चमकती रहती है। आकाश में बादलों की उमड़-घुमड़ के साथ भाई-बहिन के हृदय में पवित्र प्रेम-प्यार का उल्लास बना रहता है।

**प्रश्न 130 फिराक की गजलों में प्रकृति को किस रूप में चित्रित किया गया है?**

**उत्तर-**फिराक की गजलों में प्रकृति का चित्रण मानवीकरण शैली में हुआ है। प्रातःकाल कलियाँ अपनी गाँठें धीरे-धीरे खोलती हैं तथा रंग व सुगंध के सहारे उड़ने को आतुर हैं। तारे आँखें झपकाते-से प्रतीत होते हैं। रात का सन्नाटा प्रकृति के रहस्य को मौन स्वर में बोलता हुआ किसी की याद दिलाता सा प्रतीत होता है।

**प्रश्न 131 रुबाइयों के आधार पर घर-आँगन में दीपावली के दृश्य-बिम्ब को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-**फिराक गोरखपुरी ने दीपावली का दृश्य-बिम्ब इस प्रकार चित्रित किया है— शाम का समय, लिपा-पुता एवं स्वच्छ घर-आँगन, माँ अपने बच्चों के लिए जगमगाते चीनी के खिलौने सजाती और प्रसन्नता से दीपक जलाती है तथा बच्चों की खिलखिलाहट से पूरा घर-आँगन जगमगा जाता है।

**.प्रश्न 132 'ये कीमत हम अदा करे हैं' फ़िराक ने अपने प्रेम के सम्बन्ध में क्या कहा है?**

**उत्तर-** फ़िराक अपनी प्रेमिका के प्रेम में पड़ा है। अपने गहरे प्रेम के प्रतिदान स्वरूप वह प्रेम दीवाना हो गया है। प्रेम के लिए दीवानगी की यह कीमत वह खुशी-खुशी और अपने पूरे होश साथ अदा करने को तैयार है।

**प्रश्न 133. 'पतंग' शीर्षक कविता से प्रतिपाद्य या मूल भाव स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर– शरद ऋतु में धरती एवं आकाश स्वच्छ हो जाते हैं। ऐसे में पतंग उड़ाते बच्चों का उल्लास एवं उत्साह देखने लायक हो जाता है। इस तरह प्रस्तुत कविता का प्रतिपाद्य ऋतु–सौन्दर्य के साथ बाल–मन के उल्लास व उत्साह का चित्रण करना रहा है।

**प्रश्न 134 'पतंग' कविता में शरद् ऋतु की क्या विशेषता बतायी गई है?**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर– 'पतंग' शीर्षक कविता में शरद् ऋतु की यह विशेषता बतायी गयी है कि इस ऋतु में आकाश स्वच्छ रहता है, धरती भी धुली हुई–सी रहती है। हवा मन्द–मन्द चलती है और धूप में ताजी चमक रहती है। यह ऋतु सुहावनी एवं आनन्ददायी लगती है।

**प्रश्न 135 "किशोर और युवा वर्ग समाज का मार्गदर्शक होता है।" 'पतंग' कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर– किशोर और युवा–वर्ग अपनी धुन में मनचाहा काम करता है। वे निडर होकर खतरों एवं बाधाओं का सामना कर साहस और हिम्मत के सहारे जीवन में उन्नति करना चाहते हैं। ऐसे निर्भीक, साहसी कार्य–कलापों से ही समाज को प्रगति का मार्गदर्शन मिलता है।

**प्रश्न 136. बच्चे और भी निडर कब हो जाते हैं?**

उत्तर– पतंग उड़ाते समय बच्चे जब कभी छत की खतरनाक दीवारों एवं मुंडेरों से नीचे गिर जाते हैं और उस दुर्घटना में चोटग्रस्त होने से बच जाते हैं, तब वे पूरी तरह निडर हो जाते हैं और फिर दुगुने जोश से पतंगें उड़ाने लगते हैं।

**प्रश्न 137. कविता 'पतंग' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं?**

उत्तर– 'पतंग' एक लम्बी कविता है। यह कविता आलोक धन्वा के एकमात्र काव्य–संग्रह 'दुनिया रोज बनती है' से ली गई है। पतंग के माध्यम से कवि ने बच्चों की पतंग उड़ानें की उत्साही प्रवृत्ति को बताया है। बाल–क्रीड़ाओं एवं प्रकृति में परिवर्तित सुंदर बिम्बों का उपयोग किया गया है। पतंग उड़ाना बच्चों का बहुरंगी सपना है। आसमान में उड़ती पतंगें बच्चों की इच्छाओं की उड़ान को गती देती है साथ ही निडर, सावधान व खतरों से खेलनें के लिए उत्साही बनाती हैं। गिर कर उठने का हौंसला तथा तुरंत तेज गति से फिर से अपने पतंगों के काटने, उड़ाने, ढील देने जैसे लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु तत्पर करती हैं। बच्चों का उत्साह प्रकृति को अपना साथ देने के लिए मजबूर कर देता है इसीलिए कवि ने कहा भी कि "पृथ्वी और भी तेज घुमती हुई आती है, उनसे बेचैन पैरों के पास।'



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**प्रश्न 138. कविता 'पतंग' में बिम्बों के द्वारा काव्य–सौन्दर्य प्रकट किया गया है। स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर– इस कविता में सुंदर बिम्बों के माध्यम से बच्चों की बाल–सुलभ चेष्टाओं का प्रभावी चित्रण हुआ है। काव्य में बिम्ब वह मानसिक चित्र है जो कल्पना द्वारा अनुभूत किया जाता है। यह इन्द्रियों पर आधारित होता है जिनकी सहायता से हम काव्य के मूर्त रूप की अनुभुति करते हैं। कविता में व्यक्त बिंब सौंदर्य निम्न है– शरद ऋतु की सुबह की तुलना खरगोश की लाल–भूरी आँखों से की गई है। शरद ऋतु को उत्साही बालक के समान बताया गया है। तितलियों की नाजुक दुनिया का बिंब पतंगों की रंग–बिरंगी कोमल दुनिया से बाँधा गया है। 'पतंग' कविता में बिंबों की रंगीन दुनिया चारों तरफ व्याप्त है, यह एक ऐसी दुनिया है जहां शरद ऋतु का चमकीला इशारा है, दिशाओं में मृदंग बजते हैं। इस तरह दृश्य, चाक्षुष, स्थिर, गतिशील और श्रव्य बिम्ब प्रस्तुत हुए हैं।

**प्रश्न 139. 'रोमांचित शरीर का संगीत' का जीवन के लय से क्या संबंध है?**

उत्तर– जब कोई व्यक्ति किसी काम में पूरी तरह निमग्न हो जाता है, तब उससे उत्पन्न खुशी और उत्साह रोमांच में बदल जाता है और उस रोमांच के कारण उस काम में एक लय आ जाती है। उस रोमांचित क्षण में वह लय एक संगीत की तरह अतीव आनन्ददायक लगती है। अतएव शरीर का संगीत रोमांच से सम्बंध रखता है।

**प्रश्न 140 'महज एक धागे के सहारे, पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ' उन्हें (बच्चों को) कैसे थाम लेती हैं? चर्चा करें।**

उत्तर– पतंग उड़ाते समय बच्चे डोरी को हिलाते और खींचते–छोड़ते रहते हैं। रहते हैं। इससे पतंग ऊँची उठती जाती है। बच्चे पतंग और ऊँची जावे, इस प्रयास में रहते हैं। इस क्रम में बच्चे छतों के किनारे तक आ जाते हैं तब पतंगों के उठने–बैठने का क्रम बच्चों को अनजान खतरों से दूसरी तरफ खींच कर ले जाती है। इसी कारण वे अपने हाथ में डोरी को थामे रखकर अतीव उत्साहित होते हैं।

**प्रश्न 141 'पतंगों के साथ–साथ वे भी उड़ रहे हैं। –बच्चों का उड़ान से कैसा संबंध बनता है?**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर– जब पतंगें उड़ती हैं, तो बच्चों का मन भी उनके साथ उड़ने लगता है। उनमें गतिशीलता आ जाती है और उमंग–उत्साह से भरकर वे छतों की दीवारों पर खतरनाक होने पर भी चढ़ जाते हैं। उनके शरीर में पतंगों के समान हल्कापन आ जाता है। इसी कारण कहा गया है कि पतंगों के साथ बच्चे भी उड़ते हैं।

**प्रश्न 142. 'सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें।**

उत्तर– भादों मास में बारिश की तेज बौछारें पड़ती हैं। भादों के बीतते ही बरसात का मौसम समाप्त हो जाता है। तब आकाश एकदम निर्मल और स्वच्छ बन जाता है। शरद् ऋतु प्रारम्भ हो जाती है और तब सवेरा खरगोश की लाल–भूरी आँखों के समान खिला–खिला तथा चमकीला लगता है। धरती पर धूल और रास्तों में कीचड़ नहीं रहता है । आसपास का सारा वातावरण चमकने लगता है। हवा भी शीतल और सुगन्धित बहने लगती है और फूल–पौधों पर तितलियाँ मँडराने लगती हैं। और पतंगबाजी का मौसम आ जाता है।

## (जैन्द्र कुमार) बाजार दर्शन

**प्रश्न 143 'वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते है' – 'बाजार–दर्शन' अध्याय के आधार पर बताइये कि 'वे लोग' किसके लिए कहा गया है और वे बाजारूपन कैसे बढ़ाते हैं ?**

उत्तर– 'वे लोग' का आशय है –क्य–श्शक्ति से सम्पन व्यक्ति । इस तरह के लोग अपनी क्य–श्शक्ति से अनावश्यक वस्तुओं की भी खरीददारी करते है । इस कारण बाजारवाद, छल–कपट, मनमान मूल्य लेना आदि प्रवृतियों को बल मिलता हैं । अतः असीमित पर्चेजिंग पावर रखने वाले लोग का बाजारूपन बढ़ाते हैं।

**प्रश्न 144 'बाजार में एक जादू है ।' लेखक के अनुसार बाजार का जादू किस पर नहीं चलता है ? बताइये ।**

उत्तर–जिन लोगो की क्य–शक्ति होने पर भी मन भरा हुआ हो अर्थात् उसमें किसी चीज को लेने का निश्चित लक्ष्य हो, उपयोग सामान खरीदने की जरूरत हो और अन्य कोई लालसा न हो ऐसे लोगों पर बाजार का जादू नहीं चलता है।

**प्रश्न 145. 'बाजार जाओं तो खाली मन न हो ।' इससे लेखकर का क्या आशय हैं ?**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

उत्तर–इसका आशय यह है कि मन में अमुक चीज लेने का लक्ष्य हो, मन उसी चीज तक सीमित हो तथा बाजार में फैली हुई नाना चीजों के प्रति कोई आकर्षण न हो । आवष्यकता की चीजें खरीदना, बाजार के आकार्षण से बचना और क्रय–शक्ति का दुरूप्योग न करना–इसी में बाजार की असली उपयोगिता हैं।

**प्रश्न 146 'ऐसे बाजार मानवता के लिए विडम्बना हैं।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा है ? स्पष्ट कीजिए ।**

उत्तर–लेखक बताता है कि जिसमें लोग आवश्यकता से अधिक सब कुछ खरीदने का दम्भ भरते हैं। अपनी पर्चेजिंग पावर से बाजार को पैसे की विनाशक शक्ति देते है, ऐसे बाजार में छल–कपट, लूट–खसोट और मनमाना व्यवहार बढ़ता हैं। लेखक ने ऐसे बाजार को मानवता के लिए विडम्बना बताया हैं।

**प्रश्न 147. चूरन वाले भगतजी पर बाजार का जादू क्यों नहीं चलता था ?**

उत्तर–भगतजी का चूरन प्रसिद्व था और हाथों–हाथ बिक जाता था । वे एक दिन में छह आने से अधिक नहीं कमाते थे और इतनी कमाई होते ही बाकी चूरन बच्चो में मुफ्त बाँट देते थें । वे बाजार से काला नमम और जीरा खरीदने जाते, तो सीधे पंसारी के पास जाकर खरीद लाते थें । उन पर चौक बाजार का न कोई आकर्षण रहता था और न कोई लालच बाजार की चकाचौंध से मुक्त रहने से ही उन पर उसका जादू नहीं चलता था।

**प्रश्न 148 पर्चेजिंग–पावर का रस किन दो रूपों में प्राप्त होता है? 'बाजार दर्शन' पाठ के आधार पर बताइए ।**

उत्तर– पर्चेजिंग–पावर का रस– 1. तरह–तरह की चीजें खरीदने, मकान, कार आदि सुख–विलास की चीजे खरीदने में प्राप्त होता है।

2. कुछ लोगो ऐसी चीजें खरीद लेते हैं, जिनकी उन्है जरूरत नहीं रहती है, परन्तु बाजार पर अपना रौब जमाने के लिए अथवा स्वयं को सम्पन्न बताने के लिए काफी कुछ खरीद लाते हैं और पर्चेजिंग–पावर के कारण गर्व एवं आनन्द का अनुभव करते हैं।

**प्रश्न 149 'पैसे की व्यग्य शक्ति ' से लेखक का क्या अभिप्राय है और यह किस प्रकार प्रभावित करती है?**

उत्तर–'पैसे की व्यंग्य शक्ति' मन से खाली अर्थात मन से कमजोर व्यक्ति पर अपना प्रभाव डालती है। लेखक ने एक उदाहरण द्वारा बताया है कि जैसे कोई पैदल चल रहा है और उसके पास से धूल उड़ाती मोटर पैदल चलते व्यक्ति को अपनी शक्ति बताती है। यही व्यंग्य शक्ति है कि पैदल चलते व्यक्ति के मन में हीनता के



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

भाव उत्पन्न होते हैं। वह सोचने को विवश हो जता है कि उसने अमीर के घर जन्म लिया? पैसे की शक्ति अपने सगों के प्रति कृतधन बना देती हैं। उसे उसका जीवन विडम्बना से पूर्ण बताती है कि तुम मुझसे वंचित हो और तुम इसीलिए दुःखी व परेशान है। यह पैसे की व्यंग्य शक्ति मन से कमजोर व्यक्ति को ही विचलित करती है 'भगतजी' जैसे व्यक्तियों को नहीं, जिनके मन में बल है, शक्ति है, जो पैसे के तीखें व्यंग्य के आगे अजेय ही नहीं रहता वरन् उस व्यंग्य की क्रूरता को पिघला भी देता हैं।

**प्रश्न 150. जैनेन्द्र कुमार के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय संक्षेप में दीजिए।**

उत्तर–लेखक जैनेन्द्र कुमार का जन्म 1905 ई. में अलीगढ़ में हुआ था। बचपन में पिता का देहान्त होने पर मामा द्वारा लालन–पालन हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा हस्तिनापुर के गुरूकुल तथा उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से हुई इनकी प्रसिद्व रचनाएँ परख, अनाम, स्वामी, सुनीता, त्यागपत्र, कल्याणी, जयवर्द्धन, मुक्तिबोध ;उपन्यासद्धरू संग्रह वातायन, एक रात, दो चिड़िया, फॉसी, नीलम देश की राजकन्या, पाजेब (कहानी–संग्रह); प्रस्तुत प्रश्न, जड़ की बात पूर्वोदय, साहित्य का श्रेय और प्रेय, सोच–विचार (निबन्ध संग्रह) आदि हैं। इन्होंने अपने उपन्यासों एवं कहानियों के माध्यम से एक सशक्त मनोवैज्ञानिक कथा–धारा की शुरूआत की। साहित्य रचना के दौरान इन्हे पद्विभूषण, भारत –भारती तथा साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। देहान्त सन् 1990 में हुआ था।

**प्रश्न 151. 'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते है। अथवा बाजार की सार्थकता किसमें है।**

उत्तर–'बाजारूपन' का आशय है–उपरी चमक–दमक और कोरा दिखावा अर्थात व्यवहार का सस्तापन, जिसके लिए व्यक्ति किसी भी स्तर पर उतर आता है। इसी तरह व्यापारी बेकार की चीजो को आकर्षक बनाकार ग्राहकों को ठगने लगते हैं तो वहॉ बाजारूपन आ जाता है। ग्राहक भी जब क्रय–शक्ति के गर्व में अपने पैसे से गैर–जरूरी चीजों को भी खरीद कर विनाशक शैतानी–शक्ति को बढ़ावा देते है, तो वहॉ भी बाजारूपन बढ़ता है। इस प्रवृति से न हम बाजार से लाभ उठा पाते हैं और न बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। जो लोग बाजार की चकाचौंध में न आकार अपनी आवष्यकता की ही वस्तुएँ खरीदते हैं, इसी प्रकार दुकानदार भी ग्राहकों को उचित मूल्य पर आवश्यकतानुसार चीजें बेचते हैं, उन्हें लोभ–लालच में रखकर ठगते नहीं हैं, इसमें भी बाजार की सार्थकता है।

**प्रश्न 152 कवि गजानन माधव मुक्तिबोध / लेखिका महादेवी वर्मा का जीवन परिचय लिखिए |**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**उत्तर : कवि परिचय - गजानन माधव मुक्तिबोध**

नयी कविता को अर्थवत्ता प्रदान करने वाले कवि गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म सन् 1917 ई. में श्योपुर, ग्वालियर (मध्यप्रदेश) में एक थानेदार के घर में हुआ। इनके पिता माधव राव न्यायप्रिय एवं कर्मठ व्यक्ति थे। अपने पिता के व्यक्तित्व के प्रभाव से मुक्तिबोध में ईमानदारी, न्यायप्रियता और दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रतिफलन हुआ। ये किशोरावस्था से ही यायावरी बन गये। उज्जैन में इन्होंने मध्य भारत प्रगतिशील लेखक संघ की नींव डाली। नागपुर से 'नया खून' साप्ताहिक का सम्पादन किया, फिर अध्यापन कार्य अपनाया और दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगाँव में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। मुक्तिबोध मार्क्सवादी चिन्तनधारा से प्रभावित रहे। अन्तर्मुखी प्रवृत्ति तथा जीवन की विषमताओं के कारण इनका व्यक्तित्व जटिल बना, जिसका प्रभाव उनकी कविताओं पर भी पड़ा। शिल्प की दृष्टि से ये बिम्ब विधान के पक्षधर रहे हैं ।

मुक्तिबोध का रचनात्मक व्यक्तित्व बहुआयामी रहा। इनकी कविताएँ सर्वप्रथम अज्ञेय द्वारा सन् 1943 में सम्पादित तार सप्तक' में प्रकाशित हुईं। इनकी कविताओं के संग्रह हैं—'चाँद का मुँह टेढ़ा है' और 'भूरी-भूरी खाक धूल'; इनका कथा-साहित्य है-'विपात्र', 'सतह से उठता आदमी' तथा 'काठ का सपना'। इनकी आलोचनात्मक कृतियाँ हैं—'कामायनी एक पुनर्विचार', 'नयी कविता के आत्मसंघर्ष', 'नये साहित्य का सौन्दर्य-शास्त्र', 'समीक्षा की समस्याएँ' तथा 'एक साहित्यिक की डायरी'। मुक्तिबोध के समस्त साहित्य को 'मुक्तिबोध रचनावली' नाम से छः खण्डों में प्रकाशित है। इनका देहावसान सन् 1964 ई. में हुआ।

लेखिका परिचय- महादेवी वर्मा

साहित्य-रचना एवं समाज-सेवा के क्षेत्र में महादेवी वर्मा का आदरणीय स्थान रहा है। हिन्दी | साहित्य में रेखाचित्र एवं संस्मरण विधा को आगे बढ़ाने में इनका अनुपम योगदान रहा है। अपने सम्पर्क में आने वाले | व्यक्तियों, साहित्यकारों, जीव-जन्तुओं आदि का संवेदनात्मक चित्रण कर महादेवी ने अतीव मार्मिकता प्रदान की है। ये छायावादी युग की नारी-संवेदना से मण्डित कवयित्री रही हैं। इनकी कविताओं में आन्तरिक वेदना और पीड़ा की | मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है, जिससे वे इस लोक से परे किसी अव्यक्त सत्ता की ओर अभिमुख दिखाई देती हैं। इनकी प्रतिभा कविता और गद्य इन दोनों में अलग-अलग स्वभाव लेकर सक्रिय रही है। गद्य के क्षेत्र में इनका दृष्टिकोण सामाजिक सरोकार के प्रति संवेदनामय रहा है|

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 में फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में तथा निधन सन् 1987 ई. में इलाहाबाद हुआ। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं-नीहार, नीरजा, रश्मि, सान्ध्यगीत, दीपशिखा तथा यामा (काव्य-संग्रह), | अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी और मेरा परिवार (संस्मरण-रेखाचित्र), श्रृंखला की कड़ियाँ, आपदा, संकल्पिता, भारतीय संस्कृति के स्वर इत्यादि (निबन्ध-संग्रह) ये ज्ञानपीठ पुरस्कार, भारत भारती पुरस्कार तथा पद्मभूषण से सम्मानित हुई हैं।

**.प्रश्न 153 कवि शमशेर बहादुर सिंह / लेखक धर्मवीर भारती का जीवन परिचय लिखिए |**

**उत्तर : कवि परिचय- शमशेर बहादुर सिंह**

शमशेर बहादुरसिंह का जन्म सन् 1911 ई. में देहरादून में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा देहरादून में हुई तथा इलाहाबाद से बी.ए. उत्तीर्ण कर ये उकील बन्धुओं से चित्रकला का प्रशिक्षण लेने दिल्ली में उनके विद्यालय में प्रविष्ट हुए। फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. किया और 'रूपाभ' पत्रिका में सहायक सम्पादक बने। तत्पश्चात् 'कहानी', 'नयी



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कहानी', 'कम्यून', 'माया', 'नया पथ' आदि अनेक पत्रिकाओं के सम्पादन में सहयोग किया। दिल्ली विश्वविद्यालय में यू.जी.सी. की योजना के अन्तर्गत 'उर्दू-हिन्दी कोश' का सम्पादन किया। सन् 1981-85 तक विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन में प्रेमचन्द सृजनपीठ के अध्यक्ष रहे। उन्होंने सन् 1932-33 में लिखना प्रारम्भ किया। इनकी प्रारम्भिक रचनाएँ 'सरस्वती' एवं 'रूपाभ' में प्रकाशित हुई। इन्हें 'दूसरा सप्तक' का प्रमुख कवि माना जाता है। सन् 1993 में इनका दिल्ली में निधन हुआ

शमशेर बहादुर सिंह पर मार्क्सवादी और प्रयोगवादी दोनों प्रभाव देखने को मिलते हैं। प्रेम, सौन्दर्य, वर्ग-चेतना के साथ जीवन-मूल्यों को इन्होंने विशेष महत्त्व दिया है। इनकी प्रकाशित रचनाएँ हैं—'कुछ कविताएँ', 'कुछ और कविताएँ', 'चुका भी हूँ नहीं मैं', 'इतने पास अपने', 'बात बोलेगी', 'काल तुझसे होड़ है मेरी' आदि। इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, तुलसी पुरस्कार और कबीर सम्मान आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

**लेखक परिचय- धर्मवीर भारती**

स्वातन्त्र्योत्तर साहित्यकारों में अग्रणी स्थान रखने वाले धर्मवीर भारती का जन्म इलाहाबाद नगर में सन् 1926 ई. में हुआ। वहीं से उच्च शिक्षा प्राप्त कर ये स्वावलम्बी बने। 'अभ्युदय' और 'संगम' पत्रों का सम्पादन सहयोग करने के बाद ये प्रयाग विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक बने। कुछ समय बाद विश्वविद्यालय की नौकरी छोड़कर मुम्बई चले गये और वहाँ 'धर्मयुग' पत्रिका का सम्पादन करने लगे। इन्हें 'दूसरा सप्तक' के कवियों में स्थान प्राप्त हुआ। इन्होंने अपनी रचनाओं में व्यक्ति स्वातन्त्र्य, मानवीय संकट तथा रोमानी चेतना को अभिव्यक्ति दी है। इनकी रचनाओं में सामाजिक चेतना के साथ संगीत की लय मिलती है। इस विशेषता से ये रोमानी गीतकार माने जाते हैं। इन्हें पद्मश्री, व्यास सम्मान एवं साहित्य जगत् के कई अन्य राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए। भारतीजी का निधन सन् 1997 ई. में हुआ।

रचनाएँ-इन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, गीतिनाट्य और रिपोर्ताज आदि सभी में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं—'कनुप्रिया', 'सात गीत-वर्ष', 'ठंडा लोहा' काव्य-संग्रह; 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', 'गुनाहों का देवता' उपन्यास; 'अंधा युग' गीतिनाट्य; 'मुर्दों का गाँव', 'चाँद और टूटे हुए लोग', 'बन्द गली। का आखिरी मकान' कहानी संग्रह; 'ठेले पर हिमालय', 'कहनी-अनकहनी', 'पश्यन्ती', 'मानव मूल्य और साहित्य' निबन्ध-संग्रह।

CBEO BHINDER

**प्रश्न 154 कवि फिराक गोरखपुरी / लेखक विष्णु खरे का जीवन परिचय लिखिए |**

**उत्तर - कवि परिचय- फिराक गोरखपुरी**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

फिराक गोरखपुरी का मूल नाम रघुपति सहाय फिराक है। इनका जन्म सन् 1896 ई. में गोरखपुर में हुआ। इनकी शिक्षा रामकृष्ण की कहानियों से प्रारम्भ हुई। बाद में अरबी-फारसी और अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त की। सन् 1917 में डिप्टी कलेक्टर के पद पर चयनित हुए, परन्तु एक वर्ष बाद स्वराज्य आन्दोलन के लिए वह नौकरी त्याग दी। स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने से डेढ़ वर्ष जेल में रहे। फिर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में अध्यापक रहे। इनका निधन सन् 1983 ई. में हुआ। साहित्य-रचना की दृष्टि से ये शायरी, गजल एवं वाइयों की ओर आकृष्ट रहे। वस्तुतः उर्दू शायरी का सम्बन्ध रूमानियत, रहस्य और शास्त्रीयता से बँधा रहा है, जिसमें लोक जीवन एवं प्रकृति का चित्रण नाममात्र का मिलता है। फिराक गोरखपुरी ने सामाजिक दुःख-दर्द को व्यक्तिगत अनुभूतियों के रूप में शायरी में ढाला है। इन्होंने भारतीय संस्कृति और लोकभाषा के प्रतीकों को अपनाकर इंसान की विवशताओं एवं भविष्य की आशंकाओं को सच्चाई के साथ अभिव्यक्ति दी है। मुहावरेदार भाषा तथा लाक्षणिक प्रयोग करते हुए इन्होंने मीर और गालिब की तरह अपने भाव व्यक्त किये हैं।

**फिराक गोरखपुरी की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हैं**—'गुले नग्मा', 'बज्मे जिन्दगी', 'रंगे शायरी', 'उर्दू गजलगोई'। "गुले नग्मा' पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार और सोवियत लैण्ड नेहरू अवार्ड प्राप्त हुआ। इनकी रुबाइयों का हिन्दी साहित्य में विशेष महत्त्व है।

**लेखक-परिचय- विष्णु खरे**

समकालीन हिन्दी कविता और आलोचना के विशिष्ट साहित्यकार विष्णु खरे का जन्म सन् 1940 ई. में छिंदवाड़ा (म.प्र.) में हुआ। इन्होंने हिन्दी जगत् को गहरी विचारात्मक कविताएँ दी हैं, तो साथ ही |बेबाक आलोचनात्मक लेख भी लिखे हैं। ये विश्व-सिनेमा के गहरे जानकार हैं और पिछले कई वर्षों से सिनेमा की विधा पर लगातार गम्भीर लेखन करते रहे हैं। विदेश प्रवास के दौरान प्राग के प्रतिष्ठित फिल्म क्लब की सदस्यता प्राप्त कर संसार भर की सैकड़ों फिल्में देखीं। यहीं से इन्होंने सिनेमा-लेखन प्रारम्भ किया। 'दिनमान', 'जनसत्ता', 'हंस', 'कथादेश', 'नवभारत टाइम्स' आदि पत्र-पत्रिकाओं में इनका सिनेमा-विषयक लेखन प्रकाशित होता रहा है। इन्होंने फिल्म को समाज, समय और विचारधारा की कसौटी पर कसने का प्रयास किया है तथा अभिनय, निर्देशन आदि का सूक्ष्म दृष्टि से विश्लेषण किया है। अपने लेखन से इन्होंने हिन्दी में सिनेमा विश्लेषण के अभाव को दूर किया है। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'एक गैर-रूमानी समय में', 'खुद अपनी आँख से', 'सबकी आवाज के पर्दे में', "पिछला बाकी' (कविता संग्रह); 'आलोचना की पहली किताब' (आलोचना), 'सिनेमा पढ़ने के तरीके', 'मरु | प्रदेश और अन्य कविताएँ', 'यह चाकू समय', 'कालेवाला' अनुवाद आदि। इन्हें हिन्दी अकादमी सम्मान, शिखर सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, रघुवीर सहाय सम्मान आदि से पुरस्कृत होने का सुअवसर मिला है। पाठ-सार-यह पाठ हास्य फिल्मों के महान् अभिनेता और निर्देशक चार्ली चैप्लिन के कलाकर्म की विशेषताओं पर आधारित है। इसका सार इस प्रकार है

**प्रश्न 155 सिल्वर वैडिंग कहानी का मुख्य पात्र है–**

(अ) किशन दा (ब) यशोधर बाबू (स) यशोधरा (द) विनीत झा **(ब)**

**प्रश्न 156 लोग यशोधर बाबू को किसका मानक पुत्र मानते थे–**



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

(अ) चन्द्रमोहन का (ब) राजेश्वर दत्त का (स)किशन दा का (द) धनेश मोहन का **(स)**

**प्रश्न 157 यशोधर बाबू को सिल्वर वैडिंग के आयोजन को मानते थे–**

(अ) पारंपरिक (ब) समायानुकूल (स) उत्कृष्ट (द) विदेशी परम्परा **(द)**

**प्रश्न 158 यशोधर बाबू के कार्यालय में सीधा असिस्टेंट ग्रेड से सलेक्ट होकर आया है–**

(अ) चड्डा (ब) दास गुप्ता (स)झा (द) तिवारी **(अ)**

**.प्रश्न 159 किशन दा के चरित्र का सबसे उज्जवल पक्ष है–**

(अ) ऊँची नौकरी (ब) सुविधाभोगी (स) मिलनसरिता (द) आश्रितों की खैर–खबर रखना **(द)**

**.प्रश्न 160 रिक्त स्थानों की पुर्ति उचित शब्दों में कीजिए–**

(i) यशोधरा बाबू मैट्रिक पास करते ही **किशन दा** के क्वार्टर में आकर रहने लगे थे। (किशनदा/शिशिर मोहन)
(ii) सिल्वर वैडिंग कहानी में आदर्श और यथार्थ तथा पीढ़ियों के **अन्तर्विरोधी** को उजागर किया गया है। (समन्वय/अन्तर्विरोधी)
(iii) यशोधर बाबू को बेटी को पहनावा **समहाउ प्रॉपर** लगता था (समहाउ प्रॉपर/शालीन)
(iv) सिल्वर वैडिंग पार्टी आयोजित हुई लेकिन यशोधर बाबू ने उसमे **अधूरे मन से** भाग लिया। (पुरे मन से/अधूरे मन से)

**प्रश्न 161 सिल्वर वैडिंग कहानी के कहानीकार का नाम लिखिए।**

**उत्तर–** मनोहर श्याम जोशी

**प्रश्न 162 सिल्वर वैडिंग कहानी के मुख्य पात्रों के नाम लिखिए।**

**उत्तर–** यशोधर बाबू, किशन दा

**प्रश्न 163 यशोधर बाबु ने अपनी पत्नी में समय के अनुसार क्या परिवर्तन देखे ?**

**उत्तर–**यशोधर बाबू की पत्नी बुढ़ापे में भी बगैर बांह का ब्लाउज पहनती थी, ऊँची हील की सेन्डिल पहनती थी, होठों पर लाली और बालों में खिजाब लगती थी।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**प्रश्न 164 यशोधर बाबू ने किशनदा के गाँव चले जाने के बाद कौन–कौनसी परम्पराओं का पालन किया था?**

**उत्तर–** घर में होली गवाना, जन्यों पुन्यू के दिन सभी कुमाउँनियों के जनेऊ बदलने के लिए अपने घर बुलाना, रामलीला की तालीम के लिए तालीम के क्वार्टर का एक कमरा दे देना।

**प्रश्न 165 सिल्वर वैडिंग पाठ के यशोधर बाबू समय के साथ टल सकने में असफल रहते है, ऐसा क्यो?**

**उत्तर–** यशोधर बाबू पुरानी परम्पराओं को मानते है उन्हे आधुनिक पहनावे पश्चिमी जीवन शैली तथा रहन सहन से नफरत है अतः ढल सकने में असफल है।

**प्रश्न 166 यशोधर बाबू अपने बच्चों से क्या अपेक्षा रखते थे? सिल्वर वैडिंग के आधार पर–**

**उत्तर–** संयूक्त परिवार में रहना, अपने रिश्तेदारों की आर्थिक मदद करना आदि उनकी जीवन शैली के अंग थे। इसी व्यवहार की अपेक्षा वे अपने बच्चों से भी करते थे।

**प्रश्न 167 यशोधर बाबू की विशेषताओं को लिखिए–**

**उत्तर–** (1) नियमित दिनचर्या (2) सरल जीवन त्याग भावना (3) परम्परा के संरक्षक

**प्रश्न 168 यशोधर बाबू दफ्तर में अपने मातहतों से कैसा व्यवहार करते थे?**

**उत्तर–** यशोधर बाबू अपने मातहतों से दफ्तर में एक दुरी बनाकर रखते थे वे हल्की चुटीली बात कहकर सभी बाबूओं के मुस्कराने को मजबूर करते थे।

**प्रश्न 169 सिल्वर वैडिंग की मूल संवेदना पर स्पष्ट मत दीजिए–**

**उत्तर–** यशोधर बाबू अपने पिता, रिश्तेदारों, धार्मिक अनुष्ठानों आदि का तिरस्कार करते है लेखक ने पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से ग्रसित युवा पीढ़ी और पुरानी रूढ़ियों से प्रभावित पुरानी पीढ़ी के संघर्ष का चित्रण कर दोनो में समन्वय करने का संदेश दिया है।

**प्रश्न 170 कहानी के शीर्षक 'जूझ' का क्या अर्थ है ?**

**उत्तर-** कहानी के शीर्षक 'जूझ' का अर्थ है- संघर्ष।

**प्रश्न 171 'जूझ' उपन्यास मूलतः किस भाषा में रचित है?**

**उत्तर–**'जूझ' उपन्यास मूलतः मराठी भाषा में रचित है।

**.प्रश्न 172 'जूझ' उपन्यास का नायक पढ़ाई क्यों करना चाहता था ?**

**उत्तर-** यदि पाठशाला जाकर कुछ पढ़-लिख लेगा तो कहीं भी नौकर हो जायेगा जिससे चार पैसे हाथ में भी रह सकेंगे और वह गाँव के ही एक धनी किसान बिठोबा की तरह कुछ अन्य धंधा-कारोबार भी कर सकेगा।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**प्रश्न 173 वसंत पाटील से दोस्ती होने के बाद लेखक के व्यवहार में कौन-से परिवर्तन हुए ?**

**उत्तर-** लेखक की दोस्ती वसंत पाटील से हो गई। वह भी गणित में होशियार हो गया। अब दोनों मिलकर कक्षा के अन्य बालकों के सवाल जाँचने लगे थे।

**प्रश्न 174 "अकेलापन अथवा एकान्त मनुष्य को योग्य बनाता है।" सिद्ध कीजिए।**

**उत्तर-** एकान्त में मनुष्य की एकाग्रता बढ़ जाती है और वह अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित हो जाता है।

**प्रश्न 175 लेखक आनंद यादव संघर्ष करके जीवन को उत्कृष्ट बनाता है। आप इससे कहाँ तक सहमत हैं? 'जूझ' उपन्यास के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** 'जूझ' उपन्यास का अंश होने से यह बात तो स्वतः सिद्ध होती है कि कहानी का नायक एक योद्धा की तरह संघर्ष करके ही अपने जीवन को योग्य बनाता है। उदाहरण के लिए, उसके मन में पढ़ाई करने की इच्छा बलवती होती है। वह अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता है। वह जानता है कि उसका पिता अपने स्वार्थ के कारण उसको खेती में जोतता है और स्वयं इधर-उधर घूमता रहता है। वह संघर्ष करता है, उसकी माँ साथ देती हैं, वे राव-साहब के पास जाते हैं, वह उसे न पढ़ाने के लिए उसके पिता को बुलाकर डाँटते हैं। इस प्रकार उसके पढ़ाई का मार्ग खुल जाता है। जल्दी ही वह कक्षा में प्रथम बन जाता है।

**प्रश्न 176 "उलटा अब तो ऐसा लगने लगा कि जितना अकेला रहूँ उतना अच्छा।" कथन के अनुसार आनन्द यादव को अकेला रहना कब से अच्छा लगने लगा ? स्पष्ट कीजिए।**

**उत्तर-** खेत पर काम करते अथवा ढोर चराते समय आनन्द यादव को अकेला रहना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। उसे किसी साथी की जरूरत हमेशा होती थी। जब से उसने स्कूल जाकर पढ़ाई शुरू की थी, उसका ध्यान कविता की ओर हो गया था। वह खेत पर पानी लगाते समय एकान्त में मास्टर से सुनी कविताओं को सस्वर गाता था। मास्टर बैठे-बैठे जैसा अभिनय करते थे, वैसा ही अभिनय वह भी करता था। अब उसे अकेलापन अच्छा लगता था। अकेला रहकर वह ऊँची आवाज में कविता गा सकता था, अभिनय कर सकता था और गाते-गाते नाच भी सकता था। यह सब करने का अवसर उसे अकेला रहने के कारण ही मिलता था। अतः उसे अब अकेलापन बुरा नहीं अच्छा लगता था। वह सोचता था कि जितना अकेला रहूँ उतना अच्छा।

**प्रश्न 177 'जूझ' कहानी के आधार पर समझाइए कि लेखक आनंद यादव की मराठी भाषा कैसे सुधरने लगी?**

**उत्तर-** आनंद यादव के स्कूल में सौंदलगेकर नामक शिक्षक थे। वह मराठी भाषा पढ़ाते थे। वह कवि भी थे। कक्षा में कविताएँ गाकर सुनाते भी थे। आनन्द यादव की रुचि उनकी प्रेरणा से कविता की ओर बढ़ी। वह स्वयं कविता लिखता और उनको दिखाता। वे उसमें सुधार करते। धीरे-धीरे आनन्द की उनके प्रति आत्मीयता बढ़ी। आनंद उनके घर जाने लगा। मास्टर जी उसको कवि की भाषा के बारे में समझाते थे। छंद और अलंकारों के बारे में बताते थे। शुद्ध लेखन का ढंग बताते थे तथाअन्य अनेक बातें बताते रहते थे। वे लेखक को पुस्तकें तथा कविता-संग्रह पढ़ने के लिए देते थे। इन बातों तथा सौंदलगेकर से निकटता और अपनापन होने के कारण आनन्द यादव का मराठी भाषा का ज्ञान बढ़ता गया तथा जाने-अनजाने पर उसकी मराठी भाषा सुधरने लगी। सौंदलगेकर का मराठी भाषा पढ़ाने का ढंग अत्यन्त रोचक था। वह अत्यन्त तन्मयता के साथ मराठी पढ़ाते थे। उनका व्यवहार भी छात्रों के प्रति स्नेहपूर्ण था। अतः लेखक के जीवन पर उनका सर्वाधिक प्रभाव पड़ा।



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

**प्रश्न 178 लेखक आनन्द यादव के छात्र-जीवन से क्या-क्या शिक्षा मिलती है?**

**उत्तर-**'जूझ' कहानी की प्रेरणादायी संघर्ष गाथा है। विपरीत पारस्थितियों में माँ को साथ लेकर दत्ताराव को समझाता है, दादा से पढ़ने की अनुमति प्राप्त करता है। खेत में कठोर मेहनत करता हैं विद्यालय में भी कठिनाइयों का सामना करता है। सभी संघर्षों पर विजय पाते हुए लेखक सफलता प्राप्त करता है। 'जूझ' उपन्यास का लेखक आत्मकथात्मक शैली में किशोर मन की उलझनों को अपने ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान कर किशोर छात्रों को हर बाधा को पार करके भी पढ़ाई करने और लगन के साथ पढ़कर कक्षा में प्रथम आने की प्रेरणा देता है। साथ ही लेखक का उद्देश्य विद्यार्थियों के मन में यह भाव भी उत्पन्न करना है कि अपने योग्य अध्यापकों से केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं वरन् अन्य गुण जैसे कविता करना आदि भी ग्रहण करना चाहिए। कथानायक अपने मराठी के अध्यापक सौंदलगेकर से कविता करना सीखता है और उनसे भी अच्छा कवि बन जाता है।

कथानायक पढ़ाई में बाधक अपने पिता (दादा) को समझाने के लिए दत्ता राव सरकार की सहायता लेता है। यह उसकी चतुराई ही है कि वह दादा को समझाने के लिए दत्ता राव सरकार को और दत्ता राव को समझाने के लिए अपनी माता को तैयार करता है। इस युक्ति से वह अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है। अतः हर किशोर को अपने छोटे होने की हीनग्रन्थि को त्यागकर अपने अन्दर आत्म-विश्वास पैदा करना चाहिए।

इस प्रकार कथानायक अपनी लगन, परिश्रम और बुद्धिमत्ता से कक्षा में योग्य छात्र वसंत पाटील की बराबरी कर लेता है और उससे भी आगे कवि-अध्यापक सौंदलगेकर से कविता करना सीखकर अपनी योग्यता का परिचय देता है। इस प्रकार इस उपन्यास की रचना का उद्देश्य किशोरों की व्यक्तिगत समस्याओं को स्वयं संघर्ष करके सुलझाने की प्रेरणा देने के साथ-साथ उन्हें योग्य विद्यार्थी बनाना भी है।

CBEO BHINDER



Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

# सूर्यकांत त्रिपाठी ''निराला''

प्र.1 कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी (निराला) का जन्म कब और कहॉ हुआ था?

उत्तर– कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' का जन्म सन् 1899 में महिषादन (बंगाल के मेदिनीपुर जिले में) में हुआ था।

प्र.2 सूर्यकान्त त्रिपाठी की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखो।

उत्तर– सूर्यकान्त त्रिपाठी की प्रमुख रचनाएँ अनामिका, परिमल गीतिका, बेला, नए पत्ते, अणिमा, तुलसीदास, कुकुरमुना कविता संग्रह, चतुरी चमार, प्रभावती बिल्लेसूर, बिकरिहा, चोटी की पकड़, काले कारनामे, गद्य आठ खण्डों में ''निराला रचनावली''

प्र.3 सूर्यकान्त त्रिपाठी की मृत्यु कब हुई थी?

उत्तर– सूर्यकान्त त्रिपाठी की मृत्यु सन् 1961 इलाहाबाद में हुई थी।

प्र.4 'बादल राग' किस काव्य संग्रह से लिया गया है?

उत्तर– 'बादल राग' अनामिका काव्य संग्रह से लिया गया है।

प्र.5 सूर्य कान्त त्रिपाठी ''निराला'' ने बादलों को किसका प्रतीक बताया गया है?

उत्तर– सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' ने बादलों को क्रान्ति का प्रतीक बताया जो नव जीवन का आह्वान कर रहे हैं।

प्र.6 कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' के अनुसार स्थायी दुनिया में कौनसी चीज स्थायी नहीं होती है?

उत्तर– कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' के अनुसार दुनिया में सुख स्थायी नहीं होता है।

प्र.7 पृथ्वी में सोए हुए अंकुरों पर किसका प्रभाव पड़ता है?

उत्तर– पृथ्वी में सोए हुए अंकुरों पर बादलों की गर्जना का प्रभाव पड़ता है।

प्र.8 ''गगन स्पर्शी स्पर्द्धा धीर'' किसे कहॉ गया हैं?

उत्तर– ''गगन स्पर्शी स्पर्द्धा धीर'' पूँजीपतियों को कहा गया है।

प्र.9 लघुभार–शक्य अपार किनके प्रतीक है?

उत्तर– लघुभार–शक्य अपार लघुभार वाले छोटे–छोटे पौधे, किसान, मजदूर वर्ग के प्रतीक हैं।

प्र.10 वज्रपात करने वाले भीषण बादलों का छोटे पौधे कैसे आह्वान करते हैं?

उत्तर– वज्रपात करने वाले भीषण बादलों का आह्वान छोटे पौधे हिल–हिलकर, खिल–खिलकर तथा हाथ हिलाकर करते हैं।

प्र.11 ''विप्लव रव से छोटे ही शोभा पाते'' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– क्रान्ति से निम्न दलित वर्ग को अपने अधिकार प्राप्त होते हैं।

प्र.12 पूँजीपतियों को किस बात का डर होता हैं?

उत्तर– पूँजीपतियों को डर समय अपने खिलाफ क्रान्ति का डर होता है।

प्र.13 कवि निराला ने किसे किचड़ तथा किसे जल प्लावन कहा हैं?

उत्तर– कवि निराला ने पूँजीपतियों को कीचड़ कहा है और क्रान्ति को जल प्लावन कहा हैं।

प्र.14 कविता 'बादल राग' में कवि ने किसके शोषण का वर्णन किया है?

उत्तर– कविता 'बादल राग' में कवि ने किसानों के शोषण का वर्णन किया है।

प्र.15 ''पंक'' और 'अट्टालिका' किसके प्रतीक है?

उत्तर– ''पंक'' आम आदमी का प्रतीक है और 'अट्टालिका' शोषक पूँजीपतियों का प्रतीक है।

प्र.16 पृथ्वी में सोए हुए अंकुरों पर बादलों की गर्जना का क्या प्रभाव पड़ता हैं?

उत्तर– पृथ्वी में सोए हुए अंकुरों पर बादलों की गर्जना सुनकर नया जीवन पाने की आशा से सिर ऊंचा करके प्रसन्न होने लगते हैं।

प्र.17 कवि ने धनिकों के लिए किन–किन विशेषताओं का प्रयोग किया हैं?

उत्तर– कवि ने धनिकों के लिए रूद्ध, आतंक, त्रस्त आदि विशेषणों का प्रयोग किया है।

प्र.18 शैशव का सुकुमार शरीर किसमें हंसता रहता हैं?

उत्तर– शैशव का सुकुमार शरीर रोग, शोक में भी हॅसता रहता है।

प्र.19 सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' के अनुसार क्रान्ति का आगाज कौन करता है?

उत्तर– सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' के अनुसार क्रान्ति का आगाज बादल करते हैं।

प्र.20 'विप्लव के वीर' किसे कहा गया है?

उत्तर– 'विप्लव के वीर' बादलों को कहा गया है।

प्र.21 ''जीवन के पारावार'' किसे कहॉ गया है?

उत्तर– ''जीवन के पारावार'' बादलों को कहा गया है ।

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

**लघुतरात्मक प्रश्न–**

प्र.22 कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' ने किसे दुःख की छाया कहा है?

उत्तर– कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' ने पूँजीपतियों द्वारा समाज में किए जाने वाले अत्याचार और गरीबों के साथ किए गए शोषण को दुःख की छाया कहॉ हैं।

प्र.23 'अस्थिर सुख पर दुःख की छाया' पंक्ति का अर्थ बताइये।

उत्तर– जिस प्रकार वायु अस्थिर हैं। बादल स्थायी है। उसी प्रकार मानव जीवन में सुख अस्थिर होते है तथा दुःख स्थायी होते हैं।

प्र.24 ''यह तेरी रण– तरी भरी आकाक्षांओं से'' का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– इस पंक्ति का आशय है कि जिस प्रकार युद्ध के लिए प्रयोग की जाने वाली नाव विभिन्न हथियारों से सज्जित होती हैं। उसी प्रकार बादलों की युद्ध रूपी नाव में जन साधारण की इच्छाएं या मनोवांछित वस्तुएँ भरी हैं, जो बादलों के बरसने से पूरी होगी।

प्र.25 निराला की 'बादल राग'' कविता का प्रतिपाघ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– निराला की 'बादल राग' में शोषित–पीड़ित कृषकों, श्रमिकों के जीवन में परिवर्तन लाने तथा सामाजिक क्रान्ति के द्वारा पूँजीपतियों के शोषित आचरण का विरोध करना है। इसमे सामाजिक क्रांति एवं बदलाव का संदेश दिया गया है।

प्र.26 'हृदय थाम लेता संसार' संसार किस कारण हृदय थाम लेता है?

उत्तर– जब बादल राग के रूप में सामाजिक क्रांति का स्वर सुनाई देता है तथा क्रांति के कारण बड़े धनवानों का पतन होने लगता है, तब संसार भय के कारण हृदय थाम लेता है।

प्र.27 'सुप्त अंकुर उर में पृथ्वी के, ताक रहे'' – इससे कवि ने क्या व्यंजना की है?

उत्तर– बादलों के बरसने से अंकुर धरती से बाहर आकर पल्लवित– पुष्पित होकर जीवन का लाभ प्राप्त कर सकेगा। इस कथन से कवि ने व्यंजना की है कि क्रांति आने से समाज में दबे शोषित–पीड़ित लोग उन्नति की आशा लगाये हुए बैठे है।

प्र.28 ''अट्टालिका नहीं है रे आंतक–भवन''। 'बादल राग' की इस पंक्ति में भाव क्या है?

उत्तर– कवि कहता है कि धनिक वर्ग की यह अट्टालिका सुख–सुविधा देने वाली न होकर गरीबों का शोषण करके उन पर आंतक फैलाने वाली या आंतक का प्रतीक है। इनकी ऊँचाईयां ही गरीबों में भय उत्पन्न करती है।

प्र.29 ''रूद्र कोष है क्षुब्ध तोष' इससे कवि का क्या आशय है?

उत्तर– कवि का आशय यह है कि धनवानों के पास अपार धन है। परन्तु उसका सामाजिक उपयोग नहीं हो रहा है। वह तालों में बंद है। सामाजिक विषमता से अशांति फैल रही है। जिससे जनता में असंतोष फैल रहा है।

प्र.30 विप्लव के बादल का आह्वान समाज का कौनसा वर्ग करता है?

उत्तर– विप्लव के बादल का आह्वान समाज का शोषित–पीड़ित वर्ग तथा श्रमिक–कृषक वर्ग करता है।

प्र.31 ''चुस लिया है उसका सार, हाड मात्र ही हैं आधार'' का प्रतीकार्थ स्पष्ट किजिए।

उत्तर– पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने बहुसंख्यक किसान, मजदूर और शोषित जन के श्रम का खूब शोषण किया है। इस कारण इस वर्ग के लोग अत्यन्त दुर्बल तथा शक्ति हीन हो गए है। पेट भरकर भोजन भी न मिलने से ये हड्डियों के ढेर मात्र हो गए है।

# श्रम विभाजन और जाति – प्रथा

## बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

बहु विकल्पात्मक प्रश्न

1. बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर का जन्म कब हुआ था ?
   (अ) 14 मई 1891 (ब) 14 अप्रेल 1881 (स) 14 अप्रेल 1891 (द) 14 मई 1881 ( स )
2. आंबेडकर के विख्यात भाषण एनीहिलेशन ऑफ कास्ट का हिंदी रुपांतर किसने किया ?
   (अ) ललई सिंह यादव (ब) मुलायम सिंह यादव
   (स) लालु यादव (द) ललित सिंह यादव ( अ )
3. आंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज में कौन से तीन तत्व अनिवार्यतःहोने चाहिये ?
   (अ) शांति समानता और खुशी (ब) समानता,स्वतंत्रता और बंधुता
   (स) स्वतंत्रता, अमीरी और सरलता (द) स्वच्छता,बंधुता और शुद्वता ( ब )

CEO BHINDER AND VALABHNAGAR

4. आंबेडकर की प्रमुख रचना बुद्वा एंड हिज धम्मा का प्रकाशन कब हुआ था ?
(अ) 1947 (ब) 1857 (स) 1967 (द) 1957 ( द )

5. आंबेडकर का संमूर्ण वाड्.मय कितने खंडों में प्रकाशित हुआ ?
(अ) 17 (ब) 2 (स) 25 (द) 11 ( ब )

6. आंबेडकर का निधन कब व कहाँ हुआ ?
(अ) सन् 1956 दिल्ली में (ब) सन् 1956 मुम्बई में
(स) सन् 1946 दिल्ली में (द) सन् 1946 मुम्बई में ( अ )

7. कौनसी प्रथा श्रम विभाजन के साथ –साथ श्रमिक विभाजन का भी रुप लिए हुए है ?
(अ) दहेज प्रथा (ब) विधवा विवाह प्रथा
(स) जाति प्रथा (द) छुआछुत प्रथा ( स )

8. आंबेडकर के अनुसार भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण क्या है ?
(अ) अशिक्षा (ब) अक्षमता
(स) जाति प्रथा (द) जनसंख्या वृद्वि ( स )

9. शाब्दिक अर्थ में असंभव होते हुए भी नियामक सिद्वांत क्या है ?
(अ) ममता (ब) समता
(स) विषमता (द) सरलता ( ब )

10. आंबेडकर के अनुसार मनुष्यों की क्षमता कितनी बातों पर निर्भर रहती है ?
(अ) 4 (ब) 5 (स) 2 (द) 3 ( द )

11. आंबेडकर ने कौन सा मत अपनाया था ?
(अ) जैन मत (ब) बौद्व मत (स) ईसाई मत (द) ईस्लाम मत ( ब )

12. भारतीय संविधान का निर्माता किन्हे कहा जाता है ?
(अ) महात्मा गांधी (ब) जवाहर लाल नेहरु (स) वल्लभ भाई पटेल (द) भीमराव आंबेडकर ( द )

13. विद्यालय के दिनो में अध्यापक द्वारा क्या बनोगे ? पूछने पर भीमराव ने क्या कहा था ?
(अ) वकील (ब) चिकित्सक (स) अध्यापक (द) पटवारी ( अ )

14. मानव – मुक्ति के पुरोधा किन्हे कहा जाता है ?
(अ) चन्द्रशेखर आजाद (ब) भगतसिंह (स) भीमराव आम्बेडकर (द) लाला लाजपतराय ( स )

15. आम्बेडकर ने उच्चतर शिक्षा कहाँ प्राप्त की थी ?
(अ) चीन (ब) न्यूयार्क (स) कलकत्ता (द) हांगकांग ( ब )

## लघुत्तरात्मक प्रश्नोंत्तर

**प्रश्न : 1** लेखक के अनुसार **'दास्ता'** से क्या अभिप्राय है ?

**उत्तर :** जब किसी व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति के अधीन रहकर उसकी इच्छा के अनुसार काम करना होता है उसे सामान्यत : **'दासता'** कहा जाता है। डॉ. आंबेडकर का मानना है कि जब कानूनी स्वतंत्रता मिलने पर भी कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए विवष होना पड़ता है और दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवसाय अपनाने की बाध्यता होती है तो एक तरह से यह **'दासता'** ही है।

**प्रश्न : 2** डॉ. आंबेडकर ने जाति प्रथा को बेरोजगारी का एक प्रमुख कारण क्यों माना है ?

**उत्तर :** डॉ. आंबेडकर ने हिंदू धर्म में विद्यमान जाति प्रथा का उल्लेख करते हुए बताया है कि हिंन्दू धर्म की जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा व्यवसाय अपनाने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेषा न हो, भले ही वह

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

उसमें पारंगत हो। इस प्रकार व्यवसाय परिवर्तन की अनुमति नहीं देकर जाति–प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है ।

**प्रश्न : 3** लेखक के अनुसार आदष समाज के प्रमुख तत्व कौन–कौन से है ?

अथवा

डॉ. आंबेडकर ने अपनी कल्पना के आदर्ष–समाज को किस पर आधारित माना है?

**उत्तर :** लेखक ने 'मेरी कल्पना के आदर्ष समाज प्रकरण में बताया है कि मुझसे अगर कोई पूछेगे कि मैं जातियों के विरूद्ध हूँ, तो मेरी **दृष्टि** में आदर्ष समाज क्या है! ते मेरा उत्त होगा कि आदर्ष समाज तीन तत्वों पर आधारित होगा (1) स्वतत्रंता (2) समता (3) भ्रातृता अर्थात् भाईचारा ।

**प्रश्न : 4** लेखक ने 'समता' को असंभव होते हुए भी नियामक सिद्धान्त क्यों बताया है ?

**उत्तर :** स्वभावतः सभी **मनुष्य** बराबर नहीं होते लेकिन इस **दृष्टि** से उनके साथ असामान्य व्यवहार नहीं किया जा सकता सभी **मनुष्यों** के साथ एक सामान्य व्यवहार्य सिद्धान्त अपनाना ही नियामक सिद्धान्त है। षारीरिक वंष परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार के आधार पर भिन्नता होते हुए भी लोगों के साथ भिन्न–भिन्न व्यवहार करना अनुचित है !

**प्रश्न : 5** लेखक के अनुसार जाति–प्रथा के **पोषक** किस प्रकार की स्वतंत्रता के लिए जल्दी तैयार

नहीं होंगे ?

**उत्तर :** बाबा साहेब आंबेडकर ने बताया है कि जाति प्रथा के **पोषक** जीवन, षारीरिक–सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु **मनुष्य** के सक्षम और प्रभावषाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए तैयार नहीं होंगे क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता व्यवसाय चुनने की स्वीकृति नहीं देती है। तो फिर इसका अर्थ **मनुष्य** को 'दासता' में जकड़कर रखना होगा।

**प्रश्न : 6** डॉ. आंबेडकर ने 'समता' का क्या औचित्य बताया है ?

अथवा

डॉ. आंबेडकर के अनुसार एक राजनीतिज्ञ को 'समता' के आधार पर कैसा व्यवहार करना चाहिए ?

**उत्तर :** यदि समाज में आरंभ से ही अपने सदस्यों को सम्मान अवसर और समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाए तो उसे अपने सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता मिल सकती है। जब एक राजनीतिज्ञ को सार्वजनिक जीवन से पाला पड़ता है तो उसके पास इतना समय और जानकारी नहीं होती की वह सभी लोगों से अपनी क्षमताओं तथा आवष्यकताओं के आधार पर अलग–अलग व्यवहार कर सकें । ऐसी स्थिति में एक राजनीतिज्ञ को व्यवहार्य सिद्धान्त अपनाना चाहिए जिससे सभी लोगों के साथ समान व्यवहार किया जा सकें, यही उसके व्यवहार की कसौटी है।

**प्रश्न : 7 मनुष्य** की क्षमता किन–किन बातों पर निर्भर करती है?

**उत्तर :** डॉ. आंबेडकर के अनुसार **मनुष्य** की क्षमता तीन बातों पर निर्भर करती है (1) षारीरिक वंष परंपरा, (2) सामाजिक उत्तराधिकार (3) **मनुष्य** के अपने प्रयत्न । इसमें प्रथम दो अर्थात षारीरिक वंष परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार तय करना **मनुष्य** के अपने हाथ में नहीं है लेकिन हम इस आधार पर उसके साथ अनुचित व्यवहार को उचित ठहराया नहीं जा सकता ।

**प्रश्न : 8** ''श्रम विभाजन की **दृष्टि** से भी जाति–प्रथा गंभीर **दोषों** से युक्त है'' उक्त

CEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

कथन के पक्ष में लेखक ने क्या–क्या तर्क दिये है ?

**उत्तर :** डॉ. आंबेडकर ने 'श्रम विभाजन और जाति प्रथा' प्रकरण में उल्लेख किया है कि श्रम विभाजन की **दृष्टि** से भी जाति–प्रथा गंभीर **दोषों** से युक्त है क्योंकि जाति प्रथा का श्रम विभाजन **मनुष्य** की इच्छा पर निर्भर नहीं करता । **मनुष्य** की व्यक्तिगत भावना और रूचि का इसमें कोई महत्व नहीं रहता, सब कुछ पूर्व निर्धारित धारणा के आधार पर ही उसे व्यवसाय चुनना पड़ता है। आज के उद्योगों में बहुत से लोग निर्धारित कार्य को 'बेमन' या अरूचि के साथ अपनी मजबुरी में करते है। ऐसी स्थिति में **मनुष्य** का मन, हद्धय और दिमाग काम में नहीं लगता तो फिर वह अपनी क्षमता का पूर्ण उपयोग नहीं कर पाता, इसका **दुष्प्रभाव** आर्थिक तंत्र पर पड़ता है।

**प्रश्न : 9** लेखक ने लोकतंत्र को भ्रातृता/भाईचारे का दूसरा नाम क्यों दिया है ?

**उत्तर :** लेखक ने भाईचारे के महत्व पर प्रकाष डालते हुए बताया है कि 'आदर्ष समाज' में इतनी गतिषीलता हो जिससे सकल समाज में वांछित परिवर्तन एक छोर से दूसरे छोर तक निर्बाध रूप से हो सकें । यह कार्य भ्रातृता या भाईचारे से ही संभव है जिसमें दूध–पानी की तरह मिश्रण हो, इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। लोकतंत्र सिर्फ षासन की एक पद्वति नहीं है अपितु लोकतंत्र मुलतः जीवन चर्या की एक परम्परा तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान–प्रदान का नाम है। लोकतंत्र के लिए आवष्यक है कि अपने साथियों के साथ श्रद्धा व सम्मान का भाव हो ।

**प्रश्न : 10** बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर ने जाति–प्रथा को **दोषपूर्ण** मानने के पीछे क्या–क्या तर्क दिये है ?

**उत्तर :** डॉ. आंबेडकर ने श्रम विभाजन और जाति–प्रथा' प्रकरण में जाति प्रथा के निम्न **दोष** बताए है

1. जाति प्रथा में श्रम विभाजन के साथ–साथ श्रमिकों का भी विभाजन हो जाता है।
2. भारत की जाति प्रथा श्रमिकों का अस्वभाविक विभाजन के साथ–साथ उनकों उँच–नीच में भी वर्गीकृत करती है।
3. जाति प्रथा पर आधारित श्रम–विभाजन **मनुष्य** की रूचि पर आधारित नहीं है।
4. आर्थिक **दृष्टि** से भी जाति प्रथा **दोषपूर्ण** है।
5. व्यवसाय परिवर्तन की अनुमति नहीं होने से जाति प्रथा बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है ।

## उमाशंकर जोशी

प्रश्न (1) कवि उमाशंकर जोशी ने कवि कर्म को किसके समान बताया है ?
उत्तर - कृषक के समान।
प्रश्न (2) छोटा मेरा खेत कविता में कवि ने कागज की तुलना किससे की है ?
उत्तर - किसान के चौकोर खेत से।
प्रश्न (3) कवि अपने कार्य की तुलना किससे करता है ?
उत्तर- एक किसान के खेती के कार्य से।
प्रश्न (4) रस का अक्षय पात्र सदा का से कवि का क्या आशय है ?
उत्तर- कालजयी साहित्य का निर्माण।
प्रश्न (5) छोटा मेरा खेत कविता में कवि ने रसायन किसे माना है ?
उत्तर-कल्पना को।
प्रश्न (6) कवि के अनुसार नभ में बादल कैसे दिखाई देते हैं?
उत्तर- कजरारे अर्थात काले।
प्रश्न (7) कवि को बगुलों का कौनसा स्वरूप सम्मोहित करता है?
उत्तर- उनका पंक्तिबद्ध श्वेत स्वरूप।

CEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

प्रश्न(8) संस्कृति पत्रिका का संपादन 1947 में किसने किया था?
उत्तर- उमाशंकर जोशी ने।
प्रश्न(9) छोटा मेरा खेत कविता में अंधड़ और बीज से क्या तात्पर्य है?
उत्तर- अंधड़ से तात्पर्य भावना का आवेश तथा बीज का तात्पर्य भावानुरूप विचार से है।
प्रश्न(10) कवि ने अपनी कविता की किससे तुलना की है?
उत्तर- कवि ने अपनी कविता को फल के समान बताया है।
लघुत्तरात्मक प्रश्न
प्रश्न (1) छोटा मेरा खेत कविता का प्रतिपाद्य या मूल भाव बताइए।
उत्तर :-छोटा मेरा खेत कविता में कवि विभिन्न बिंबो द्वारा बताते है कि कागज का चौकोर पन्ना एक खेत की तरह है जिसमे विचारों की आंधी से उत्पन्न शब्दरूपी बीज डालकर क्षणिक रोपण से एक महान एवं कालजयी साहित्यिक रचना रूपी फसल को उगाया जाता है।
प्रश्न (2) बगुलों के पंख कविता का मूल भाव क्या है ?
उत्तर :- इसमें प्राकृतिक दृष्य के सौन्दर्य का चित्रण किया गया है। काले बादलों के बीच अनुशाषित बगुलों की पंक्तिबद्ध श्वेत काया आँखों को सम्मोहित कर देती है। प्रकृति के मानवीकरण का रुपक द्वारा सुन्दर चित्रण किया गया है।
प्रश्न (3) उमाशंकर जोशी के लेखन के प्रमुख आयाम बताइए ।
उत्तर :- वह गुजराती कविता और साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार थे। उनको परम्परा का गहरा ज्ञान था। कालिदास के अभिज्ञान शाकुंतलम् और भवभूति के उत्तर रामचरित का उन्होंने गुजराती में अनुवाद किया है। उनकी आलोचक और निबंधकार के रूप में भी पहचान रही है। आजादी के लड़ाई के दौरान वे जेल भी गए।
प्रश्न (4) ' रोपाई क्षण की कटाई अनंता की' इस पंक्ति का क्या अर्थ हैं ?
उत्तर :- इसमे कवि कहना चाहता है कि हृदय में किसी क्षण एक विशेष विचार का जन्म होता है। जो कविता में शब्द का रूप लेकर उतरता है। ऐसे शब्दों के समूह से एक महान रचना का जन्म होता है जो अनन्तकाल तक हमारे लिए प्रेरणा दायी होती है।
प्रश्न (5 ) 'बगुलों के पंख' कविता के कुछ शब्द चित्र बताइए।
उत्तर :- 'बगुलों के पंख' कविता के निम्न शब्द चित्र महसूस होते हैं।
आसमान में उड़ते काले बादल।
पंक्तिबद्ध श्वेत बगुलों के लहराते पंख ।
संध्या के समय अनुशाषित बगुलों के उड़ान का सम्मोहन।
प्रश्न (6) बगुलों के पंख कविता को पढ़ने पर आपके मन में कैसे चित्र उभरते हैं? उनकी किसी अन्य कला माध्यम में अभिव्यक्ति करें |
उत्तर - कविता को पढ़ने पर हमारे मन में आकाश में छाए काले बादलों , उनकी छाया में उड़ती सफेद बगुलों की पंक्ति तथा संध्या का चित्र उपस्थित होता है | छात्र इसको चित्रकला, फोटोग्राफी आदि कला माध्यमों में व्यक्त कर सकते हैं|
प्रश्न (7) 'कल्पना के रसायनों को पी 'कहने से कवि का मंतव्य क्या है ?
उत्तर - कवि ने कृषि कर्म की तुलना काव्य रचना से की है खेती में रसायनों का प्रयोग होता है| उससे बीज में अंकुर होते हैं पौधे बढ़कर फूल और फल देते हैं उसी प्रकार कवि के मन में उत्पन्न भाव ( बीज) कल्पना ( रसायन) के सहारे विकसित होते हैं| कल्पना का सहारा लेकर कवि के मनोभाव सुंदर कविता बनते हैं तथा रसिको को आनंदित करते हैं|
प्रश्न (8) ' वह तो चुराए लिए जाती मेरी आंखें' इस पंक्ति में आंखें चुराने से कवि का क्या आशय है ?
उत्तर - कवि का आशय है कि संध्या के समय कजरारे बादलों के मध्य श्वेत बगलो की पंक्ति इतनी मनोरम लगती है कि आंखें उनकी उड़ान के पीछे पीछे भागती है मानव संध्या की श्वेत काया कवि की आंखों को अपने साथ चुराए लिए जा रही है कवि इस दृश्य से अपनी नजरें हटा नहीं पा रहे हैं |
प्रश्न (9) ' लूटते रहने से जरा भी कम नहीं होती' यह कथन किस के बारे में कहा गया है ?उत्तर - यह कथन कविता के आनंद रस रूपी फल के बारे में कहा गया है |संसार में अन्य वस्तुएं निरंतर उपभोग करने पर समाप्त हो जाती हैं परंतु कविता की सरसता निरंतर आस्वादित होती है और उसका आनंद सर्वदा मिलता रहता है|

**निम्नलिखित अपठित पद्यांश पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।**

**1**

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए,

इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए,

आज ये दीवार, परदों की तरह हिलने लगी

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए,

मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,

हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।

**प्रश्न (1) 'इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए'– इस पंक्ति में हिमालय से कवि का क्या तात्पर्य है?**

**(2) सामाजिक परिवर्तन के लिए कवि ने क्या शर्त रखी है?**

**(3) "ये सूरत बदलनी चाहिए"– इसमें कवि किसकी सूरत बदलवाना चाहता है और क्यों?**

**(4) "हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए"– इस पंक्ति में कवि का क्या आशय है? लिखिए।**

**(5) इस पद्यांश से कवि क्या सन्देश देना चाहता है?**

**(6) प्रस्तुत पंक्तियों में किसके प्रति संवेदना व्यक्त की गई है?**

उत्तर– (1) हिमालय से कवि का आशय समाज में निरन्तर बढ़ती हुई विद्रूपताओं एवं उस सांघातिक पीड़ा से है,जिसे आम आदमी झेल रहा है।

(2) कवि ने यह शर्त रखी है कि समाज में आमूलचूल और बुनियादी परिवर्तन होना चाहिए, भ्रष्ट समाज व्यवस्था की बुनियाद हिलनी चाहिए।

(3) कवि चाहता है कि देश की बुरी व्यवस्थाओं के ढाँचे में बदलाव जरूरी है। इसके बिना समाज की उन्नति सम्भव नहीं है।

(4) कवि का आशय है कि प्रत्येक भारतीय के हृदय में अव्यवस्थाओं को बदलने का जोशभरा दृढ़–निश्चय रहे और क्रान्तिकारी उपायों का प्रसार होता रहे।

(5) इस पद्यांश में कति देशवासियों को जागरण का सन्देश देना चाहता है।

(6) इन पंक्तियों में धर्म–जाति, भेदभाव, शोषण, अत्याचार से पीड़ित व्यक्तियों के प्रति संवेदना व्यक्त हुई।

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो।
जग में रहकर कुछ नाम करो,
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो।
समझो, जिसमें यह व्यर्थ न हो,
नर हो, न निराश करो मन को।
सँभलो कि सुयोग न जाय चला,
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला।
समझो जग को न निरा सपना,
पथ आप प्रशस्त करो अपना।
अखिलेश्वर हैं अवलम्बन को,
नर हो, न निराश करो मन को।
प्रभु ने तुमको कर दान किये,
सब वांछित वस्तु विधान किये।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो,
फिर है किसका दोष कहो?
समझो न अलभ्य किसी धन को,
नर हो, न निराश करो मन को।

**प्रश्न (1) ''यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो''– मनुष्य का जन्म किस उद्देश्य के लिए हुआ?**

**(2) ईश्वर ने मनुष्य को कौनसी विशिष्ट चीज दी है?**

**(3) प्रस्तुत कविता में क्या सन्देश निहित है?**

**(4) ''समझो जग को न निरा सपना''–इस पंक्ति में 'निरा सपना' से कवि क्या आशय है?**

**(5) मनुष्य को निराशा छोड़कर क्या करना चाहिए?**

**(6) 'अखिलेश्वर हैं अवलम्बन को' इस पंक्ति में ईश्वर किसका सहारा बनता है?**

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

उत्तर– (1) मनुष्य का जन्म इस संसार में कुछ–न–कुछ काम करने के लिए तथा जीवन को सफल बनाकर यशस्वी बनने के लिए हुआ है।

(2) ईश्वर ने अन्य प्राणियों की अपेक्षा मनुष्य को काम करने के लिए दो हाथ दिये हैं, इनसे मनुष्य मनचाहा काम कर सकता है।

(3) प्रस्तुत कविता में कवि ने यह सन्देश दिया है कि हमें किसी भी परिस्थिति में निराश नहीं होना चहिए अपितु धैर्य और पराक्रम के साथ चुनौतियों का सामना करना चाहिए।

(4) 'निरा सपना' से यह आशय है कि संसार में मानव जीवन कोरी कल्पनाओं से नहीं चलता है, अपितु इसमें कर्मनिष्ठा एवं उत्साह जरूरी है।

(5) मनुष्य को निराशा छोड़कर धैर्य के साथ कर्मपथ पर आगे बढ़ना चाहिए।

(6) ईश्वर कर्म करने वालों का सहारा बनता है।

**3**

अगर तुम ठान लो तो आँधियों को मोड़ सकते हो,
अगर तुम ठान लो तारे गगन के तोड़ सकते हो,
अगर तुम ठान लो तो विश्व के इतिहास मे अपने–
सुयश का एक नव अध्याय भी तुम जोड़ सकते हो,
तुम्हारे बाहुबल पर विश्व को भारी भरोसा है–
उसी विश्वास को फिर आज जन–जन में जगाओ तुम।
पसीना तुम अगर इसमें अपना मिला दोगे,
करोड़ों दीन–हीनों को नया जीवन दिला दोगे।
तुम्हारी देह के श्रम–सीकरों में शक्ति है इतनी
कहीं भी धूल में फूल सोने के खिला दोगे।
नया जीवन तुम्हारे हाथ का हल्का इशारा है,
इशारा कर वही इस देश को फिर लहलहाओ तुम।

**प्रश्न (1) विश्व के इतिहास में अपना सुयश कौन और कैसे लिख सकते हैं?**

**(2) दीन–हीनों को नया जीवन कब मिल सकता है?**

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

**(3) "कहीं भी धूल में तुम फूल सोने का खिला दोगे"–इसका आशय लिखिए।**

**(4) इस काव्यांश का केन्द्रीय भाव बताइये।**

**(5) नवयुवकों से क्या–क्या करने का आग्रह किया जा रहा है?**

**(6) युवक यदि परिश्रम करें, तो क्या लाभ होगा?**

उत्तर– (1) विश्व के इतिहास में नवयुवक अपना सुयश लिख सकते है। इसके लिए वे अपनी युवा शक्ति का सदुपयोग करके जन–जन के उत्थान में लग जावें।

(2) जब देश के युवा रात–दिन परिश्रम करके सामाजिक प्रगति में संलग्न रहेंगे, तब दीन–हीनों को नया जीवन मिल सकता है।

(3) नवयुवकों में अदम्य शक्ति होती है, वे कम साधनों के बावजूद विकट स्थितियों में भी समाज को अधिक दे सकते हैं।

(4) नवयुवकों को अपनी शक्ति का उपयोग देशहित, समाज हित एवं कर्मनिष्ठा में करना चाहिए और जन जागरण के लिए समर्पित रहना चाहिए।

(5) कवि नवयुवकों से आग्रह करता है कि वे नए विचार अपनाकर जनता को जाग्रत करें तथा उनमें आत्मविश्वास का भाव जगाएं।

(6) युवक यदि परिश्रम करें तो करोड़ों दीन–हीनों को नया जीवन मिल सकता है।

**4**

प्रभु ने तुमको कर दान किए,
सब वांछित वस्तु विधान किए।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो,
फिर है किसका वह दोष कहो?
समझो न अलभ्य किसी धन को,
नर हो न निराश करो मन को।
किस गौरव के तुम योग्य नहीं,

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं?

जन हो तुम भी जगदीश्वर के,

सब हैं जिसके अपने घर के।

फिर दुर्लभ क्या उसके मन को?

नर हो, न निराश करो मन को।

करके विधि–वाद न खेद करो,

निज लक्ष्य निरन्तर भेद करो।

बनता बस उद्यम ही विधि है,

मिलती जिससे सुख की निधि है।

समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को,

नर हो, न निराश करो मन को।

**प्रश्न (1) कवि ने मनुष्य का दोष किस कारण से बताया है?**

**(2) कवि किस बात के लिए मनुष्य को प्रेरित कर रहा है?**

**(3) 'करके विधि–वाद न खेद करो' से क्या तात्पर्य है?**

**(4) काव्यांश का मूल सन्देश क्या है?**

**(5) कवि के ईश्वर के बारे में क्या विचार हैं?**

उत्तर– (1) यही कि ईश्वर ने सभी को दो हाथ दिए हैं कर्म करने के लिए और वांछित वस्तु प्राप्त करने के सारे साधन भी। किन्तु मनुष्य कर्म नहीं करता और दुःखी होता है।

(2) यही कि दुर्लभ या न प्राप्त होने वाली ऐसी कोई वस्तु नहीं है। तुम मनुष्य हो, इसलिए सारे सुख,गौरव, सम्मान सभी के भागी हो।

(3) कवि कहते हैं कि निरन्तर लक्ष्य को भेदने का प्रयत्न करो। भाग्य के सहारे सब छोड़कर मत बैठो।कर्म करते रहना ही सुख को प्राप्त करने का रास्ता है।

(4) कवि कहते हैं कि ईश्वर ने हमें मनुष्य बनाया। मनुष्य अपने कर्मों द्वारा ही सुख प्राप्त कर सकता है।निष्क्रिय जीवन धिक्कार स्वरूप है।

CEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

(5) कवि ईश्वर को सम्पूर्ण जगज का जगदीश्वर मानते हैं, कहते हैं कि ईश्वर सबके साथ है फिर भी मनुष्य को निरन्तर कर्म करना चाहिए।

# अतीत में दबे पाँव

**वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

**1. कोठार किसके काम आता होगा?**

अ. सुरक्षा के लिए

ब. धन जमा करने के लिए

स. अनाज जमा करने के लिए

द. पानी जमा करने के लिए

उत्तर- ( स)अनाज जमा करने के लिए

**2. दाढ़ी वाली मूर्ति का नाम क्या रखा गया है?**

A. मुख्य नरेश

B. धर्म नरेश

C. याजक नरेश

D. गौण नरेश।

उत्तर- (C) याजक नरेश

**3. मुअनजो-दड़ो हड़प्पा से प्राप्त हुई नर्तकी की मूर्ति किस राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी हुई है?**

A. इस्लामाबाद संग्रहालय में

B. लाहौर संग्रहालय में

C. दिल्ली संग्रहालय में

D. लंदन संग्रहालय में

उत्तर- (C)दिल्ली संग्रहालय में

**4. मुअनजो-दड़ो की गलियों तथा घरों को देखकर लेखक को किस प्रदेश का ख्याल आया?**

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

A. हरियाणा

B. पंजाब

C. उत्तर प्रदेश

D. राजस्थान

उत्तर- ( D)राजस्थान

**5. मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गाँव की याद आई?**

A. कुलधरा

B. कुलघड़ा

C. बुलधरा

D. शुभधरा।

उत्तर- ( A) कुलधरा

**6. मुअनजो-दड़ो की खुदाई में निकली पंजीकृत चीज़ों की संख्या कितनी थी?**

A. 50 हजार से अधिक

B. 20 हजार से अधिक

C. 30 हजार से अधिक

D. 60 हजार से अधिक।

उत्तर- (A)50 हजार से अधिक

**7. खुदाई से प्राप्त गेहूँ का रंग कैसा है?**

A. पीला

B. काला

C. हरा

D. नीला।

उत्तर- (B)काला

**8. अजायबघर में तैनात व्यक्ति का नाम क्या था?**

A. नवाज़ खान

B. मोहम्मद खान

C. अली नवाज़

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

D. अली बख्तावर।

उत्तर- (C)अली नवाज़

**9. सिंधु सभ्यता की खूबी क्या है?**

A. सौंदर्य-बोध

B. संस्कृति-बोध

C. सभ्यता-बोध

D. नागर-बोध।

उत्तर- ( A) सौंदर्य-बोध

**10. लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्य-बोध को क्या नाम दिया है?**

A. राज-पोषित

B. धर्म-पोषित

C. समाज-पोषित

D. व्यापार-पोषित

उत्तर- (C)समाज-पोषित

**11. मुअनजो-दड़ो अपने काल में किसका केंद्र रहा होगा?**

A. सभ्यता का

B. राजनीति का

C. धर्म का

D. व्यापार का

उत्तर- ( A)सभ्यता का

**12. मुअनजो-दड़ो नगर कितने हैक्टेयर में फैला हुआ था?**

A. 300 हैक्टेयर

B. 200 हैक्टेयर

C. 500 हैक्टेयर

D. 150 हैक्टेयर

उत्तर- (B)200 हैक्टेयर

**13. भग्न इमारत में कितने खंभे हैं?**

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

A. 20 खंभे

B. 30 खंभे

C. 15 खंभे

D. 40 खंभे

उत्तर- (A)20 खंभे

**14. 'डीके' हलका किसके नाम पर रखा गया है?**

A. दयाकाशीनाथ के

B. दीक्षितकाशीनाथ के

C. धर्मकाशीनाथ के

D. दयालुकाशीनाथ के

उत्तर- (B)दीक्षितकाशीनाथ के

**15. मुअनजो-दड़ो की लंबी सड़क अब कितनी बची है?**

A. 2 मील

B. 3 मील

C. 1/2 मील

D. 1 मील

उत्तर- (C) 1/2 मील

**16. मुअनजो-दड़ो में लगभग कितने कुएँ थे?**

A. 500

B. 200

C. 800

D. 700

उत्तर- (D)700

**17. सिंधु घाटी सभ्यता में कौन-से फल उगाए जाते थे?**

A. सेब और संतरे

B. संतरे और केले

C. खजूर और अंगूर

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

D. खजूर और अमरूद

उत्तर- (C)खजूर और अंगूर

**18. सिंधु घाटी सभ्यता में कपास पैदा होती थी। इसका क्या प्रमाण है?**

A. कपास के बीज

B. ऊन

C. सूती कपड़ा

D. गर्म कपड़ा

उत्तर- (C) सूती कपड़ा

**19. 'अतीत में दबे पाँव' नामक पाठ के रचयिता का नाम क्या है?**

A. ओम थानवी

B. मनोहर श्याम जोशी

C. फणीश्वरनाथ रेणु

D. हजारी प्रसाद द्विवेदी

उत्तर- (A)ओम थानवी

**20. लेखक के अनुसार मुअनजो-दड़ो की आबादी लगभग कितनी थी?**

A. 20 हजार

B. 65 हजार

C. 85 हजार

D. 50 हजार

उत्तर- (C) 85 हजार

**21. मुअनजो-दड़ो का नगर कितने हजार साल पहले का है?**

A. 1000 साल

B. 2000 साल

C. 3000 साल

D. 5000 साल

उत्तर- (D) 5000 साल

**22. मुअनजो-दड़ो की मुख्य सड़क की चौड़ाई कितनी है?**

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

A. 32 फीट

B. 20 फीट

C. 33 फीट

D. 23 फीट

उत्तर- (C) 33 फीट

**23. मुअनजो-दड़ो की सभ्यता और संस्कृति किसकी शोभा बढ़ा रहे हैं?**

A. लाहौर की

B. दिल्ली की

C. लंदन की

D. अजायबघर की

उत्तर- (D) अजायबघर की

**24. मुअनजो-दड़ो के सबसे ऊँचे चबूतरे पर क्या विद्यमान है?**

A. मदिर

B. बौद्ध स्तूप

C. राजमहल

D. विशाल भवन

उत्तर- (B)बौद्ध स्तूप

**25. बौद्ध स्तूप कितने फुट ऊँचे चबूतरे पर निर्मित है?**

A. 15 फुट

B. 25 फुट

C. 12 फुट

D. 10 फुट

उत्तर- (B)25 फुट

**26. चबूतरे पर किसके कमरे बने हुए हैं?**

A. मज़दूरों के

B. किसानों के

C. भिक्षुओं के

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

D. शिक्षकों के।

उत्तर- ( C)भिक्षुओं के

**27. राखालदास बैनर्जी यहाँ पर किस वर्ष आए थे?**

A. सन् 1922 में

B. सन् 1923 में

C. सन् 1924 में

D. सन् 1925 में।

उत्तर- (A)सन् 1922 में

**28. राखालदास बैनर्जी कौन थे?**

A. शिक्षक

B. भिक्षु

C. पुरातत्त्ववेत्ता

D. व्यापारी।

उत्तर- (C)पुरातत्त्ववेत्ता

**29. मुअनजो-दड़ो को नागर भारत का सबसे पुराना क्या कहा गया है?**

A. नगर

B. कस्बा

C. लैंडस्केप

D. गाँव

उत्तर- ( C) लैंडस्केप

**30. मुअनजो-दड़ो के वास्तुकला की तुलना किस नगर के साथ की गई है?**

A. दिल्ली से

B. जयपुर से

C. चंडीगढ़ से

D. बीकानेर से

उत्तर- (C)चंडीगढ़ से

**31. मुअनजो-दड़ो से सिंधु नदी कितनी दूरी पर बहती है?**

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

A. 4 किलोमीटर

B. 5 किलोमीटर

C. 10 किलोमीटर

D. 6 किलोमीटर

उत्तर- (B)5 किलोमीटर

**32. दक्षिण में टूटे-फूटे घरों का जमघट किसकी बस्ती मानी गई है?**

A. अमीरों की

B. भिक्षुओं की

C. कामगारों की

D. शिक्षकों की

उत्तर- ( C) कामगारों की

**33. महाकुंड कितने फुट लंबा है?**

A. 20 फुट

B. 30 फुट

C. 50 फुट

D. 40 फुट

उत्तर- (D)40 फुट

**34. महाकुंड की चौड़ाई कितनी है?**

A. 15 फुट

B. 25 फुट

C. 20 फुट

D. 30 फुट

उत्तर- ( B)25 फुट

**35. महाकुंड की गहराई कितनी है?**

A. 8 फुट

B. 9 फुट

C. 7 फुट

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

D. 5 फुट

उत्तर- (C) 7 फुट

**36. महाकुंड के तीन तरफ किसके कक्ष बने हुए हैं?**

A. मेहमानों के

B. साधुओं के

C. अमीरों के

D. कामगारों के

उत्तर- (B) साधुओं के

**37. उत्तर में दो पांत में कितने स्नानघर हैं?**

A. चार B. पाँच C. सात D. आठ

उत्तर- (D)आठ

**38. कुंड के पानी के प्रबंध के लिए क्या व्यवस्था है?**

A. पानी की नहर B. तालाब

C. कुआँ D. पानी की नाली

उत्तर- (c) कुआँ

**<u>निबंधात्मक प्रश्न</u>**

**प्रश्न.1 'अतीत में दबे पांव' पाठ के आधार पर शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।**

**उत्तर:-** अतीत में दबे पांव लेखक के अनुभव हैं जो उन्हें सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेषों को देखते समय हुए थे। इस पाठ में अतीत अर्थात भूतकाल में बसे सुंदर सुनियोजित नगर में प्रवेश कर के लेखक वहां की एक एक चीज से अपना परिचय बढ़ाता है। उस सभ्यता के अतीत में झांक कर वहां के निवासियों और क्रियाकलापों को अनुभव करता है। वहां की एक एक स्थूल चीज से मुखातिब होता हुआ लेखक चकित रह जाता है। वे लोग कैसे रहते थे? यह अनुमान आश्चर्यजनक है। वहां की सड़कें, नालियां, स्तूप, सभागार, अन भंडार, विशाल स्नानागार , कुए, कुंड और अनुष्ठान ग्रह आदि के अतिरिक्त मकानों की सुव्यवस्था देखकर लेखक महसूस करता है कि जैसे अब भी वे लोग वहां हैं। उसे सड़क पर जाती हुई बैलगाड़ी से रुनझुन की ध्वनि सुनाई देती है। किसी खंडहर में प्रवेश करते हुए उसे अतीत के निवासियों की उपस्थिति महसूस होती है। रसोईघर की खिड़की से झांकने पर उसे वहां पक रहे भोजन की गंध भी आती है। यदि इन लोगों की सभ्यता नष्ट नहीं हुई होती तो वे प्रगति के पथ पर निरंतर बढ़ रहे होते और आज भारतीय उपमहाद्वीप महाशक्ति बन चुका होता मगर दुर्भाग्य से यह प्रगति की ओर बढ़ रहे पांव अतीत में ही दब कर रह गए। इसलिए 'अतीत में दबे पांव' शीर्षक पूर्ण रूप से सार्थक और सटीक है

**प्रश्न.2 " अतीत में दबे पांव " पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।**

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

**उत्तर:-** यह पाठ यात्रा वृतांत और रिपोर्ट का मिलाजुला रूप है। यह पाठ विश्व फलक पर घटित सभ्यता की सबसे प्राचीन घटना को उतने ही सुनियोजित ढंग से पुनर्जीवित करता है जितने सुनियोजित ढंग से उसके दो महान नगर मोहनजोदड़ो और हड़प्पा बसे थे। लेखक ने टीलों, स्नानागारों, मृदभांड, कुओं, तालाबों, मकानों व मार्गों से प्राप्त पुरातत्व में मानव संस्कृति की उस समझदार भावात्मक घटना को बड़े इत्मीनान से खोज खोज कर हमें दिखाया है जिससे हम इतिहास की सपाट वर्णनात्मकता से ग्रस्त होने की जगह इतिहास बोध से तर होते हैं। सिंधु सभ्यता के सबसे बड़े शहर मोहनजोदड़ो की नगर योजना दर्शकों को अभिभूत करती है। वह आज की सेक्टर माता कॉलोनियों के नीरस नियोजन की अपेक्षा ज्यादा रचनात्मक थी क्योंकि उसकी बसावट शहर के खुद विकसित होने का अवकाश भी छोड़कर चलती थी। पुरातत्व के निशान पड़े चिन्हों से एक जमाने में आबाद घरों लोगों और उनकी सामाजिक धार्मिक राजनीतिक व आर्थिक गतिविधियों का पुख्ता अनुमान किया जा सकता है। वह सभ्यता ताकत के बल पर शासित होने की जगह आपसी समझ से अनुशासित थी उसमें भव्यता थी पर आडंबर नहीं था। उसकी खूबी उसका सौंदर्य बोध था जो राज पोषित या धर्म पोषित ने होकर समाज पोषित था। अतीत की ऐसी कहानियों के स्मारक चिन्हों को आधुनिक व्यवस्था के विकास अभियानों की भेंट चढ़ाते जाना भी लेखक को कचोटता है।

**प्रश्न 3 पर्यटक मोहनजोदड़ो में क्या-क्या देख सकते हैं? अतीत मैं दबे पांव पाठ के आधार पर किन्ही तीन दृश्यों का परिचय दीजिए**

**उत्तर:-** मोहनजोदड़ो में पर्यटक निम्नलिखित स्थान देख सकते हैं

**बौद्ध स्तूप:-** मोहनजोदड़ो के सबसे ऊंचे चबूतरे पर बड़ा बौद्ध स्तूप है। 1992 में राखल दास बनर्जी ने इसी बौद्ध स्तूप की खुदाई करते हुए सिंधु सभ्यता के बारे में जाना। चबूतरे को विद्वान गढ़ कहते हैं।

**अजायबघर:-** मोहनजोदड़ो में अजायबघर बनाया गया है जो छोटा है। यहां पर काला पड़ गया गेहूं मोहरे चौपड़ की गोटियां माप तोल के पत्थर तांबे का आईना मिट्टी की बैलगाड़ी आदि रखे गए हैं यहां औजार तो हैं परंतु हथियार नहीं।

## सिल्वर वैडिंग

**प्रश्न.1 सिल्वर वेडिंग कहानी का मुख्य पात्र है -**

(अ)किशन दा (ब)यशोधर बाबू (स)मनोहर श्याम(द) विनीत झा

उत्तर- (ब)यशोधर बाबू

**प्रश्न.2 लोग यशोधर बाबू को किसका मानस पुत्र मानते थे-**

(अ)चंद्र मोहन का (ब)राजेश्वर दत्त का (स)किशन दादा का (द)धनेश मोहन का

उत्तर- (स)किशन दादा का

**प्रश्न.3 यशोधर बाबू सिल्वर वेडिंग के आयोजन को मानते थे-**

(अ) पारंपरिक (ब)समय अनुकूल (स)उत्कृष्ट(द) विदेशी परंपरा

उत्तर- (द) विदेशी परंपरा

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

**प्रश्न.4 यशोधर बाबू के कार्यालय में सीधा असिस्टेंट ग्रेड से सिलेक्ट होकर आया था -**

(अ)चड्ढा (ब)दासगुप्ता (स)झा (द)तिवारी

उत्तर- (अ)चड्ढा

**प्रश्न.5 किशन दा के चरित्र का सबसे उज्जवल पक्ष है -**

(अ)ऊंची नौकरी (ब)सुविधा भोगी(स) मिलनसारिता (द)आश्रितों की खैर खबर रखना

उत्तर- (द)आश्रितों की खैर खबर रखना

**प्रश्न.6 यशोधर बाबू अपने बच्चों तथा पत्नी से क्या चाहते थे-**

(अ) पैसा (ब)सम्मान (स)परंपरा का पालन (द)मुक्ति

उत्तर- (ब)सम्मान

**प्रश्न.7 यशोधर बाबू सर्वप्रथम किस पद पर नियुक्त हुए** -

(अ)बॉय सर्विस (ब)क्लर्क (स)सहायक क्लर्क (द)सेक्शन ऑफिसर

उत्तर- (अ) बॉय सर्विस

**प्रश्न.8 यशोधर बाबू का पूरा नाम है** –

(अ)यशोधर बाबू(ब) एडी पंत(स) वाइ डी पंत (द)ओ जी पंत

उत्तर- (स) वाइ डी पंत

**प्रश्न.9 यशोधर बाबू की विवाह की कौन सी वर्षगांठ मनाई गई -**

(अ)बीसवीं (ब)तीसवीं (स)25 वी (द)40 वी

उत्तर- (स)25 वी

**प्रश्न.10 दफ्तर के बाबू को अपनी सिल्वर वेडिंग के लिए यशोधर बाबू ने कितने रुपए दिए-**

(अ) 10 (ब) 15 (स) 20 (द) 30

उत्तर- (द) 30

**प्रश्न.11 यशोधर बाबू मूलतः कहां के रहने वाले थे-**

(अ)दिल्ली के (ब)आगरा के (स)कुमाऊं के (द)मेरठ के

उत्तर- (स) कुमाऊं के

**प्रश्न.12 किशन दा यशोधर को क्या कहकर बुलाते थे-**

(अ)भाऊ (ब) बेटा (स)यशोधर (द)बाबू

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

उत्तर- (अ)भाऊ

**<u>अतिलघूतरात्मक प्रश्न</u>**

**प्रश्न.1 सिल्वर वेडिंग में गाउन पहनते समय यशोधर बाबू को कौन सी बात चुभी?**

उत्तर-सिल्वर वेडिंग में गाउन पहनते समय यशोधर बाबू को दूध लाने की बात चुभी।

**प्रश्न.2 जब सब्जी लेकर यशोधर घर पहुंचे तो उनकी दशा कैसी थी** ?

उत्तर-द्वारिका से लोटे सुदामा जैसी।

**प्रश्न.3 रिटायरमेंट के समय यशोधर बाबू का वेतन कितना था?**

उत्तर:- रिटायरमेंट के समय यशोधर बाबू का वेतन डेढ़ हजार रुपए था।

**प्रश्न.4 यशोधर बाबू ने किस स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की थी ?**

उत्तर:- रैमजे स्कूलअल्मोड़ा से यशोधर बाबू ने अपनी मैट्रिक की परीक्षा पास की थी।

**प्रश्न.5 यशोधर बाबू की शादी कब हुई थी?**

उत्तर:- 6 फरवरी 1947 को यशोधर बाबू की शादी हुई थी।

**प्रश्न.6 किशन दा ने अपना जीवन किसके नाम कर दिया था?**

उत्तर:- किशन दा ने अपना जीवन समाज सेवा जैसे अच्छे काम के लिए कर दिया था।

**प्रश्न.7 'अर्ली टू बेड अर्ली टू राइज मैक्स ए मैन हेल्थी वेल्थी एंड वाइज।' कथन का भाव स्पष्ट करो।**

उत्तर:- यह कथन किशन दा अक्षर यशोधर बाबू से कहा करते थे। किशन काका ऐसा मानना था की रात को जल्दी सोने और सुबह जल्दी उठने से मनुष्य शारीरिक रूप से स्वस्थ और मानसिक रूप से बुद्धिमान बनता है।

**प्रश्न 8 . यशोधर बाबू जैसे लोग समय के साथ ढ़लने में असफल क्यों होते हैं?**

उत्तरः ऐसे लोग साधारणतया किसी न किसी से प्रभावित होते हैं, जैसे यशोधर बाबू किशन दा से। ये परंपरागत ढर्रे पर चलना पसन्द करते हैं तथा बदलाव पसन्द नहीं करते। अतः समय के साथ ढ़लने में असफल होते हैं।

**प्रश्न 9 . भरे-पूरे परिवार में यशोधर बाबू स्वयं को अधूरा-सा क्यों अनुभव करते हैं?**

उत्तरः संकेत बिन्दु - अपने प्राचीन दायरे से बाहर न निकल सकने के कारण वे स्वयं को अधूरा अनुभव करते हैं।

**प्रश्न 10. ''अभी तुम्हारे अब्बा की इतनी साख है कि सौ रुपए उधार ले सकें।' ' किन परिस्थितियों में यशोधर बाबू को यह कहना पड़ा?**

उत्तरः संकेत बिन्दु- पुत्र द्वारा उनके निकट संबंधी की आर्थिक सहायता के लिए मनाही से आहत होकर ऐसा कहना पड़ा।

**प्रश्न 11. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के तथ्य का विश्लेषण कीजिए।**

उत्तरः संकेत बिन्दु - पीढ़ी के अंतराल को उजागर कर, वर्तमान समाज की इस प्रकार की सच्चाई से पर्दा उठाया गया है।

**प्रश्न 12 .अपने बच्चों की तरक्की से खुश होने के बाद भी यशोधर बाबू क्यामहसूस करते हैं?**

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

उत्तरः उनके बच्चे गरीब रिश्तेदारों के प्रति उपेक्षा का भाव रखते हैं। उनकी यह खुशहाली अपनों के बीच परायापन पैदा कर रही है, जो उन्हें अच्छा नहीं लगता।

**प्रश्न 13 .आजकल किशनदा जैसी जीवन-शैली अपनाने वाले बहुत कम लोग मिलते हैं, क्यों ?**

उत्तर: किशन दा जैसे लोग मस्ती से जीते हैं, निःस्वार्थ दूसरों की सहायता करते हैं, जबकि आजकल सभी सहायता के बदले कुछ न कुछ पाने की आशा रखते हैं, बिना कुछ पाने की आशा रखे सहायता करने वाले बिरले ही होते हैं ।

**प्रश्न 14 . यशोधर बाबू के बच्चों की कौन-सी बातें प्रशंसनीय हैं और कौन-सा पक्ष आपत्तिजनक है?**

उत्तर- प्रशंसनीय बातें- 1) महत्वाकांक्षी और प्रगतिशील होना । 2)जीवन में उन्नति करना।

3)समय और सामर्थ्य के अनुसार घर में आधुनिक सुविधाएँ जुटाना ।

आपत्तिजनक बातें - 1) व्यवहार, 2) पिता, रिश्तेदारों, धर्म और समाज के प्रति नकारात्मक भाव , 3) मानवीय सम्बन्धों की गरिमा और संस्कारों में रूचि न लेना ।

**प्रश्न 15. यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है,लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते हैं,ऐसा क्यों ?**

**उत्तरः** यशोधर बाबू अपने आदर्श किशनदा से अधिक प्रभावित हैं और आधुनिक परिवेश में बदलते हुए जीवन-मूल्यों और संस्कारों के विरूद्ध हैं। जबकि उनकी पत्नीअपने बच्चों के साथ खड़ी दिखाई देती हैं। वह अपने बच्चों के आधुनिक दृष्टिकोण से प्रभावित हैं। इसलिए यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ परिवर्तित होती है, लेकिन यशोधर बाबू अभी भी किशनदा के संस्कारों और परंपराओं से चिपके हुए हैं।

**प्रश्न-16. पाठ में 'जो हुआ होगा' वाक्य की कितनी अर्थ छवियाँ आप खोज सकते हैं?**

उत्तरः यशोधर बाबू यही विचार करते हैं कि जिनके बाल-बच्चे ही नहीं होते,वे व्यक्ति अकेलेपन के कारण स्वस्थ दिखने के बाद भी बीमार-से हो जाते हैं और उनकी मृत्यु हो जाती है। जिसप्रकार यशोधर बाबू अपने आपको परिवार से कटा और अकेला पाते हैं उसीप्रकार अकेलेपन से ग्रस्त होकर उनकी मृत्यु हुई होगी। यह भी कारण हो सकता है कि उनकी बिरादरी से घोर उपेक्षा मिली, इस कारण वे सूख-सूख कर मर गए । किशनदा की मृत्यु के सही कारणों का पता नहीं चल सका। बस यशोधर बाबू यही सोचते रह गए कि किशनदा की मृत्यु कैसे हुई?जिसका उत्तर किसी के पास नहीं था।

**प्रश्न 17 .वर्तमान समय में परिवार की संरचना,स्वरूप से जुड़े आपके अनुभव इस कहानी से कहाँ तक सामंजस्य बिठा पाते हैं ?**

उत्तरः यशोधर बाबू और उनके बच्चों की सोच में पीढ़ीजन्य अंतराल आ गया है। यशोधर संस्कारों से जुड़ना चाहते हैं और संयुक्त परिवार की संवेदनाओं को अनुभव करते हैं जबकि उनके बच्चे अपने आप में जीना चाहते हैं। अतः जरूरत इस बात की है कि यशोधर बाबू को अपने बच्चों की सकारात्मक नई सोच का स्वागत करना चाहिए,परन्तु यह भी अनिवार्य है कि आधुनिक पीढ़ी के युवा भी वर्तमान बेतुके संस्कार और जीवन मूल्यों के प्रति आकर्षित न हों तथा पुरानी पीढ़ी की अच्छाइयों को ग्रहण करें। यह शुरूआत दोनों तरफ से होनी चाहिए ताकि एक नए एवं संस्कारी समाज की स्थापना की जा सके।

## निबन्धात्मक

**प्रश्न 1. अपने घर और विद्यालय के आस-पास हो रहे उन बदलावों के बारे में लिखें जो सुविधाजनक और आधुनिक होते हुए भी बुजुर्गों को अच्छे नहीं लगते। अच्छा न लगने के क्या कारण हो सकते हैं ?**

**उत्तरः** आधुनिक युग परिवर्तनशील एवं अधिक सुविधाजनक है। आज के युवा,आधुनिकता और परिवर्तनशीलता को महत्त्व देते हैं इसीलिए वे नई तकनीक और फैशन की ओर आकर्षित होते हैं। वे तत्काल नयी जानकारियाँ चाहते हैं, जिसके लिए उनके पास

CEO PHINDER AND VALABHNAGAR

कम्प्यूटर, इन्टरनेट एवं मोबाइल जैसे आधुनिक तकनीकी साधन हैं। इनके माध्यम से वे कम समय में ज्यादा जानकारी एकत्र कर लेते हैं। घर से विद्यालय जाने के लिए अब उनके पास बढ़िया साईकिलें एवं मोटर साईकिलें हैं। आज युवा लड़के और लड़कियों के बीच का अन्तराल काफी कम हो गया है। पुराने जमाने में लड़कियाँ-लड़कों के साथ पढ़ना और मिलना-जुलना ठीक नहीं माना जाता था जैसे आज के परिवेश में है। युवा लड़कों और लड़कियों द्वारा अंग प्रदर्शन आज आम बात हो गई है। वे एक साथ देर रात तक पार्टियाँ करते हैं। इन्टरनेट के माध्यम से असभ्य जानकारियाँ प्राप्त करते हैं। ये सारी बातें उन्हें आधुनिक एवं सुविधाजनक लगती हैं।

दूसरी ओर इस तरह की आधुनिकताबुज़र्गों को रास नहीं आतीक्योंकि जब वे युवा थे,उस समय संचार के साधनों की कमी थी। पारिवारिक पृष्ठभूमि के कारण वे युवावस्थामें अपनी भावनाओं को काबू में रखते थे और अधिक जिम्मेदार होते थे। अपने से बड़ों का आदर करते थे और परंपराओं के अनुसार चलते थे। आधुनिक परिवेश के युवा बड़े-बूढ़ों के साथ बहुत कम समय व्यतीत करते हैं इसलिए सोच एवं दृष्टिकोण में अधिक अन्तर आ गया है। इसी अन्तर को 'पीढ़ी का अन्तर' कहते हैं। युवा पीढ़ी की यही नई सोच बुजुर्गों को अच्छी नहीं लगती।

**प्रश्न 2. यशोधर बाबू के चरित्र की विशेषताएँ लिखिए।**

**उत्तरः**1. **कर्मठ एवं परिश्रमी –**सेक्शन ऑफिसर होने के बावजूद दफ्तर में देर तक काम करते थे। वे अन्य कर्मचारियों से अधिक कार्य करते थे।

**2. संवेदनशील**- यशोधर बाबू अत्यधिक संवेदनशील थे। वे यह बात स्वीकार नहीं कर पाते कि उनका बेटा उनकी इजाजत लिए बिना ही घर का सोफा सेट आदि खरीद लाता है, उनका साईकिल से दफ्तर जाने पर ऐतराज करता है, उन्हें दूध लेने जाने में असुविधा न हो इसलिए ड्रेसिंग गाउन भेंट करता है। पत्नी उनकी बात न मानकर बच्चों के कहे अनुसार चलती है। बेटी विवाह के बंधन में बंधने से इंकार करती है और उसके वस्त्रों में शालीनता नहीं झलकती। परिवारवालों से तालमेल न बैठने के कारण वे अपना अधिकतर समय घर से बाहर मंदिर में तथा सब्जीमंडी में सब्ज़ी खरीदते बिताते हैं।

**3. परंपरावादी**- वे परंपरावादी थे।आधुनिक समाज में बदलते समीकरणों को स्वीकार करने को तैयार नहीं थे इसलिए परिवार के अन्य सदस्यों से उनका तालमेल नहीं बैठ पा रहा था।

**4. धार्मिक व्यक्ति**-यशोधर बाबू एक धार्मिक व्यक्ति थे। वे अपना अधिकतर समय पूजा-पाठ और मंदिर में बिताते थे

# 'फीचर'

**प्रश्न 1 - फीचर क्या है?**
उत्तर - 'फीचर' शब्द का अर्थ है -चेहरा मोहरा। जब कोई लेखक किसी घटना को इस प्रकार सजीव और रोचक शैली से प्रस्तुत करता है कि उसका स्वरूप पूर्णतः स्पष्ट हो जाए तो उसको फीचर कहते हैं इसका लेखन पाठकों को सूचना देने तथा उनका मनोरंजन करने के लिए होता है।
**प्रश्न 2 - फीचर कितने प्रकार के होते हैं?**
उत्तर - फीचर विभिन्न प्रकार के होते हैं। उसके कुछ प्रकार निम्नलिखित हैं- 1. समाचार पर आधारित फीचर , 2. जीवन-शैली संबंधी फीचर, 3. साक्षात्कार फीचर, 4. रूपात्मक फीचर, 5. यात्रा पर आधारित फीचर, 6. विशेष कार्य संबंधी फीचर, 7 व्यक्तिगत फीचर।

**प्रश्न 3 - मेरे स्कूल का पुस्तकालय' विषय का पर एक फीचर लिखिए ।**
उत्तर-'पुस्तके मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र हैं '।इस कथन की सत्यता मैंने अनेकों बार अनुभव की है ।अपने विद्यालय के पुस्तकालय में बैठकर मुझे लगता है कि मैं सच्चे मित्र के समूह के बीच बैठा हूं। मेरे विद्यालय का पुस्तकालय बहुत बड़ा तो नहीं है लेकिन उसमें ज्ञान-विज्ञान, साहित्य ,महापुरुषों की जीवनी और विचार स्वास्थ्य और हास- परिहास आदि विविध विषयों से संबंधित पुस्तकें संग्रहीत हैं।

CEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

हमारी पुस्तकालय के मुख्य द्वार पर लिखा है-' ज्ञान के लिए प्रवेश करें' । पुस्तके ज्ञान बढ़ाती हैं यह बात निर्विवाद है। पुस्तकालय कक्ष के बीच में बड़ी टेबिलें लगी हैं जिनके चारों और कुर्सियां रखी गई हैं। टेबलो के बीच में ' शांति बनाए रखें 'निर्देश- पट्टिकाएं रखी गई है ।पुस्तकालय में समाचार- पत्रों के पढ़ने की व्यवस्था भी है। सप्ताह के अंतिम दिन बारी-बारी से कक्षाओं की गोष्ठी भी पुस्तकालय में आयोजित की जाती है जिनमें छात्रों को अपनी पढ़ी हुई पुस्तकों के बारे में अपने विचार रखने को उत्साहित किया जाता है ।मैं अपने सभी मित्रों को पुस्तकालय का उपयोग करने को प्रेरित किया करता हूं।

# आलेख

प्रश्न 1 आलेख किसे कहते हैं?
उत्तर. आलेख निबंध लेखन का ही एक लघु रूप है। समाचार पत्र में कुछ लेख प्रकाशित होते हैं, जो किसी समाचार, घटनाक्रम आदि पर आधारित होते हैं यह संपादकीय से भिन्न होते हैं। इनको आलेख कहते हैं। आलेख में किसी विषय के संबंध में तथ्यात्मक तथा संपूर्ण सूचना दी जाती है। इसमें कल्पना के लिए स्थान नहीं होता ।इनकी शैली विचार विश्लेषणात्मक होती है। इनमें तथ्यों, समाचारों तथा सूचनाओं पर ज्यादा जोर दिया जाता है।
प्रश्न 2. मोबाइल फोन: वरदान या अभिशाप पर एक आलेख लिखिए।
उत्तर-मोबाइल एक उपयोगी यंत्र है। यह अत्यन्त छोटा होता है।इसको जेब में रखा जा सकता है अथवा हाथ में पकड़ा जा सकता है। इस में लगी हुई सिम इस यंत्र के संचालन में मुख्य भूमिका अदा करती है।अपनी बात दूसरे तक पहुंचाने तथा उसकी बात सुनने में यह यंत्र हमारी सहायता करता है। अत्यंत छोटा और कम भार का होने कारण इसको अपने पास रखना और एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाना-ले जाना बहुत आसान है। यह संचार क्रांति का युग है।इस क्रांति में मोबाइल का बड़ा योगदान है। मोबाइल के अनेक लाभों को देखते हुए यह एक वरदान ही कहा जाएगा। किंतु इसका दुरुपयोग करने से यह अभिशाप भी बन जाता है। इससे
हमारा धन, समय तथा स्वास्थ्य नष्ट होता है।
प्रश्न3. 'युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति' विषय पर एक आलेख तैयार कीजिए।
उत्तर- आजकल युवा वर्ग में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति बहुत चिंताजनक है और गंभीर चिंतन की अपेक्षा रखती है। नशा आज के युवाओं में एक फैशन का रूप ले चुका है। शराब, भांग, ब्राउन शुगर, स्मैक आदि के जाल में फंसते युवाओं को देखकर भारत के भविष्य के प्रति गहरी निराशा उत्पन्न होती है। शराब का सेवन तो जीवन- स्तर( स्टेटस सिंबल) का परिचायक बन गया है। उत्सवों, पार्टीयों और विवाहों में शराब का सेवन आम हो गया है। शराब से दूर रहने वालों को पिछड़ा हुआ समझा जाता है। बारात में मदमस्त नौजवानों को नाचते और डी.जे. की धुनों पर थिरकते देखना एक आम दृश्य हो गया है। मादक द्रव्यों का कारोबार करने वाले युवकों को नशे का आदी बनाते हैं। युवतियों का भी इस जाल में फंसना बहुत चिंताजनक समस्या है। मादक द्रव्य देश की युवा शक्ति को खोखला कर रहे हैं। यह देश और समाज के प्रति एक आपराधिक षड्यंत्र है। सरकार कुछ कानून बनाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान बैठी है। नशे पर प्रभावी नियंत्रण की पहल और दृढ़ इच्छाशक्ति शासन- प्रशासन में दिखाई नहीं देती। इस समस्या को मनोवैज्ञानिक उपायों तथा मादक पदार्थों के उत्पादन पर कठोर पाबंदी से ही रोका जा सकता है।

# पहलवान की ढोलक

बहु विकल्पीय प्रश्न
प्रश्न 1.'पहलवान की ढोलक'पाठ के लेखक कौन है-
(अ) प्रेमचंद (ब) तुलसीदास (स) फणीश्वरनाथ ' रेणु' (द) कबीर उत्तर (स)
प्रश्न 2. निम्न में से कौन सी रचना फणीश्वर नाथ'रेणु' की नहीं है-
(अ) मैला आंचल (ब) परती परिकथा (स) दीर्घतपा (द) मधुशाला उत्तर (द)
प्रश्न 3. फणीश्वर नाथ 'रेणु' का जन्म कौन से वर्ष में हुआ-
(अ)1920 (ब)1921 (स)1922 (द)1925 उत्तर (ब)
प्रश्न 4.' पहलवान की ढोलक' लेखक की किस प्रकार की रचना है-
(अ) संस्मरण (ब) रेखा चित्र (स) आत्मकथा (द) कहानी उत्तर (द)
प्रश्न5.' पहलवान की ढोलक' कहानी का मुख्य पात्र था-
(अ) लुट्टन सिंह (ब) चांद सिंह (स) राजा साहब (द) बादल सिंह उत्तर (अ)
प्रश्न 6. फणीश्वर नाथ 'रेणु' का देहांत कब हुआ-
(अ)1977 (ब)1978 (स) 1979 (द) 1980 उत्तर (अ)
प्रश्न 7. गांव में कौन सी महामारी फैली थी-
(अ) चेचक (ब) हैजा (स) कोरोना (द) निमोनिया उत्तर (ब)
प्रश्न 8. पहलवान लुट्टन किस उम्र में अनाथ हो गया था-

CBSE BHINDER AND VALLABHNAGAR

(अ)9 वर्ष (ब)10 वर्ष (स)11 वर्ष (द)12 वर्ष उत्तर (अ)
प्रश्न 9. दंगल कौन से नगर में हुआ था-
(अ) रामनगर (ब) राजनगर (स) श्याम नगर (द) विजयनगर उत्तर (स)
प्रश्न 10. पहलवान लुट्टन सिंह का पालन पोषण किसने किया था-
(अ) मामा ने (ब) विधवा सास ने (स) चाचा ने (द) दादा ने उत्तर (ब)
रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-
प्रश्न 11. फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म_ गांव में हुआ था। (औराही हिंगना)
प्रश्न 12. मैला आंचल के रचयिता _है। (फणीश्वर नाथ 'रेणु')
प्रश्न 13. दंगल में पहलवान लुट्टन सिंह ने पहलवान _को हराया। (चांद सिंह)
प्रश्न 14'शेर के बच्चे' का असली नाम_ था। (पहलवान चांद सिंह)
प्रश्न 15. लुट्टन पहलवान के__ पुत्र थे। (दो)
प्रश्न 16. फणीश्वर नाथ 'रेणु' का बहुचर्चित उपन्यास __है। (मैला आंचल)
प्रश्न 17. चांद सिंह पहलवान मेले में__ से आया था। (पंजाब)
प्रश्न 18. लुट्टन बचपन में__ चराया करता था। (गायें)
प्रश्न 19.'शेर के बच्चे'की उपाधि पहलवान ___को मिली थी। (चांद सिंह)
प्रश्न 20. लुट्टन पहलवान को __की आवाज सुनकर जोश आ जाता था। (ढोलक)

# डायरी के पन्ने- लेखिका-ऐन फ्रैंक

अति लघु उत्तरा त्मक प्रश्न
प्रश्न 1. कौन- सा देश जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में शामिल नहीं हुआ था?
उत्तर-टर्की जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में शामिल नहीं हुआ था।
प्रश्न 2 .ऐन फ्रैंक के परिवार ने कितना वक्त छिपकर गुजारा?
उत्तर-ऐन फ्रैंक के परिवार ने दो वर्ष छिपकर गुजारे।
प्रश्न 3.ऐन फ्रैंक का परिवार कहां पर छिपकर रहा ?
उत्तर- ऐन फ्रैंक का परिवार पापा के ऑफिस की इमारत में छिप कर रहा।
प्रश्न 4.ऐन कौन- सा ऐसा शौक था जिसे उसके घर वाले पसंद नहीं करते थे?
उत्तर- ऐन फ्रैंक द्वारा नई-नई केश- सज्जा करना घरवाले पसंद नहीं करते थे।
प्रश्न 5. कौन सी मुद्रा अवैध घोषित की गई थी?
उत्तर-1000 गिल्डर का नोट।
प्रश्न 6. घायल सैनिकों से कौन बात करता था?
उत्तर-घायल सैनिकों से हिटलर बातचीत करता था।
प्रश्न 7.ऐन फ्रैंक की बड़ी बहन का नाम क्या था?
उत्तर- ऐन फ्रैंक की बड़ी बहन का नाम मार्गोट था।
प्रश्न 8.ऐन फ्रैंक किस धर्म से संबंधित थी?
उत्तर- ऐन फ्रैंक यहूदी धर्म से संबंधित थी।
प्रश्न 9. ऐन फ्रैंक ने डायरी का आरंभ किस तिथि से किया?
उत्तर-ऐन फ्रैंक ने डायरी का आरंभ 8 जुलाई ,1942 को किया।
प्रश्न 10 ऐन फ्रैंक कौन थी? उसकी डायरी क्यों प्रसिद्ध है?
उत्तर-ऐन फ्रैंक 'नामक यहूदी परिवार की तेरह वर्षीय बालिका द्वारा लिखी गई यह डायरी यहूदी परिवार की अज्ञातवास की उस पीड़ा को व्यक्त करती है जो उन दिनों नाजियों द्वारा हर यहूदी परिवार को दी जा रही थी।
प्रश्न 11.'डायरी के पन्ने' सर्वप्रथम किस भाषा में प्रकाशित हुई थी?
(अ) फ्रेंच (ब) हिंदी(स) डच (द) जर्मन उत्तर (स)
प्रश्न 12.' डायरी के पन्ने' की लेखिका कौन थी?
(अ) किट्टी (ब) मार्गोट (स) ऐन फ्रैंक (द)मिऐप उत्तर (स)
प्रश्न 13'डायरी के पन्ने'सर्व प्रथम कब प्रकाशित हुई थी?
(अ) 1950 (ब)1955 (स)1945 (द) 1947 उत्तर (द)
प्रश्न 14. किस को जन्मजात बहादुर कहा गया है?
(अ) हिटलर (ब) चर्चिल (स) मुसोलिनी (द) स्टालिन उत्तर (ब)

CBSE BHINDER AND VALLABHNAGAR

प्रश्न 15. मिस्टर वान दान किस धर्म के थे?
(अ) यहूदी (ब) हिंदू (स) ईसाई (द) मुस्लिम उत्तर (अ)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

16.____गिल्डर का नोट अवैध घोषित कर दिया गया था। (1000)

17.ऐन फ्रैंक की बड़ी बहन का नाम _____ था। (मार्गोट)

18.ऐन फ्रैंक ने अपनी बिल्ली को_____ के पास छोड़ा था। (पड़ोसियों)

19.ऐन फ्रैंक _____ से प्रेम करती थी। (पीटर)

20.ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी_____को संबोधित करके लिखी थी। (गुड़िया किट्टी)

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1." डायरी लेखिका ऐन फ्रैंक का प्रकृति के प्रति लगाव था।" सिद्ध कीजिए।
उत्तर- ऐन फ्रैंक प्रकृति प्रेमी थी। वह आकाश,पक्षी,बादल, चांद और उसकी चांदनी देखती थी। उसका मानना था कि प्रकृति अपना वरदान सबको बिना भेदभाव के देती है, सभी उसका आनंद ले सकते हैं।

प्रश्न 2."पापा का चेहरा पीला पड़ चुका था, वे नर्वस थे।" ऐन फ्रैंक ने अपने पिता की घबराहट का क्या कारण बताया है?
उत्तर-उनके घर के नीचे के भाग में कुछ सेंन्धमार घुस आए और किवाड़ का फट्टा तोड़ दिया।उसकी आवाज सुनकर ऐन के पिता का चेहरा पीला पड़ गया। वह अनिष्ट की आशंका से घबरा गए।

प्रश्न 3. अपने पुरुष मित्र के बारे में ऐन फ्रैंक के विचारों पर प्रकाश डालिए।
उत्तर-ऐन फ्रैंक पीटर से प्रेम करती थी। लेकिन पीटर एक शांतिप्रिय, सहनशील और सहज आत्मीय था। अतः वह अपने आपको उससे छिपाता था। इस प्रकार वह उसे निराश ही करता था।

प्रश्न 4."ऐन फ्रैंक नारी जाति के स्वाभिमान की समर्थक है।" सिद्ध कीजिए।
उत्तर- ऐन फ्रैंक ने अपनी डायरी के माध्यम से नारी स्वतंत्रता, समता और नारी स्वाभिमान का समर्थन किया है। वह अनुभव करती है कि पुरुष कभी भी नारी के सम्मान की रक्षा नहीं करता।

प्रश्न 5. डायरी लेखिका ने महिलाओं को सैनिकों के समान सम्मान देने की बात किस पुस्तक के आधार पर कही है?
उत्तर-डायरी लेखिका 'ऐन फ्रैंक' ने एक किताब का अध्ययन किया, जिसमें नारी और सैनिकों के बलिदान को समान दृष्टि से देखने की सिफारिश की गई है। उस किताब का नाम है --'मौत के खिलाफ मनुष्य' ।

प्रश्न 6.ऐन फ्रैंक की 'डायरी के पन्ने' युद्ध की मनोदशा का वर्णन करती है। सिद्ध कीजिए।
उत्तर-युद्ध के चलते इतिहास बनते- बिगड़ते हैं, भौगोलिक नक्शे बदल जाते हैं। युद्ध के कारण कई बार खास क्षेत्रों के लोग, जातियों और बहुत-सी संस्कृतियों का नामोनिशान ही मिट जाता है।

प्रश्न 7.'ऐन फ्रैंक'की डायरी इतिहास के सबसे भयंकर आतंकवाद और दर्दनाक अध्याय का वर्णन करती है। इस कथन की पुष्टि प्रमाण सहित कीजिए।
उत्तर-इस डायरी में भय, आतंक, भूख, प्यास, मानवीय संवेदनाएं, प्रेम, घृणा और बढ़ती उम्र के डर भी हैं। एक और हवाई हमला, पकड़े जाने की आशंका आदि वह सब कुछ है जो एक युद्ध- पीड़ित व्यक्ति और समाज का सच होता है।

प्रश्न 8. डायरी के अनुसार नारी के व्यवहार में आज क्या परिवर्तन आ गया है?
उत्तर-ऐन का विचार है कि आज स्थितियां बदल चुकी हैं नारी ने शिक्षा ग्रहण करके अपना ज्ञान बढ़ाया है। आज वह कमा कर अपना जीवन यापन कर सकती है। औरतों ने अपनी प्रगति की ओर कदम बढ़ाया है।

प्रश्न 9. युद्ध ने डचों की जिंदगी में क्या कठिनाइयां पैदा कर दी थीं ?
उत्तर-युद्ध के कारण आज भूखे मर रहे थे उन्हें जो राशन 1 हफ्ते के लिए मिलता था वह 2 दिन में समाप्त हो जाता था पुरुषों को जर्मनी भेजा जा रहा है, बच्चे बीमार हैं, भूख से बेहाल हैं। लोग फटे पुराने कपड़े पहनते हैं और उनके जूते भी घिसे-पिटे हैं। इसी तरह की अनेक कठिनाइयां यहूदियों की जिंदगी में पैदा हो गई हैं।

प्रश्न 10. 'डायरी के पन्ने' पढ़ने के बाद आपके मन में लेखिका ऐन फ्रैंक के बारे में क्या विचार बनते हैं, उसके स्थान पर आप होते तो क्या करते ? कल्पना के आधार पर बताइए।
उत्तर-'डायरी के पन्ने'पढ़ने के बाद हम कर सकते हैं लेखिका ऐन फ्रैंक एक प्रतिभाशाली बालिका है। जिसने अपनी कल्पना शक्ति और लेखन क्षमता के आधार पर द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनों द्वारा ढाये गये जुल्मों का जीवंत चित्रण किया है। अपनी डायरी का संबोधन उसने एक निर्जीव गुड़िया को किया क्योंकि कोई जीवित प्राणी उसकी बात सुनने को तैयार नहीं था। यदि हम उसके स्थान पर होते तो हम भी वही करते जो ऐन फ्रैंक ने किया है। पढ़े-लिखे मानव में इतनी क्षमता तो होनी ही चाहिए जो अपने मन में आये विचारों को लिखकर व्यक्त कर सके। अतः हम भी लेखक बनकर अपने मन की बात को लिखकर व्यक्त करने की योग्यता पैदा करते।

CEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

# अपठित गद्यांश

मनुष्य यंत्र मात्र नहीं हैं, कि जिसके सब कल पुर्जे खोलकर ठीक कर लिए जायेगें और तेल या ग्रीस लगाकर पुनः चालू कर लिया जायेगा। प्रत्येक मनुष्य विशेष परिस्थितियों में विशेष संस्कारों के साथ उत्पन्न होता है। इन परिस्थितियों और संस्कारों में कुछ अनुकूल हो सकते है और कुछ प्रतिकूल। शिक्षालय ऐसे कारखाने है जहाँ विषय औ प्रभावों का परियोर्जन, सांमजस्य और मानव का विस्तार होता है। दूसरे शब्दों में यहाँ मनुष्य की बुद्वि और ह्दय खराद पर चढ़ते हैं और तब नये –नये रूप में समाज के सम्मुख आते है। किसी सुन्दर स्वपन, आदर्श या अनुभूति को देना आसान नहीं होता। यह आदान–प्रदान देने और पाने वाले दोनों को धन्य कर देता है। हमारी शिक्षा चाहे वह प्राथमिक हो, चाहे उच्च, उसने मनुष्य की सम्भावनाओं की ओर कभी ध्यान नहीं दिया।

प्र.1 मनुष्य के संस्कारों एवं प्रभावों का परियार्जन किससे होता है?

प्र.2 ''मनुष्य यन्त्र मात्र नहीं है''। इसका आशय समझाइए।

प्र.3 ''खराद'' शब्द का मतलब क्या है?

प्र.4 ''इन परिस्थितियों और संस्कारों में कुछ अनुकूल होते है और कुछ प्रतिकुल''। यह किस प्रकार का वाक्य है? स्पष्ट किजिए।

प्र.5 ''अनुभूति'' शब्द में मूल शब्द और प्रत्यय बताइये।

प्र.6 पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तर– 1 मनुष्य में कुछ जन्मजात संस्कार तथा प्रभाव होते हैं, उनको परिस्थितियों में छालने के लिए परिभार्जन करना पड़ता है। यह कार्य शिक्षा से होता है।

उत्तर –2 मनुष्य निर्जीव वस्तु नहीं है, वह बुद्वि, ह्दय और संस्कारों से युक्त होता है।

उत्तर –3 'खराद' फारसी शब्द है। यह एक प्रकार का यन्त्र है जो लकड़ी अथवा धातु की बनी हुई वस्तुओं के बेडौल अंग छील कर उन्हें सुडौल और चिकना बनाता है।

उत्तर–4 यह संयुक्त वाक्य है। इसमें और संयोजक अव्यय का प्रयोग किया गया है।

उत्तर –5 अनुभूति – अनु उपसर्ग है भूत शब्द+ इ प्रत्यय।

उत्तर –6 शीर्षक – शिक्षा का महत्व।

## हजारी प्रसाद द्विवेदी ( शिरीष के फूल)

### व्याख्या

फूल है शिरीष। बसंत के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक जो निश्चित रूप से मस्त बना रहता है। मन रम गया तो भरे भादों में भी निर्धात फूलता रहता है।। जब उमस से प्राण डबलता रहता है और लू से ह्दय सूखता रहता है, एकमात्र शिरीष कालजयी अवधूत की भॉति जीवन की अजेयता का यंत्र–प्रचार करता रहता है।

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

**प्रसंग** – प्रस्तुत अवतरण लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा लिखित '' शिरीष के फूल'' निबन्ध से लिया गया हैं। इसमें लेखक ने शिरिष के फूलों की जाने की कला बताई है।

**व्याख्या –** द्विवेदी जी बताते हैं, कि फूल तो एक ही है और वह है शिरीष, बसन्त ऋतु के आने के साथ ही खिलता है और आषाढ़ यानि की लगातार चार महिनों तक निश्चित रूप से अपनी मस्ती बिखेरता रहता है। अगर शिरीष का मन लग गया तो आगे आने वाले दो महिने तक बिना किसी बाधा से खिलता रहता है। गर्मी से बेहाल उमस के कारण सभी प्राणियों के प्राण उबलते रहते है, गर्मी से घबराते हैं, लू से हृदय सूखता है। तब एक मात्र काल अर्थात् मृत्यु पर विजयी शिरीष उन साधु–सन्यासियों की भॉति प्रकृति पर अपनी प्राणशक्ति द्वारा अजेय होने का मंत्र का प्रचार हवा के साथ झूम–झूम कर रहा है। यहाँ लेखक का आशय हैं कि जो विपरित परिस्थितियों में भी जीवनी शक्ति को प्रज्जवलित रखते हैं, उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। कर्मों के द्वारा हम हर परिस्थिति में टिके रहने का हुनर शिरीष के फूलों से सीख सकते हैं।

**विशेष –** लेखक ने बताया हैं, कि शिरीष का फूल गर्मी, लू आदि सहन करता हुआ लम्बे समय तक लहकता है। उससे मनुष्य को सीख लेनी चाहिए।

**निबन्धात्मक प्रश्न –**

प्र.1 ''जरा और मृत्यु दोनों की जगत के अपरिचित और अति प्रमाणिक सत्य है।'' विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर – जरा (वृद्वावस्था) और मृत्यु दोनों ही संसार के लिए प्रमाणिक और कटुसत्य है। भागवत गीता में भी कहा है, कि जिसका जन्म हुआ हैं, उसकी मृत्यु निश्चित है। मृत्यु के पश्चात् आला काया को त्याग कर पुनः नवीन काया धारण करती हैं। यह कम निरन्तर बिना रूके चलता ही रहता है। तुलसीदास जी ने भी कहा है, कि 'जो फरा सो झरा' जो बुरा सो बुताना अर्थात् जो खिला है, वह अवश्य मुरझाएगा या झा जायेगा। जो झर गया वह फिर खिलेगा। जीवन में निर्माण के साथ ही उसका ध्वस तय है। यह सृष्टि का नियम है। यह अलग बात है, कि सबका समय अलग–अलग हो सकता है।

**निष्कर्षतः–** कहा जा सकता है, कि जरा और मृत्यु दोनों ही तथ्य सत्यं हैं इसमें थोड़ा –सा भी संन्देह नहीं है।

**लघुत्तरात्मक प्रश्न–**

**प्र.1** शिरीष के फूलों को देखकर लेखक को किनकी और क्यों याद आती है? समझाइए।

**उत्तर –** शिरीष के पूलों को देखकर लेखक को उन नेताओं की याद आती है, पुरानी पीढ़ी के उन लोगों की याद आती है, जो पद–लिप्सा और अधिकार–लिप्सा रखते है, जो जमाने का रूख नहीं पहचानते और नयी पीढ़ी के लोग जब तक उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देते तब तक जमें रहते है।

**अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न–**

**प्र.1** दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर कौन–से माने जाते है?

**उत्तर –** दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर मुहनजो–दडों और हड़प्पा माने जाते है। ये दोनों सिंधु घाटी सभ्यता के परिपक्व दौर के शहर है।

**प्र.2** 'मुहनजो–दडों' शहर का क्षेत्र तथा आबादी के सम्बन्ध में पुरातत्ववेन्ता की क्या धारणा थी?

**उत्तर –** 'मुहनजो'दड़ों' शहर के सम्बन्ध में पुरातत्ववेत्ता की यह धारणा थी, कि यह शहर दो सौ हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ था और इसकी आबादी पचास हजार थी।

**प्र.3** मुअनजो–दड़ों के प्रसिद्व जल कुण्ड की विशेषताएँ लिखिए।

**उत्तर–** मुअनजो–दड़ों का प्रसिद्व जल कुण्ड अद्वितीय वास्तु कला से स्थापित था। उसका तल व दीवारें मजबूत थी व पानी निकास की पक्की नालियाँ थी।

**प्र.4** मुअनजो–दड़ों के मकानों पर छज्जे क्यों नहीं रहे होगें?

**उत्तर –** अनुमान के अनुसार मुअनजो–दड़ों के मकानों पर छज्जे इसलिए नहीं रहे होगें क्योंकि वहाँ गर्मी के स्थान पर ठंड ही रहती होगी।

CEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

**प्र.5** हड़प्पा नगर के साक्ष्य क्यों नष्ट हो गए हैं?

**उत्तर –** हड़प्पा नगर के साक्ष्य पाकिस्तान सरकार की उपेक्षा और विकास कार्यों के कारण नष्ट हो गए है।

**प्र.6** अब किस कारण मुअनजो–दड़ों की खुदाई बन्दर कर दी गई हैं?

**उत्तर –** अब मुअनजो–दड़ों की खुदाइ इस कारण बन्द कर दी गई है सिन्धु नदी के पानी के रिसाव से क्षार और दल–दल की समस्या पैदा हो गई है।

**निबन्धात्मक प्रश्न–**

**प्र.1** ''अतीत में दबे पॉव'' के आधार पर शीर्षक की सार्थकता सिद्व कीजिए।

**उत्तर –** 'अतीत में दबे पॉव' शीर्षक पाठ मे लेखक के वे अनुभव हैं, जो उसे सिंधु घाटी की संभ्यता के अवशेषों को देखते समय हुए थे। उस सभ्यता के अतीत में झॉक कर वहाँ के निवासियों और इनके क्रियाकलापों का अनुभव हो जाता है कि वहाँ की सड़के, नालियाँ, स्पूत, अन्न भण्डार, स्नानागार, कुएँ, कुंड, अनुष्ठान–गृह आदि किस तरह से सुव्यवस्थित तरीके से बनाए गए थे। इन सबको सुव्यवस्थित तरीके से बनाए गए थे। इन सबको सुव्यवस्थित देखकर लेखक को महसूस होता है कि जैसे अब भी वे लोग वहाँ है। किसी खण्डहर में प्रवेश करते हुए उस अतीत में निवासियों की उपस्थिति महसूस होती है। यदि उन लोगों की सभ्यता नष्ट नहीं हुई होती तो वे प्रगति के पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते ही रहे होते। परन्तु दुर्भाग्यवश ये प्रगति की ओर बढ़ रहे सुनियोतिज पॉव अतीत में ही दब कर रह गए। इन आधारों पर कहा जा सकता हैं, कि 'अतीत में दबे पॉव' शीर्षक पूर्णतः सार्थक, रोचक और सटीक है।

## हजारी प्रसाद द्विवेदी ( शिरीष के फूल)

**प्र.1** ''हाय, वह अवधूत आज कहाँ है।'' 'शिरीष के फूल' निबन्ध के आधार पर बताइए कि उपयुक्त वाक्य किसके लिए और क्यों कहा गया है?

**उत्तर –** द्विवेदी जी ने यह वाक्य महात्मा गाँधी के लिए कहा है। जिस प्रकार शिरीष के फूल भयंकर लू और गर्मी में भी खिलते रहते हैं, आत्मबल से वे विपरित स्थितियों का सामना करते है, इसी प्रकार गाँधीजी रह कर सुख–दुःख आदि से निश्चित रह कर आत्मबल से सदैव संघर्ष करते रहे और अपने लक्ष्य में सफल रहे।

**प्र.2** शिरीष किन विपरित परिस्थितियों में जीता है?

**उत्तर–** जेठ की चिलचिलाती धूप हो या पृथ्वी निर्धुम अग्निकुण्ड़ बनी हुई हो, शिरीष ऊपर से नीचे तक फूलों से लदा रहता है। बहुत कम पुष्प ही इस तपती धूप में जीवित रह पाते है लेकिन वायुमण्डल से रस खींचने वाला शिरीष विषम परिस्थितियों में भी जीवन जीता है।

**प्र.3** शिरीष वृक्ष को लक्ष्य कर लेखक ने किस सांस्कृतिक गरिमा की ओर संकेत किया है?

**उत्तर –** लेखक ने शिरीष वृक्ष को भारतीय संस्कृति का प्रतीक बताया है। प्राचीन काल में वैभव सम्पन्न लोगों की वाटिका में शिरीष वृक्ष अवश्य रोपा जाता था।

वृहत्संहिता में मांगलिक वृक्षों में शिरीष का भी अन्य छायादार वृक्षों के साथ उल्लेख हुआ है। साहित्य में इसकी सांस्कृतिक गरिमा का काफी उल्लेख हुआ है।

**प्र.4** काल के कोड़ों की मार से कौन बच सकता है? 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर बताइए।

**उत्तर –**काल निरन्तर कोड़े बरसाता रहता है, परन्तु जो लोग अपनी जगह पर जमें रहते हैं, वे काल की मार से नहीं बच पाते हैं। परन्तु जो सदैव गतिशील रहते हैं, स्थान बदलते रहते हैं और अपना मुँह आगे की ओर करके बढ़ते रहते हैं, वे कर्मशील एवं गतिशील व्यक्ति काल की मार से बच सकते हैं।

**प्र.5** 'हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी–कभी जरूरी हो जाती है'– प्रस्तुत पाठ के आधार पर स्पष्ट करें।

**उत्तर –**हृदय की कोमलता को बचाने के लिए कभी–कभी व्यवहार की कठोरता जरूरी हो जाती हैं शिरीष के फूल अतीव कोमल होते हैं, परन्तु वे अपने वृन्त से इतने मजबूत जुड़े रहते हैं, कि नये फूलों के आ जाने पर भी अपना स्थान नहीं छोड़ते है।

CBSE BHINDER AND VALABHNAGAR

**प्र.6** 'शिरीष के फूल' के माध्यम से लेखक ने संघर्षशीलता एवं जिजीविषा की जो व्यंजना की है, उसे स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर** – भंयकर गर्मी, लू एवं तपन से जब सारे पेड़–पौधे झुलसने लगते हैं, सभी पेड़ पुष्परहित हो जाते हैं, तब भी शिरीष का वृक्ष हरा–भरा और पुष्पों से लदा रहता है। यह वायुमण्डल से रस ग्रहण करता है। इस तरह यह विपरित दशा में भी संघर्षशीलता एवं जिजीविषा रहता है।

**प्र.7** 'अवधूतों के मुँह से ही संसार की सबसे रस रचनाएँ निकली हैं। इस प्रसंग में लेखक ने किन्हें अवधूत बताया हैं और क्यों?

**उत्तर** – इस प्रसंग के लेखक ने महाकवि कालिदास और कबीर दास को अवधूत बताया है। क्योंकि कालिदास ने अनासक्त भाव एवं उन्मुक्त हृदय से 'मेद्यदूत' जैसे काव्य की रचना की, तो कबीरदास ने भी बेपरवाह और उन्मुक्त रह कर अपनी साखियों में जो कुछ कहा, वह सरस, मादक एवं यथार्थ के साथ लोकोपकारी रहा।

**प्र.8** शिरीष के फूल' निबन्ध में साहित्यकरों को जो संदेश दिया गया हैं, उसे स्पष्ट कीजिए।

**उत्तर** –'शिरीष के फूल' निबन्ध में द्विवेदी जी ने साहित्यकारों एवं रचनाधार्मियों को संदेश दिया है कि वे लाभ–हानि का लेखा–जोखा न रख कर सामाजिक जीवन को उपयोगी साहित्य प्रदान करें। प्रशंसा प्राप्ति के मोह में कठोर न बन कर जीवन –सत्य एवं काव्यानुभूति में समन्वय रखें।

**प्र.9** संसार में अति प्रमाणिक सत्य क्या है? उस सत्य की उपेक्षा कौन और क्यों करते हैं?

**उत्तर** – द्विवेदी जी बताते हैं, कि संसार में जरा और मृत्यु दो अति प्रमाणिक सत्य हैं। जो जन्म लेता है, वह वृद्व होने के बाद मृत्यु को प्राप्त करता है। परन्तु उक्त सत्य की उपेक्षा नेता लोग करते हैं तथा वृद्व जन भी करते हैं। वे अशक्त और वृद्व होने पर भी अधिकार–लिप्सा से ग्रस्त रहते हैं और नयी पीढ़ी द्वारा धक्का मारने से ही हटते हैं।

**प्र.10** शिरीष की विशेषताएँ बताइए।

**उत्तर** – शिरीष एक बड़ा तथा घना छायादार वृक्ष होता है। उसकी डालें अन्य वृक्षों की तुलना में कमजोर होती हैं। पुराने रईस अपनी वाटिका में अशोक, पुन्नाग, अरिष्ट आदि मंगलकारी वृक्ष लगाते थे। उनमें शिरीष भी एक था। शिरीष बंसत से आषाढ़ तक और कभी–कभी भादों तक फूल देता है। उसके फूल कोमल होते हैं और फल अत्यन्त कठोर होते है।

**प्र.11** लेखक के मन में शिरीष को देखकर हूक क्यों उठती हैं?

**उत्तर** – लेखक जब–जब शिरीष को देखता है, तब–तब उसके मन में हूक उठती हैं, कि वह अवधूत गाँधी आज कहाँ हैं? आज भारत में भ्रष्टाचार और स्वार्थ का बोलबाला हैं। निर्धन जनता कराह रही हैं, अनाचार और शोषण कर तूफान देश पर से गुजर रहा है। यदि गाँधीजी होते तो देश का ये दुर्दिन नहीं देखने पड़ते।

**प्र.12** शिरीष के पुष्प को –शीतपुष्प' भी कहा जाता है। ज्येष्ठ माह की प्रचंड़ गर्मी में फूलने वाले फूल को शीतपुष्प संज्ञा किस आधार पर दी गई होगी?

**उत्तर** – ज्येष्ठ मास में भीषण गर्मी पड़ती हैं और लुएँ चलती हैं। सभी पेड़–पौधे इस ताप से सूख जाते हैं लेकिन शिरीष पर इसका प्रभाव नहीं होता। वह फूलों से लदा रहता है। इससे लगता है, कि शिरीष के पुष्प के अन्दर ही शीतलता होती है। इसी कारण उसे शीतपुष्प कहा गया है।

**प्र.13** लेखक ने शिरीष के फूलो की तुलना किससे और क्यों की हैं?

**उत्तर** – लेखक ने शिरीष के फूलों की तुलना कालजयी अवधूत से की हैं क्योंकि शिरीष अवधूत की भॉति ही हर परिस्थित में मस्त मौला रह कर जीवन को खुशी से जीने का सन्देश देता है। शिरीष का फूल सुख–दुःख में समान रूप से स्थिर रह कर अजेय योद्वा की भॉति कभी पराजय स्वीकार नहीं करता है।

**प्र.14** 'पुराने की यह अधिकार–लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती?' इस कथन से क्या भाव व्यक्त हुआ है?

CBSE BHINDER AND VALLABHNAGAR

**उत्तर –** यह भाव व्यक्त हुआ है, कि जब तक नया पुष्पांकुर नहीं आ जाता, तब तक शिरीष का पुष्प अपने वृन्त पर डटा रहता है। उसे नये फल–पत्तों के द्वारा धकियाकर हटाया जाता है। इसी प्रकार पुरानी पीढ़ी के लोग अधिकार–लिप्सा से ग्रस्त रहते हैं और समय रहते नयी पीढ़ी के लिए स्थान नहीं छोड़ते। फलस्वरूप नयी पीढ़ी द्वारा उन्हें बलात् हटाया जाता है।

**प्र.15** 'जब–जब शिरीष की ओर देखता हूँ, तब–तब हूक उठती हैं।'' लेखक को हूक क्यों उठती है?

**उत्तर–** आज भारत में स्वार्थपरता और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। गरीब जनता अत्याचार और शोषण के कराह रही है। गाँधीजी की तरह कर्मयोगी की आज सर्वाधिक जरूरत है, जो शोषित–पीड़ित जनता का मार्गदर्शन कर सके, परन्तु लेखक को ऐसा व्यक्ति नहीं दिखाई दे रहा है। इसी से उसका हृदय कराह रहा है।

**प्र.16** लेखक हजारी प्रसाद द्विवेदी जी के व्यक्तित्व एवं कृतिव्य पर प्रकाश डालिए।

**उत्तर –** हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का जन्म उत्तर प्रदेश के बालिया जिले के एक गाँव छपरा में 1907 में हुआ था। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की उपाधि प्राप्त कर शान्ति निकेतन में हिन्दी भवन के निदेशक रहे। अनेक स्थानों पर हिन्दी अध्यापन का कार्य किया। ये कई भाषाओं के ज्ञाता थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ अशोक के फूल, कुटज, विचार–प्रवाह, आलोक पर्व (निबन्ध–संग्रह), बाणभट्ट की आत्मकथा, अनामदास का पोथा, पुनर्नवा (उपन्यास), हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य की भूमिका (आलोचना–ग्रंथ) इत्यादि है। इनकी सांस्कृतिक दृष्टि प्रभावशाली एवं मूल चेतना विराट मानवतावाद हैं। साहित्य रचना करते द्वारा 'पदम्–भूषण' प्राप्त हुआ है। साहित्य रचना करते हुए इनका निधन 1979 में दिल्ली में हुआ।

# गोस्वामी तुलसीदास

1. गोस्वामी तुलसीदास का जन्म कब हुआ था ?

उत्तर – सन् 1532 में।

2. तुलसीदास जी का जन्म कहां हुआ था ?

उत्तर – राजापुर गांव, बांदा जिला, उत्तरप्रदेश ।

3. गोस्वामी तुलसीदास किस काल के कवि हैं ?

उत्तर – भक्तिकाल (सगुण काव्यधारा)।

4. गोस्वामी तुलसीदास की किन्ही दो रचनाओं के नाम लिखिए।

उत्तर – रामचरितमानस, विनयपत्रिका।

5. लोकमंगल की साधना के कवि किसे कहा गया है ?

उत्तर – गोस्वामी तुलसीदास जी को।

6. गरीबी को तुलसीदास जी ने किससे समान बताया है ?

उत्तर – दशानन के समान।

7. कवितावली, दोहावली, गीतावली रचनाओं के रचनाकार कौन है?

उत्तर –गोस्वामी तुलसीदास जी।

8. गोस्वामी तुलसीदास जी का निधन कब हुआ था ?

उत्तर – सन् 1623 में।

9. गोस्वामी तुलसीदास जी की सर्वश्रेष्ठ रचना कौनसी है ?

उत्तर – रामचरितमानस।

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

10. तुलसीदास जी की मृत्यु कहां हुई थी ?
उत्तर – काशी में।
11. हिन्दी के जातीय कवि किसे कहा गया है?
उत्तर – गोस्वामी तुलसीदास जी को।
12. आरोह में रामचरितमानस के कौनसे कांड का प्रसंग है ?
उत्तर – लंका कांड।
13. किसको देखकर राम मनुष्य के समान वचन कहने लगे ?
उत्तर – लक्ष्मण को देखकर।
14. राम विलाप में आधीरात बीत जाने पर भी कौन नहीं आया ?
उत्तर – हनुमान जी।
15. तुलसीदास जी ने वाडवाग्नि से भी बडी आग किसे कहा है?
उत्तर – पेट की आग को।
16. तुलसीदास के अनुसार आज किसानों के पास क्या नहीं है?
उत्तर – खेती।
17. तुलसीदास जी ने अपने को किसका गुलाम कहा है?
उत्तर – राम का गुलाम।
18. रामचरितमानस में तुलसीदासजी ने कौनसी भाषा का प्रयोग किया है?
उत्तर – अवधी भाषा का।
19. तुलसीदास के अनुसार लोग किसकी आग शान्त करने के लिए बेटा–बेटी को बेचते हैं?
उत्तर – पेट की आग।
20. तुलसीदास जी ने करूण रस के बीच वीर रस का अविर्भाव किसके लिए कहा है?
उत्तर – हनुमान जी के लिए।

लघूत्तारात्मक प्रश्न

21. तुलसीदास का जीवन परिचय दीजिए?

उत्तर – तुलसीदास का जन्म सन् 1532 में बांदा (उत्तरप्रदेश) के राजपुर गांव में माना जाता है। हालांकि उनके जन्म स्थान के बारे में विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ विद्वान उन्हें सोरो, एठा में जन्मा भी बताते हैं।

तुलसी का बचपन घोर कष्ट में बिता, बचपन में ही उनके माता–पिता की मृत्यु हो गई व उन्होने भिक्षाटन कर जीवन–यापन किया। गुरू नरहरि दास से उन्हे रामभक्ति का मार्ग मिला। रत्नावली से विवाह होना और उनकी बातों से प्रभावित होकर ग्रहत्याग की घटना प्रसिद्ध है पर इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। पारिवारिक जीवन से विरक्त होने के बाद वे काशी, चित्रकूट आदि स्थानों में भ्रमण करते रहे। अंत में वे काशी में रहने लगे व यहीं पर उनका 1629 में निधन हुआ।

22. तुलसीदास जी का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर – तुलसीदास जी की रचनाओं में भाव, विचार, काव्य रूप छंद–विवेचन और भाषा की विविधता मिलती है। रामचरितमानस हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है। इसकी रचना मुख्यतः दोहा और चौपाई छन्द में हुई है। गीतावली, कृष्ण गीतावली तथा विनय पत्रिका पद शैली की रचनाएं हैं तो दोहावली स्फुट दोहों का संकलन। कवितावली कवित्त व सवैया छंद में रचित उत्कृष्ठ रचना है। ब्रज एवं अवधी दोनों हीं भाषाओं पर तुलसी का असाधारण अधिकार था।

CEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

23. तुलसीदास को 'लोकमंगल' व 'समन्वय' का कवि कहा जाता है। क्यों?

उत्तर – तुलसीदास लोकमंगल की साधना के कवि हैं। उन्हें समन्वय का कवि भी कहा जाता है। तुलसीदास का भावजगत धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टि से बहुत व्यापक है। मानव प्रकृति और जीवन–जगत संबंधी गहरी अंतर दृष्टि और व्यापक जीवन अनुभव के कारण ही वे रामचरितमानस में लोकजीवन के विभिन्न पक्षों का उद्घाटन कर सके। मानस में उनके हृदय की विशालता, भाव प्रसार की शक्ति और मर्मस्पर्शी स्थलों की पहचान क्षमता पूरे उत्कर्ष के साथ व्यक्त हुई।

24. 'पेट की आग बुझाना' अर्थात् दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु रामभक्ति करने से आप कहां तक सहमत है?

उत्तर – पेट की आग बुझाने के लिए कुछ काम करके धन कमाना जरूरी होता है। राम की भक्ति और भजन मात्र करने से पेट नहीं भर सकता है। कहा गया है कि ईश्वर भी उनकी ही सहायता करते हैं जो स्वयं अपनी सहायता करते हैं अर्थात् मेहनत करते हैं। अतः हम भक्ति के साथ–साथ मेहनत में विश्वास करेंगें।

25. 'खेती न किसान.....' पद के आधार पर पर तत्कालीन समाज की दूर्दशा का वर्णन किजिए?

उत्तर – तुलसीदास के अनुसार उस समय के तत्कालीन समाज में भयंकर दुर्दशा थी। किसान की खेती नहीं होती थी, व्यापारी को व्यापार नहीं मिलता था, नौकर को नौकरी नहीं थी। लोग एक दूसरे से अपनी दुर्दशा बताकर हल पूछते थे कि कहां जाएं, क्या करें, किसी को भी अपनी पारिवारिक दुर्दशा व गरीबी का हल नहीं मिलता था।

26. तुलसीदास जी ने समाज के तत्कालीन दुःखों का क्या निवारण बताया है ?

उत्तर – तुलसीदास कहते हैं कि दरिद्रता रूपी रावण ने सभी को बुरी तरह से दबा दिया है। संकट के समय रात सभी पर कृपा करके उनका संकट दुर करते हैं, इसलिए भगवान राम की शरण में जाने पर राम दरिद्रता रूपी दुःख कर सकते हैं।

27. 'मांगि के खैबो, मसीत को सोईबो, लैबेको एकु न दैबेको दोऊं' इस स्वीकारोक्ति से तुलसी के जीवन के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर –तुलसी ने इस कथन में स्वीकार किया है िकवे भीख मांगकर भोजन करते हैं और मस्जिद में जाकर सो जाते हैं। उनका अपना कुछ भी नहीं है। इससे पता चलता है कि तुलसी निर्धन है तथा धन–समपत्ति की लालसा से दूर है कि उन्हे मस्जिद में सोने से भी एतजराज नहीं है एवं उन्हें संसार से कुछ भी लेना–देना नहीं है ।

28. 'लक्ष्मण मूर्छा व राम का विलाप' प्रसंग के आधार पर लक्ष्मण के प्रति राम के प्रेम का वर्णन कीजिए।

उत्तर – राम लक्ष्मण से अति प्रेम करते हैं। लक्ष्मण के मूर्छित होने तथा वैद्य के बताए अनुसार सूर्यादय से पूर्व हनुमान के पहुंचने में आशंका व्यक्त करते हुए विलाप करने लग जाते हैं। वे सामान्य मनुष्य की तरह शोकग्रस्त होकर प्रलाप करने लग जाते हैं।

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR

29. 'तुलसी का रामभक्ति में अटूट विश्वास ।' प्रस्तुत अंश को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर – तुलसी राम के परम भक्त हैं। तुलसी का रामभक्ति में अटूट विश्वास है। तुलसी के समय राजव्यवस्था से दुःखी लोगों को पेटभर अनाज भी नहीं मिलता था। भूख– प्यास से व्याकुल लोगों की समस्या का समाधान तुलसी राम –घनश्याम के कृपा–जल की वर्षा में देखते हैं। दरिद्रता रूपी रावण से रक्षा करने वाला राम के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं हो सकता। 'तुलसी सरनाम गुलाम है राम को' कहकर वे अपने आपको रामभक्त सिद्ध करते हैं।

30. लक्ष्मण की मूर्छा दूर होने का समाचार सुन रावण की क्या दशा हुई, तथा उनसे क्या किया? समझाईए।

उत्तर – लक्ष्मण की मूर्छा दूर हो स्वस्थ होने का समाचार जब रावण ने सुना तो उसे अति विषाद (दुःख ) हुआ। वह बार–बार अपना सिर धुनने लगा। व्याकुल होकर उसने कुंभकरण को अनेक विधि से जगाया। उसे सीता–हरण एवं राम से युद्ध तथा कुल के नाश का समाचार सुनाया। तब कुंभकरण ने दुःखी होकर कहा कि तुने साक्षात् जगदम्बा का हरण कर लिया और अब मूर्ख, अपना कल्याण चाहता है।

CBEO BHINDER AND VALLABHNAGAR